कल्पमेधा

अगर आप रोते हैं, क्योंकि सूरज आपके जीवन से बाहर चला गया है, तो आपके आंसू आपको सितारों को देखने के लिए रोकेंगे।

– रवींद्रनाथ ठाकुर

नतीजों का संदेश

चार राज्यों और एक केंद्रशासित प्रदेश के विधानसभा चुनावों के जैसे नतीजे सामने आए हैं, उनसे साफ है कि पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और केरल में जहां मतदाताओं ने बदलाव के पक्ष में मतदान किया, वहीं असम और पुदुचेरी में लोगों ने मौजूदा सरकार पर भरोसा कायम रखा। इसमें चौंकाने वाले नतीजे तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल से आए, जहां चुनाव प्रचार के क्रम में बहुस्तरीय उतार-चढ़ाव के बावजूद लोगों के लिए यह अंदाजा लगा पाना मुश्किल था कि सत्ताधारी पार्टियों का प्रदर्शन बेहद कमजोर हो सकता है। इन राज्यों में इतने बड़े उलटफेर की उम्मीद कम ही लोगों ने की थी। दरअसल, पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस की सरकार के प्रति दिखने वाला जनसमर्थन चुनाव और मतदान के मोर्चे पर उलट नतीजे देने वाला साबित हुआ। हालांकि राज्य में भाजपा ने जीत के लिए जिस स्तर पर जाकर मेहनत की, मतदाताओं के वोट अपने पक्ष में लाने के लिए एक व्यापक रणनीतिक राजनीति पर काम किया और यहां तक भावनात्मक मुद्दों का भी सहारा लिया, उसका साफ असर मतगणना और नतीजों पर दिखा। जाहिर है, लंबे समय के बाद अब पश्चिम बंगाल एक और सत्ता परिवर्तन का गवाह बन रहा है, जहां विचारधाराओं का सफर क्रमशः बदलता दिखा है।

वहीं तमिलनाडु में एमके स्टालिन के नेतृत्व वाले द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (द्रमुक) को लेकर बहुत कम लोगों ने यह अंदाजा लगाया होगा कि चुनाव के परिणाम में उसकी स्थिति इस कदर खराब रहेगी। गौरतलब है कि फिल्मों की दुनिया से तमिलनाडु की राजनीति में आकर हाल के वर्षों में उभरे और अपने प्रशंसकों के बीच थलपति के नाम से मशहूर जोसेफ विजय ने अपने पहले ही चुनाव में राज्य की राजनीति में बीते कुछ सालों से एकछत्र राज करने वाले नेता एमके स्टालिन और उनकी पार्टी द्रमुक को करारी शिकस्त दी। अब तमिलनाडु द्रमुक और अन्नाद्रमुक के इर्द-गिर्द घूमने वाली राजनीति के समांतर एक नए दौर में प्रवेश कर गया है। यह देखने की बात होगी कि आने वाले वर्षों में यह राज्य किस राजनीतिक धारा का केंद्र बनेगा। जहां तक केरल का सवाल है, तो वहां आमतौर पर वामपंथी लोकतांत्रिक मोर्चे और कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूनाइटेड लोकतांत्रिक मोर्चे के बीच सत्ता में फेरबदल होता रहा है। इस लिहाज से देखें तो दो कार्यकाल के बाद वामपंथी मोर्चा सत्ता से बाहर हुआ है और अच्छी उपस्थिति के साथ कांग्रेस को महत्त्वपूर्ण जीत मिली है।

इसके अलावा, असम में एक तरह से अपेक्षित नतीजे आए हैं, जहां भाजपा ने फिर से भारी जीत हासिल की है। यह तब भी संभव हुआ, जब राज्य के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा के रुख को लेकर कई तरह के विवाद चुनाव प्रचार के केंद्र में रहे। इसी तरह, केंद्रशासित प्रदेश पुदुचेरी के परिणामों के मुताबिक, वहां सत्तारूढ़ राजग गठबंधन ने एक बार फिर बहुमत हासिल कर अपनी सत्ता कायम रखी। कहा जा सकता है कि इन चुनावों में भाजपा ने जहां पश्चिम बंगाल, असम और पुदुचेरी में जीत हासिल कर अपनी उपस्थिति साबित की है, वहीं कांग्रेस भी केरल की जीत को अपनी बड़ी उपलब्धि बता सकती है। चुनाव से पहले पश्चिम बंगाल में एसआइआर के तहत करीब सत्ताईस लाख लोगों को मतदाता सूची से बाहर किए जाने को लेकर भी सवाल उठे। इसके बावजूद राज्य में मतदान का कीर्तिमान कायम हुआ। बहरहाल, चुनाव प्रचार के दौरान चाहे जिस तरह की तल्खियां देखी गईं, लेकिन अब जरूरत इस बात की है कि एक लोकतांत्रिक ढांचे के तहत समावेशी विकास सभी सरकारों का मुख्य उद्देश्य बने।

जानलेवा लापरवाही

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के विवेक विहार इलाके में एक रिहाइशी इमारत में आग से नौ लोगों की मौत की घटना को लेकर जो बातें सामने आई हैं, उनसे सुरक्षा प्रबंधों पर ही सवाल खड़े हो गए हैं। इमारत में सेंधमारी से बचाव के लिए लगाई गई 'सेंट्रल लाक' प्रणाली, लोहे की मोटी ग्रिल और निकास के लिए वैकल्पिक बंदोबस्त न होना जानलेवा साबित हुआ। सुरक्षा के नाम पर की गई इस व्यवस्था ने आग और धुएं से घिरे लोगों के बचाव के रास्ते को ही बंद कर दिया। सवाल है कि बड़े शहरों में बनने वाले आवासीय परिसरों में सुरक्षा इंतजामों की समय-समय पर जांच क्यों नहीं की जाती? जब किसी इमारत में एक खतरे के मद्देनजर कोई सुरक्षात्मक प्रबंध किए जाते हैं, तो दूसरे जोखिमों को नजरअंदाज क्यों कर दिया जाता है! क्या भवन निर्माताओं के साथ-साथ स्थानीय प्रशासन की यह जिम्मेदारी नहीं है कि नागरिकों की सुरक्षा के लिए आवासीय परिसरों में सभी जरूरी व्यवस्थाएं की जाएं?

गौरतलब है कि रविवार तड़के हुई आग की इस घटना के दौरान इमारत की बिजली आपूर्ति बंद हो जाने से 'सेंट्रल लाक' प्रणाली ने भी काम करना बंद कर दिया और दरवाजा नहीं खुलने से लोग अंदर ही फंसे रह गए। जब बचाव कार्य शुरू हुआ, तो बंद बालकनी और इमारत में पीछे की ओर लगी लोहे की मोटी ग्रिल की वजह से लोगों को तत्काल बाहर नहीं निकाला जा सका। बाद में ग्रिल को काटकर रास्ता बनाया गया, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। यही नहीं, इमारत में आने-जाने के लिए केवल एक ही सीढ़ी थी, आपात स्थिति में निकासी के लिए वैकल्पिक मार्ग की कोई व्यवस्था नहीं थी। हैरत की बात है कि वाहनों और इमारतों में आग की घटना के दौरान 'सेंट्रल लाक' प्रणाली की वजह से जान जाने की खबरें अक्सर आती रहती हैं, इसके बावजूद सुरक्षा के स्तर पर कहीं कोई गंभीरता नजर नहीं आती है। आवासीय इमारतों में सुरक्षा उपायों की गहन जांच-पड़ताल के बिना ही बिजली-पानी के कनेक्शन दे दिए जाते हैं। सरकार और स्थानीय प्रशासन को चाहिए कि इस तरह की अनियमतता और लापरवाही बरतने वालों की जवाबदेही तय की जाए, ताकि नागरिकों की सुरक्षा से खिलवाड़ न हो।

हरित ऊर्जा की राह में संतुलन की चुनौती

दुनिया आज एक बड़े ऊर्जा बदलाव के दौर से गुजर रही है। जीवाश्म ईंधन से हरित ऊर्जा की ओर तेजी से कदम बढ़ाए जा रहे हैं। मगर क्या हरित भविष्य सचमुच सबके लिए होगा, या फिर यह भी उस विकास की तरह होगा, जो कुछ लोगों तक सीमित रह जाता है?

विजयशंकर चतुर्वेदी

वर्तमान में दुनिया एक बड़े ऊर्जा बदलाव के दौर से गुजर रही है। जलवायु परिवर्तन की चुनौती, बढ़ता प्रदूषण और जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता ने यह स्पष्ट कर दिया है कि पुराने रास्ते अब टिकाऊ नहीं रहे। मगर इस पूरी बहस के बीच एक बुनियादी सवाल अक्सर छूट जाता है- क्या हरित भविष्य सचमुच सबके लिए होगा, या फिर यह भी उस विकास की तरह होगा, जो कुछ लोगों तक सीमित रह जाता है? ऊर्जा संक्रमण को आमतौर पर तकनीकी बदलाव के रूप में देखा जाता है। जैसे- कोयले और तेल से हटकर सौर, पवन, बैटरी और ग्रीन हाइड्रोजन जैसी स्वच्छ ऊर्जा की ओर बढ़ना। मगर असल में यह केवल तकनीक का सवाल नहीं है, यह समाज, अर्थव्यवस्था और बराबरी का भी प्रश्न है। ऊर्जा का अर्थ केवल बिजली या ईंधन की उपलब्धता नहीं है, बल्कि इससे तय होता है कि जीवन कितना आसान होगा, अवसर किसे मिलेंगे और विकास से कौन लाभाविन्त होगा। भारत के परिप्रेक्ष्य में यह सवाल और जटिल हो जाता है। एक तरफ तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है, उद्योगों और शहरों में ऊर्जा की मांग लगातार बढ़ रही है। दूसरी तरफ ऐसे करोड़ों लोग हैं, जिनके लिए ऊर्जा आज भी अनिश्चित और महंगी है।

इसमें दोराय नहीं कि भारत ने ऊर्जा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। करोड़ों घरों तक बिजली पहुंची है और प्रति व्यक्ति वार्षिक बिजली खपत औसतन 1,400-1,500 यूनिट के आसपास हो गई है। मगर इस प्रगति के बावजूद उपयोग और पहुंच के बीच का अंतर आज भी बना हुआ है। यही अंतर भेदभाव की असली परिभाषा तय करता है। शहरों में जहां बिजली की घरेलू खपत कई सौ यूनिट तक पहुंच चुकी है, वहीं ग्रामीण इलाकों में स्थिति अब भी दयनीय है। इस बात को समझना होगा कि बिजली का कनेक्शन होना और निर्बाध आपूर्ति, दो अलग-अलग पहलू हैं। घरों में सिर्फ मीटर लगा देना को बिजली आपूर्ति से जोड़ देने के रूप में नहीं देखा जा सकता, निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करना भी जरूरी है। यानी ऊर्जा की उपलब्धता और उसकी गुणवत्ता का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। कई ग्रामीण और छोटे कस्बों में बिजली का कनेक्शन तो है, लेकिन आपूर्ति की निरंतरता, असमय कटौती और वोल्टेज की स्थिरता चुनौती बनी हुई है।

आने वाले वर्षों में देश में बिजली की मांग तेजी से बढ़ने वाली है। इस मांग का बड़ा हिस्सा उद्योगों, डेटा केंद्रों, वातानुकूलन और शहरी खपत से आएगा। अगर यही प्रवृत्ति जारी रही, तो ऊर्जा परिवर्तन उपभोक्ताओं की गैर-बराबरी को कम करने के बजाय और गहरा करेगा। अगर ऊर्जा का वितरण बाजार के तर्क पर ही चलता रहा, तो स्वाभाविक है कि वह उन्हीं तक पहले पहुंचेगी, जो अधिक भुगतान कर सकते हैं। ऐसे में ऊर्जा एक बुनियादी सेवा से धीरे-धीरे 'उच्च स्तरीय सुविधा' में बदल सकती है, जो सबके लिए समान रूप से उपलब्ध नहीं होगी। सौर ऊर्जा के तेज विस्तार का लाभ भी मुख्यतः उन्हीं वर्गों तक पहुंचा है, जिनके पास निवेश करने की क्षमता है। बड़े शहरों में छत पर सौर ऊर्जा उपकरण लगाने वाले उपभोक्ताओं की संख्या तेजी से बढ़ी है, जबकि ग्रामीण इलाकों में यह आंकड़ा नाममात्र है। जिनके पास छत, पूंजी और तकनीकी जानकारी है, वे

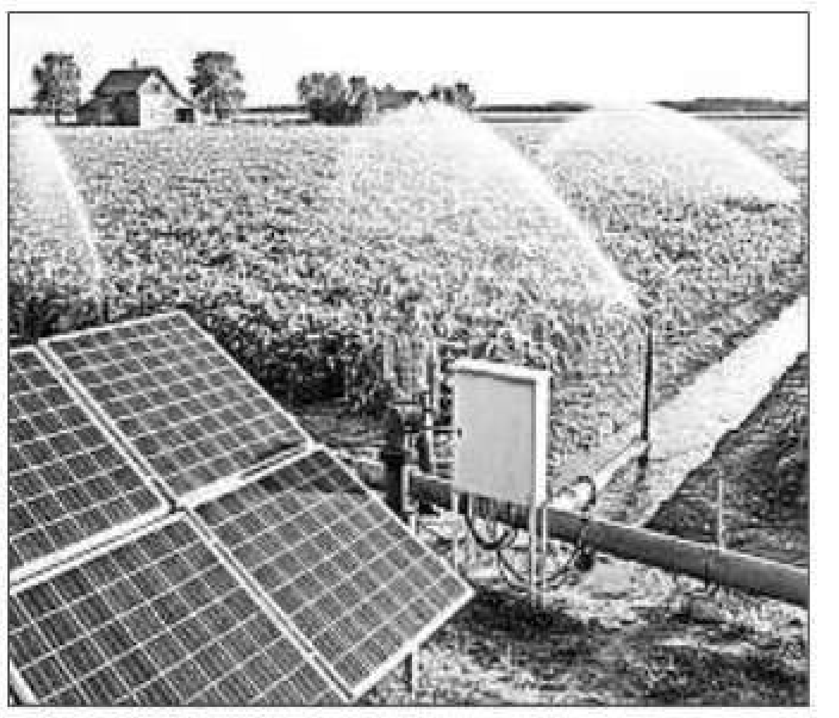

इससे सीधे लाभ उठा रहे हैं। इसके विपरीत जिनके पास ये साधन नहीं हैं, वे इस बदलाव के दायरे से बाहर हैं।

विद्युत चालित वाहनों का विस्तार भी इसी तर्ज पर हो रहा है। यह बदलाव अभी उन वर्गों में ठहरा हुआ है, जो नई तकनीक अपनाने की लागत वहन

> **सवाल सिर्फ यह नहीं है कि भारत हरित ऊर्जा की दिशा में कितनी तेजी से बढ़ रहा है, बल्कि इस बात पर गौर करना जरूरी है कि यह बदलाव किसके पक्ष में जा रहा है। अगर नीतियां केवल निवेश, निर्यात और बड़े उपभोक्ताओं के इर्द-गिर्द घूमती रहीं, तो हरित ऊर्जा भी सामाजिक स्तर पर खाई को गहरा करेगी। और यदि प्राथमिकता उन लोगों को दी गई, जिनके लिए ऊर्जा आज भी एक बुनियादी जरूरत है, तो यही बदलाव सामाजिक संतुलन का आधार बन सकता है। ऊर्जा का भविष्य केवल हरित होने से तय नहीं होगा, बल्कि इससे निर्धारित होगा कि वह कितना न्यायपूर्ण और समावेशी है। अगर ऊर्जा परिर्वतन सबको साथ लेकर नहीं चला, तो यह न तो टिकाऊ होगा और न ही समान विकास का वाहक बन पाएगा।**

करने में सक्षम हैं। इससे साफ संकेत मिलते हैं कि स्वच्छ ऊर्जा का लाभ समान रूप से नहीं बंट रहा। ग्रीन या हरित हाइड्रोजन जैसी उभरती तकनीक इस प्रवृत्ति को और स्पष्ट करती है। इसे भविष्य का ईंधन कहा जा रहा है, लेकिन इसका उपयोग मुख्य रूप से बड़े औद्योगिक क्षेत्रों में होता है। इससे यह सवाल उठता है कि क्या नई ऊर्जा तकनीक समाज के व्यापक हिस्से तक पहुंचेगी या केवल उत्पादन और निर्यात के ढांचे तक सीमित रह जाएगी। इतिहास बताता है कि तकनीकी प्रगति अपने आप समानता नहीं लाती। औद्योगिक और डिजिटल क्रांति में भी यही हुआ- पहले लाभ उन्हीं को मिला, जिनके पास संसाधन थे। बाकी समाज को उस लाभ तक पहुंचने में लंबा समय लगा। स्पष्ट है कि ऊर्जा में परिवर्तन को केवल उत्पादन बढ़ाने की नजर से नहीं देखा जा सकता, बल्कि सवाल वितरण के स्वरूप का भी है। अगर नई ऊर्जा का बड़ा हिस्सा उन्हीं क्षेत्रों में केंद्रित रहता है, जहां पहले से विकल्प मौजूद हैं, तो असमानता ही नहीं बढ़ेगी, बल्कि कमजोर और कम पहुंच वाले क्षेत्रों का आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तीकरण भी पीछे छूट जाएगा।

ऊर्जा परिवर्तन को समावेशी बनाने के लिए केवल बड़ी परियोजनाएं पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए विकेंद्रीकृत ऊर्जा प्रणालियों की जरूरत है। मसलन- छोटे सौर ऊर्जा संयंत्र, माइक्रो-ग्रिड और सामुदायिक ऊर्जा माडल तैयार किए जाने चाहिए, जो ऊर्जा को सीधे उन क्षेत्रों तक पहुंचा सकते हैं, जहां इसकी सबसे अधिक जरूरत है। ये माडल ऊर्जा को केवल उपभोग का साधन नहीं, बल्कि स्थानीय विकास का आधार बना सकते हैं। वित्तीय ढांचे को भी इसी दृष्टि से देखना होगा। अभी तक प्रोत्साहन और निवेश का बड़ा हिस्सा उन क्षेत्रों में जाता है, जहां वापसी की संभावना अधिक है। मगर समान वितरण के लिए वहां निवेश करना होगा, जहां जरूरत अधिक है, भले ही उसमें तुरंत आर्थिक लाभ दिखाई न दे। हरित ऊर्जा के लिए जमीन, पानी और खनिजों की आवश्यकता होती है। अगर इनका उपयोग स्थानीय समुदायों के हितों की कीमत पर होता है, तो यह एक नए प्रकार का असंतुलन पैदा करेगा। इसलिए विकास और पर्यावरण के साथ-साथ सामाजिक संतुलन भी जरूरी है।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि देश में अक्षय ऊर्जा की बढ़ी क्षमता का लाभ सभी क्षेत्रों तक समान रूप से नहीं पहुंचा है। राज्यों के बीच ऊर्जा उपयोग का अंतर इस बात को और स्पष्ट करता है। उदाहरण के तौर पर गुजरात और पंजाब जैसे राज्यों में प्रति व्यक्ति बिजली खपत 2000 यूनिट से अधिक है, जबकि बिहार में यह लगभग 300 यूनिट और उत्तर प्रदेश में 700 यूनिट के आसपास है। यह अंतर केवल आर्थिक नहीं, बल्कि बुनियादी ढांचे, औद्योगिक विकास और नीतिगत प्राथमिकताओं का भी है। कहीं ऊर्जा विकास का आधार बन रही है, तो कहीं बुनियादी जरूरत के स्तर पर ही सिमटी हुई है। भारत के पास यह अवसर है कि वह ऊर्जा परिवर्तन को एक व्यापक सामाजिक बदलाव का रूप दे सके।

सवाल सिर्फ यह नहीं है कि भारत हरित ऊर्जा की दिशा में कितनी तेजी से बढ़ रहा है, बल्कि यह है कि बदलाव किसके पक्ष में जा रहा है। अगर नीतियां केवल निवेश, निर्यात और बड़े उपभोक्ताओं के इर्द-गिर्द घूमती रहीं, तो हरित ऊर्जा भी सामाजिक स्तर पर खाई को गहरा करेगी। और यदि प्राथमिकता उन लोगों को दी गई, जिनके लिए ऊर्जा आज भी एक बुनियादी जरूरत है, तो यही बदलाव सामाजिक संतुलन का आधार बन सकता है। ऊर्जा का भविष्य केवल हरित होने से तय नहीं होगा, बल्कि इससे निर्धारित होगा कि वह कितना न्यायपूर्ण और समावेशी है। अगर ऊर्जा परिर्वतन सबको साथ लेकर नहीं चला, तो यह न तो टिकाऊ होगा और न ही समान विकास का वाहक बन पाएगा।

अपना आईना

अमिताभ स.

दूसरों को बदलना किसी के हाथ में नहीं होता, लेकिन अपने स्तर पर खुद को तो बदला ही जा सकता है। इस तरह की सोच-समझ रखने वालों को किसी के विचार और रवैये बुरे या भले नहीं लगते। महात्मा बुद्ध ने कभी नहीं कहा कि कोई काम बुरा है और कोई काम अच्छा है। वे केवल कहते हैं कि बोधपूर्वक किया गया काम अच्छा है, जबकि बोधहीनता के असर में किया गया काम बुरा है। बड़े-बुजुर्गों की भी अमूमन यही राय होती है कि हर बुराई में किसी न किसी तरह की अच्छाई छिपी होती है। बस उस अच्छाई को भांपने-समझने की जरूरत होती है। दूसरे शब्दों में, बुरा करने वाला भी कभी अच्छी सीख दे सकता है।

इसी संदर्भ में एक वाकये को उदाहरण के तौर पर याद किया जा सकता है। मूसलाधार बारिश या पाले में भी दूध की थैली पहुंचाने वाले भैया सुबह-सवेरे समय पर अखबार देना कभी नहीं चूकते हैं। एक रविवार सुबह दस बजे के आसपास वह भैया अपने एक ग्राहक के घर गए। उस परिवार के मुखिया बाऊ जी कहे जाते थे। वे बरामदे में नाश्ता कर रहे थे। स्वागत-नमस्कार के बाद भैया ने पेपर का महीने भर के पैसे का हिसाब थमा दिया। बाऊ जी ने रुपए दिए और बिल फाड़ दिया। फिर हफ्ते भर बाद एक शाम दरवाजे की घंटी बजी। घर में बुजुर्ग दादी थीं। उन्होंने दरवाजा खोला, तो सामने दूध की थैली पहुंचाने वाले भैया थे। बोले कि माता जी, अखबार के पैसे लेने हैं। दादी अपने सफेद दुपट्टे के एक कोने में गांठ बांध कर रुपए रखती थीं। उन्होंने गांठ खोली और रुपए गिन कर थमा दिए। घर में बारहवीं में पढ़ रहा उनका किशोर पोता भी था। वह गौर से यह सब देख-सुन रहा था। वह अपने संदेह के बावजूद चुप रहा, क्योंकि वह जानता था कि संदेह के आधार पर किसी को गलत या कसूरवार ठहराना नाइंसाफी है। वह तोल-मोल और बोल की कला से भी भली-भांति वाकिफ था। इसीलिए उसने अपने संदेह के बारे किसी से जिक्र नहीं किया।

दरअसल, यह एक सामान्य आकलन है कि संदेह जब हमारे दरवाजे की घंटी बजा रहा हो, तब केवल हम ही निर्णय ले सकते हैं कि इसे दिमाग की घंटी भी बजाने देनी है या नहीं। वही दुनियादारी को बढ़िया ढंग से निभा सकता है, जो इस तथ्य को स्वीकार करने की कला में पारंगत है। इसलिए बच्चे ने बस अपनी दादी, माता, पिता और भाई को हिदायत दी कि जब भी पेपर वाले भैया महीने के पैसे लेने आएं, तो भुगतान करने से पहले बिल लेना न भूलें। साथ ही बिल को संभाल कर किसी खास दराज में रखते जाएं। अगले महीने की दो-चार तारीख को भैया आए, मां को बिल देकर रुपए ले गए। मां ने बिल दराज में रख दिया। करीब दस दिन बाद वह फिर उसी महीने का बिल ले कर आ गए। इस दफा भाई मिला। उसने हैरानी जताते हुए उस भैया से पूछा कि अभी तक आप ने महीने का हिसाब नहीं लिया... इस बार तो बड़ी देर से ले रहे हैं आप। ऐसा कहते-कहते उसने भी पैसे दे दिए।

करीब हफ्ते बाद एक सुबह दूध देने के बाद वह व्यक्ति फिर से बिल लेकर आ गया। इस दफा यही किशोर मिल गया। वह बिल लेकर अंदर गया। उसने वही दराज खोला, तो देखा कि उसमें बीते महीने के पहले से दो बिल रखे हुए थे। बाहर आकर दोनों बिल उस व्यक्ति की तरफ बढ़ाते-बढ़ाते नम्रतापूर्वक शिकायत की कि शायद आपसे कुछ गलती हो गई है। आप पिछले महीने का बिल तीसरी बार लेने ला गए हैं! दूध पहुंचाने वाला झुंझलाहट के साथ अपनी सफाई देते हुए बोला, 'कोई नहीं, गलती हो गई होगी। अग्रिम भुगतान समझिए। अगले महीने में कट जाएंगे।' किशोर को समझते देर नहीं लगी कि उसका कसूर था या नहीं, लेकिन उनके घर-परिवार की व्यवस्था में चूक थी। कम रकम होने की वजह से परिवार का हर सदस्य भुगतान कर देता, यह मान कर कि देना ही होगा। यह हैरानी की बात जरूर है कि पैसे देने के बाद इस बारे में उनकी आपस में बात तक नहीं होती थी। मगर इस बार पकड़ में आने के बाद उसी रोज से परिवार ने घर का कायदा दुरुस्त कर दिया कि पेपर, दूध, राशन, फल- सब्जी, कपड़े या बर्तन धोने वाले घरेलू सहायक- सभी का हिसाब-किताब अलग-अलग तयशुदा सदस्य ही किया करेंगे। इससे किसी पर संदेह नहीं होगा और कोई दूसरा नाजायज फायदा नहीं उठा पाएगा।

निश्चित तौर पर उस व्यक्ति की तरह सभी ऐसा नहीं करते। ऐसे मामले बहुत कम और अपवाद हो सकते हैं। मगर इससे समझा जा सकता है कि हर इंसान बाहरी तत्त्वों, हालात और स्थितियों को बदलने में जुटा रहता है। बावजूद इसके कि वह शायद ही कामयाब हो पाए। वास्तव में ज्यादा जरूरी यह है कि पहले अपने आप में बदलाव किया जाए, ताकि ऐसी परिस्थितियों से दो-चार होने की नौबत ही न आए। अपने भीतरी बदलाव के बगैर कोई बाहरी दुनिया को सुधार ही नहीं सकता। ओशो की मानें, तो इस तरह कभी-कभी बिना चेष्टा किए परिस्थितियां जीने की बड़ी समझ और सबक सिखा देती हैं। जो कुछ घटित हो रहा है, उसे शांत और तटस्थ होकर बस देखते रहना चाहिए। ब्रिटिश प्रकृतिवादी चार्ल्स डार्विन ने अपने पिता से बचपन में मिली सलाह को ताउम्र गांठ बांधे रखा कि जब तक तुम भ्रम में हो और तुम्हारे पास पूरे सबूत न हों, तब तक तुम्हें चुप ही रहना है। सच है कि जिसने यह समझ-जान लिया, वह खुद भी अपनी गलतियों का सुधार कर लेगा और दूसरों की भी।

दुनिया मेरे आगे

> **हर इंसान बाहरी तत्त्वों, हालात और स्थितियों को बदलने में जुटा रहता है। बावजूद इसके कि वह शायद ही कामयाब हो पाए। वास्तव में ज्यादा जरूरी यह है कि पहले अपने आप में बदलाव किया जाए, ताकि ऐसी परिस्थितियों से दो-चार होने की नौबत ही न आए। अपने भीतरी बदलाव के बगैर कोई बाहरी दुनिया को सुधार ही नहीं सकता।**

जरूरी हस्तक्षेप

'शोर के विरुद्ध' (संपादकीय, 27 अप्रैल) पढ़ा। इसमें पीड़ित जनमानस की उस मूक पीड़ा को मुखर किया गया है, जो आज देश के महानगरों से लेकर गांव-कस्बों तक समान रूप से व्याप्त है। ध्वनि विस्तारकों जैसे डीजे, लाउडस्पीकर, और 'प्रेशर हार्न' इत्यादि ने ध्वनि प्रदूषण को चिंताजनक स्तर तक पहुंचा दिया है। स्थिति यह है कि दूर तक आवाज पहुंचाने की होड़ में स्कूल बसों के हार्न तक इतने कर्कश हो चुके हैं कि बीमार, वृद्ध और विश्राम कर रहे लोगों के लिए ये मानसिक तनाव का कारण बन जाते हैं। यह केवल असुविधा नहीं, बल्कि एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या का रूप ले चुका है। ध्वनि प्रदूषण के इस खतरनाक स्तर के पीछे मुख्य कारण नियमों की निरंतर अनदेखी है। यह लापरवाही केवल आमजन तक सीमित नहीं, बल्कि उन प्राधिकृत अधिकारियों तक भी फैली हुई है, जिन पर इन नियमों के प्रभावी क्रियान्वयन की जिम्मेदारी है। उनकी उदासीनता के दुष्परिणाम कार्यक्षमता में गिरावट और विभिन्न मानसिक तथा शारीरिक बीमारियों के रूप में सामने आ रहे हैं। इसलिए आवश्यक है कि ध्वनि प्रदूषण एवं पर्यावरण संरक्षण से जुड़े नियमों को पूरे देश में सख्ती से लागू किया जाए।

– खुमानसिंह चुंडावत, मंदसौर

अधर में भविष्य

बिहार में सहायक शिक्षा विकास पदाधिकारी की नौ पालियों की परीक्षा रद्द किया जाना कोई सामान्य घटना नहीं है, बल्कि यह उस लंबी फेहरिस्त का नया अध्याय है, जिसने बिहार के प्रतियोगी छात्रों के भविष्य को अधर में लटका रखा है। 'सुशासन' का दम भरने वाली सरकार के दौर में परीक्षा प्रणाली का इस कदर खोखला होना न केवल प्रशासनिक विफलता है, बल्कि राज्य की समूची व्यवस्था पर दाग भी है। पिछले बीस वर्षों में बिहार में ऐसी शायद ही कोई बड़ी परीक्षा रही हो, जो विवादों या न्यायालय के हस्तक्षेप से न गुजरी हो। यहां 'परीक्षा रण' अब प्रतिभा का नहीं, बल्कि जुगाड़ और 'तकनीकी सेंधमारी' का रण बन गया है। आयोग की 67वीं प्रारंभिक परीक्षा (2022) भी रद्द करनी पड़ी थी। यह पहली बार था जब बिहार लोक सेवा आयोग की साख पर बट्टा लगा। सिपाही भर्ती परीक्षा (2023) भी धांधली के कारण रद्द हुई थी। यह युवाओं के भविष्य से खिलवाड़ है।

– प्रसिद्ध यादव, फुलवारी, पटना

ढाक के पात

अपराध और अपराधियों पर अंकुश लगाने के लिए केंद्र और राज्य सरकारें समय-समय पर अनेक प्रभावी कानून बनाती हैं। सामान्य जन राहत की सांस लेता है। वह सोचता है कि अब इस कानून के आने से अपराध कम होंगे। सामान्य जन का यह भ्रम जल्दी ही चकनाचूर हो जाता है। असल में अपराध रोकने वाला हर नया कानून भ्रष्टाचार का एक नया द्वार खोल देता है। चाहे वह कानून डीजे से संबंधित हो या वाहनों पर जाति को दर्शाते वाक्य, चाहे वह कानून परिवहन से जुड़ा हो या हर्ष फायरिंग से। सभी कानून फाइलों तक सीमित रह जाते हैं। हाल ही में मेरठ में हर्ष फायरिंग में एक राजमिस्त्री की जान उस समय चली गई, जब वह सूर्य को अर्घ्य दे रहा था। विवाह की खुशियां पल भर में शोक में बदल गई। कुछ समय पहले भी मवाना में ऐसी ही घटना घटी थी। जब तक कानून कठोरता से लागू नहीं होगा और जल्दी सजा देने की व्यवस्था नहीं होगी, अपराध नहीं रुकेंगे।

– नरेंद्र टोंक, मेरठ

समय और अर्थ

जीवन की दौड़ में अक्सर हम सफलता को आय के पैमाने पर मापने लगते हैं, मानो खुशियों का तराजू नोटों की गड्डियों से संतुलित होता हो। मगर वास्तविकता कुछ अलग कहानी कहती है। समय और पैसा दोनों जीवन के दो पहिये हैं, पर जैसे-जैसे एक तेज होता है, दूसरा अक्सर पीछे छूट जाता है। अधिक आय की चाह में हम अपने दिन को इतना भर देते हैं कि उसमें जीवन के रंगों के लिए जगह ही नहीं बचती। अनुसंधान भी संकेत देते हैं कि आय बढ़ने के साथ शुरुआती स्तर पर खुशी में वृद्धि होती है, क्योंकि इससे बुनियादी आवश्यकताएं पूरी होती हैं और असुरक्षा कम होती है। मगर एक सीमा के बाद आय का प्रभाव धीमा पड़ जाता है। तब अधिक कमाने की दौड़ स्वयं बोझ बन जाती है। समय की कमी रिश्तों को सीमित करती है, रुचियों को हाशिये पर डाल देती है और अंततः जीवन की संतुष्टि कम हो जाती है।

– मो अजहर आलम अंसारी, पूर्णिया

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

अपराध संक्षेप

रिक्शा चालक को डीटीसी बस ने रौंदा

नई दिल्ली। दक्षिण-पूर्व जिले के गोविंदपुरी थाना क्षेत्र में ओखला एस्टेट मार्ग पर सोमवार को डीटीसी बस की चपेट में आने से बुजुर्ग रिक्शा चालक 60 वर्षीय बृजेश की मौत हो गई। वह क्षेत्र में फुटपाथ पर रहते थे और रिक्शा चलाकर गुजारा करते थे। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक घटना दोपहर लगभग तीन बजे की है। बृजेश सड़क किनारे रिक्शे पर सामान लोड करके उसे बांध रहे थे। रस्सी टूटने से वे सड़क पर जा गिरे। उसी समय तुगलकाबाद एक्सटेंशन की ओर से आ रही रूट नंबर 440 की डीटीसी बस का अगला बायां पहिया उन पर चढ़ गया। पहिए के नीचे आने के बाद लगभग दो मीटर तक शव घिसटता रहा। ब्यूरो

जूलर से सोना और स्कूटी लूटी, शिकायत

नई दिल्ली। पूर्वी दिल्ली के प्रीत विहार इलाके में बदमाशों ने बंदूक की नोक पर एक ज्वेलर से सोने के आभूषण, नकदी और उनकी एक्टिवा स्कूटी लूट ली। यह घटना रविवार रात की है। उस समय पीड़ित सुकुमार धारा मंडावली स्थित अपनी ज्वेलरी दुकान से घर लौट रहे थे। प्रीत विहार थाना पुलिस ने मामला दर्जकर जांच शुरू की है। पूर्वी जिला पुलिस उपायुक्त राजीव कुमार ने बताया कि लक्ष्मी नगर निवासी सुकुमार धारा को रात करीब 10.30 बजे मधुबन रोड पर अमूल डेयरी के पास कुछ अज्ञात हथियारबंद हमलावरों ने रोक लिया। आरोपियों ने धारा को हथियार दिखाकर धमकाया और उनका मोबाइल फोन तथा स्कूटी छीन ली। ब्यूरो

राजस्थान से पकड़ा गया ठगी का आरोपी

नई दिल्ली। पशु चिकित्सा विज्ञान का छात्र ऑनलाइन घर पर बैठे पैसे कमाने का झांसा देकर ठगी कर रहा था। मध्य जिले की साइबर थाना पुलिस ने इस 20 साल के छात्र को राजस्थान के करौली से गिरफ्तार किया है। आरोपी युवकों को सोशल मीडिया खासकर इंस्टाग्राम पर विज्ञापन देता था। मध्य जिला पुलिस उपायुक्त रोहित राजबीर सिंह ने बताया कि जिले की साइबर थाना पुलिस को 29 अप्रैल, 2026 को धोखाधड़ी की जानकारी मिली थी। दिल्ली के सीताराम बाजार में रहने वाले पीड़ित ने शिकायत दी कि उनसे 35 हजार के करीब ठगी की गई है। मामला साइबर थाना प्रभारी इंस्पेक्टर योगराज दलाल व एसआई गौरव ने जांच शुरू की। पुलिस ने करौली जिले से अनुज मीणा को गिरफ्तार किया। ब्यूरो

मेयर ऑफिस को बम से उड़ाने की धमकी

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम के महापौर कार्यालय को सोमवार सुबह एक बार फिर बम से उड़ाने की धमकी मिली। सूचना मिलते ही पुलिस ने मौके पर पहुंचकर पूरे परिसर की जांच की। फौरन डॉग और बम स्क्वायड को मौके पर बुला लिया गया। बाद में पूरे परिसर की तलाशी ली गई। कहीं कुछ न मिलने पर कॉल को हॉक्स करार दिया गया। बम विस्फोट के धमकी भरे मेल में दोपहर 3:11 बजे विस्फोट करने की बात कही गई थी, जिससे सुरक्षा एजेंसियां तुरंत सतर्क हो गईं। धमकी मिलते ही महापौर कार्यालय ने तुरंत दिल्ली पुलिस को सूचना दी। इसके बाद पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर पूरे परिसर की सघन जांच की। ब्यूरो

एटीएम काटकर 19 लाख चुराए, गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने मंडावली इलाके में एक एटीएम मशीन को गैस कटर से काटकर 19 लाख रुपये से अधिक की चोरी करने के मामले में राजस्थान से एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी कुख्यात हरियाणा के पलवल निवासी रॉबिन (26) इमरान मेवाती गिरोह का सदस्य है। पुलिस ने कार और चोरी की गई नकदी में से 22,500 रुपये बरामद किए हैं। अपराध शाखा के पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) पंकज कुमार ने बताया कि हिटाची पेमेंट्स सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड के कानूनी सलाहकार गौरव बैसला की शिकायत पर मंडावली फजलपुर थाने में 30 अप्रैल को प्राथमिकी दर्ज की गई थी। शिकायत के अनुसार पश्चिम विनोद नगर स्थित आईसीआईसीआई बैंक के एटीएम में 29 अप्रैल को 22 लाख रुपये डाले गए थे और ग्राहकों की निकासी के बाद मशीन में 19,32,600 रुपये शेष थे। ब्यूरो

कोर्ट डायरी

इंजीनियर राशिद ने जमानत में संशोधन की मांग की

नई दिल्ली। बारामूला के सांसद शेख अब्दुल राशिद उर्फ इंजीनियर राशिद ने सोमवार को दिल्ली हाईकोर्ट से आतंकवाद फंडिंग मामले में दी गई एक हफ्ते की अंतरिम जमानत के आदेश में संशोधन की अपील की। उन्होंने अपने बीमार पिता के इलाज के लिए दिल्ली में रहने की अनुमति मांगी। न्यायमूर्ति प्रतिभा एम. सिंह और न्यायमूर्ति मधु जैन की खंडपीठ ने मामले को मंगलवार को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध कर दिया और पुलिस से दिल्ली का स्थानीय पता उपलब्ध कराने के लिए कहा। राशिद के वरिष्ठ वकील ने अदालत को बताया कि उनके मुवक्किल को सांसद के रूप में दिल्ली में एक फ्लैट आवंटित किया है। ब्यूरो

अर्जुन कपूर के व्यक्तित्व अधिकारों को दी सुरक्षा

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने बॉलीवुड अभिनेता अर्जुन कपूर के व्यक्तित्व अधिकारों को संरक्षण प्रदान करते हुए तीसरे पक्षों द्वारा उनके नाम, आवाज, छवि, समानता और अन्य विशेषताओं के अनधिकृत उपयोग पर रोक लगा दी है। न्यायमूर्ति पंकज जैन ने 29 अप्रैल को अंतरिम आदेश जारी करते हुए कहा कि अर्जुन कपूर ने फिल्म जगत में खुद के लिए एक अनोखी जगह बनाई है। इसलिए उनके नाम, आवाज, छवि, फोटोग्राफ, यूनिक पर्सोना और सिग्नेचर का किसी भी प्रकार के शोषण से संरक्षण आवश्यक है। अदालत ने अर्जुन कपूर की याचिका पर सुनवाई करते हुए निर्देश दिया कि अवैध सामग्री को तुरंत हटा दिया जाए। ब्यूरो

अय्यर मित्रा के खिलाफ एफआईआर पर रोक

नई दिल्ली। साकेत कोर्ट ने सोमवार को पत्रकार मनीषा पांडे और अन्य पत्रकारों के खिलाफ आपत्तिजनक सोशल मीडिया पोस्ट्स के मामले में अभिजीत अय्यर-मित्रा के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने के मजिस्ट्रेट आदेश पर रोक लगा दी है। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश (एएसजे) पुरुषोत्तम पाठक ने साकेत कोर्ट में सुनवाई करते हुए यह अंतरिम राहत दी। अदालत ने मामले की अगली सुनवाई 28 मई तय की है और तब तक एफआईआर दर्ज करने के आदेश पर रोक लगी रहेगी। मजिस्ट्रेट अदालत ने 22 अप्रैल 2026 को अभिजीत अय्यर-मित्रा के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने का आदेश दिया था। ब्यूरो

हाईकोर्ट ने स्पाइसजेट की याचिका खारिज की

नई दिल्ली। कलानिधि मारन और कल एयरवेज के साथ चल रहे कानूनी विवाद में 144 करोड़ रुपये जमा करने के आदेश की समीक्षा की मांग करने वाली स्पाइसजेट की याचिका को दिल्ली हाईकोर्ट ने सोमवार को ठुकरा दिया। न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद की पीठ ने स्पाइसजेट और इसके प्रमोटर अजय सिंह पर 50,000 रुपये का जुर्माना भी लगाया। पीठ ने कहा, 50,000 रुपये के जुर्माने के साथ याचिका खारिज की जाती है। 19 जनवरी 2025 को हाईकोर्ट ने स्पाइसजेट और अजय सिंह को 194 करोड़ रुपये की स्वीकृत देनदारी में से 144 करोड़ रुपये छह सप्ताह के अंदर कोर्ट रजिस्ट्री में जमा करने का निर्देश दिया था। बाद में 18 मार्च को इस समय सीमा को चार सप्ताह के लिए बढ़ा दिया था। अजय सिंह और स्पाइसजेट ने 18 मार्च के आदेश की समीक्षा की मांग करते हुए याचिका दायर की थी। इसमें पश्चिम एशिया में चल रहे युद्ध के कारण उत्पन्न वित्तीय संकट का हवाला दिया गया। एयरलाइन ने इसके बजाय गुरुग्राम स्थित एक कॉमर्शियल संपत्ति को सिक्योरिटी के रूप में पेश करने की पेशकश की और कहा कि केंद्र सरकार भी कुछ सहायता देने को तैयार है। ब्यूरो

पंचमी पुण्यतिथि
आज आपकी चतुर्थ पुण्यतिथि पर हम सभी परिवारजन अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।
"ना कहीं गए हो आप, ना ही कहीं जाओगे। सदा हमारे मन मंदिर के आधार कहलाओगे।"

श्रद्धानवत
ओम प्रकाश अग्रवाल (रिटायर्ड सैन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया) (पति)
अंकुर अग्रवाल (पुत्र)
डॉ0 अंकित अग्रवाल-डॉ0 पूर्वी अग्रवाल (पुत्र-पुत्रवधु)
शिप्रा अग्रवाल (पोती)
स्व. श्रीमती उषा अग्रवाल
06.07.55 - 05.05.2021
निवासी – 133 अशोक नगर, आगरा। 9319211133
991 अमेथा टावर गौर सौंदर्यम नोएडा एक्सटेंशन।

डॉक्टर ने 18 छात्रों को नीट का पेपर देने का वादा कर लिए पैसे, 4 गिरफ्तार

एमबीबीएस दाखिला रैकेट का खुलासा : पिछले साल के फर्जी प्रश्नपत्र देकर अभ्यर्थियों के परिजनों से 20 से 30 लाख रुपये मांगने का आरोप

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने नीट अभ्यर्थियों और उनके परिजनों को एमबीबीएस में दाखिले का झांसा देकर ठगने वाले एक रैकेट का पर्दाफाश करते हुए गिरोह के सरगना समेत चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरोह का सरगना एक डॉक्टर है।

अपराध शाखा के पुलिस उपायुक्त संजीव कुमार यादव के अनुसार आरोपियों ने तीन मई को हुई नीट (यूजी) 2026 परीक्षा से पहले पेपर उपलब्ध कराने के बहाने 18 छात्रों को अलग-अलग स्थानों पर ले जाकर रखा था। पुलिस ने इन छात्रों को इनके कब्जे से सुरक्षित निकाला है।

जांच में सामने आया कि कथित फर्जी प्रश्नपत्र पिछले वर्षों के सवालों और कोचिंग संस्थानों की सामग्री के आधार पर तैयार किए गए थे। उन्होंने बताया कि आरोपी अभ्यर्थियों के परिजनों से 20 से 30 लाख रुपये की मांग करते थे और मेडिकल कॉलेज में पक्का दाखिला दिलाने का दावा करते हुए अग्रिम राशि भी लेते थे।

उपायुक्त यादव ने बताया कि यह कार्रवाई 2 मई को सूरत पुलिस से मिली एक सूचना के बाद शुरू की गई, जिसमें दिल्ली से एक संदिग्ध नीट के जरिये दाखिला दिलाने का दावा कर रहा था। इंस्पेक्टर सुनील कालखंडे, इंस्पेक्टर यशेंद्र सिंह और इंस्पेक्टर महिपाल की टीम ने सूरत पुलिस के साथ मिलकर तकनीकी निगरानी के आधार पर पुलिस महिपालपुर एक्सटेंशन पहुंची, जहां कई होटलों में तलाशी ली गई। पुलिस ने अंततः एक होटल में ठहरे चार आरोपियों की पहचान की, जिनमें विनोद भाई भीखा भाई पटेल शामिल है, जिसने गुजरात से अभ्यर्थियों को फंसाया था।

एआई तस्वीर

पूछताछ में पता चला कि आरोपी अभिभावकों से बड़ी रकम 10वीं और 12वीं की मूल मार्कशीट और हस्ताक्षरित खाली चेक लेकर उन्हें झूठे आश्वासन देते थे। जांचकर्ताओं के अनुसार आरोपियों ने कुछ छात्रों को उनके अभिभावकों से दूर रखा था। पुलिस ने गाजियाबाद के एक अस्पताल के पास जाल बिछाकर तीन छात्रों को बचाया और कथित सरगना संतोष कुमार जायसवाल को गिरफ्तार किया।

इसके बाद गाजियाबाद स्थित एक फ्लैट पर छापेमारी कर 15 और छात्रों को छुड़ाया गया, जिनमें कुछ नाबालिग भी थे। ये छात्र 3 मई को होने वाली नीट परीक्षा में शामिल होने वाले थे। पुलिस ने बताया कि उन्हें काउंसलिंग के बाद परीक्षा में बैठने की अनुमति दी गई।

दो अन्य आरोपियों को गिरफ्तार किया गया : इस दौरान दो अन्य आरोपी संत प्रताप सिंह और डॉ. अखलाक आलम उर्फ गोल्डन आलम को भी गिरफ्तार किया गया। पुलिस के अनुसार, गिरोह ने मेडिकल अभ्यर्थियों की आकांक्षाओं का फायदा उठाने के लिए सुनियोजित तरीका अपनाया था।

जायसवाल इस साजिश का मुख्य योजनाकार था, जबकि आलम फर्जी प्रश्नपत्र तैयार करता था। सिंह लॉजिस्टिक्स और ठहरने की व्यवस्था देखता था, जबकि पटेल बिचौलिए के रूप में परिवारों से संपर्क करता था। छापेमारी के दौरान पुलिस ने 149 पन्नों का प्रश्न-उत्तर सामग्री, पीड़ितों के तीन हस्ताक्षरित खाली चेक और अन्य आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद किए हैं।

पैथोलॉजी लैब चलाता है आरोपी संतोष

स्नातक डिग्री होल्डर व मूलरूप से बिहार निवासी मुख्य साजिशकर्ता संतोष कुमार जायसवाल (50) ईस्ट ऑफ कैलाश इलाके में रह रहा था। वह यहां एक पैथोलॉजी लैब चलाता है। गोपालगंज, बिहार निवासी डॉ. अखलाक आलम उर्फ गोल्डन आलम (25) ने किर्गिस्तान से अपनी एमबीबीएस की पढ़ाई पूरी की है और वर्तमान में भारत में प्रैक्टिस करने के लिए नेशनल मेडिकल कमीशन (एनएमसी) की ओर से आयोजित परीक्षा की तैयारी कर रहा था। लखनऊ, उत्तर प्रदेश निवासी संत प्रताप सिंह (59) के पास पुणे से बीटेक की डिग्री है। वह पेशे से एक प्रॉपर्टी डीलर-सह-बिल्डर था। जियाबाद, पुणे तथा अन्य जगहों पर उसकी अपनी प्रॉपर्टीज हैं। सूरत, गुजरात निवासी विनोद भाई भीखा भाई पटेल (52) 12वीं कक्षा तक पढ़ा-लिखा है और सूरत में एक ब्रोकर था।

लापरवाही से बुझे 2 घरों के चिराग

खुले नाले में गिरने से दो साल के मासूम की मौत, मांझे से कटी बच्चे की गर्दन, तोड़ा दम

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। बाहरी उत्तरी जिला के भलस्वा डेरी स्थित मुकुंदपुर गांव में रविवार दो साल की मासूम लापरवाही की भेंट चढ़ गई। यहां खुले नाले में गिरकर मासूम की जान चली गई। मृतका की शिनाख्त अश्वी (2) के रूप में हुई है। रविवार सुबह करीब 11 बजे घर के पास खेलते हुए अचानक अश्वी लापता हो गई थी। कई घंटे मासूम की तलाश करने के बाद परिजनों ने खुद ही नाले में उतरकर मासूम को ढूंढा। बाद में उसे नजदीकी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। बाद में सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची। शव को कब्जे में लेकर बाबू जगजीवन राम अस्पताल की मोर्चरी भेजा गया। जांच में पता चला कि नाला सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग का है। करीब 10 दिन पहले नाले की सफाई के लिए उसकी स्लैब को हटाया गया था, लेकिन उसको दोबारा नहीं ढका गया। इस बीच हादसा हो गया। पुलिस ने सोमवार को पोस्टमार्टम के बाद मासूम का शव परिजनों के हवाले कर दिया।

गुस्साए परिजनों ने मासूम का शव मुकुंदपुर गांव के 60 फुटा रोड पर रखकर जाम लगा दिया। लोगों ने जमकर सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग के खिलाफ नारेबाजी की। खबर मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई। करीब दो घंटे चले प्रदर्शन के बाद पुलिस ने समझाकर परिजनों को वहां से हटाया गया। पुलिस ने मामले में लापरवाही का मामला दर्ज कर लिया है। सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग के अधिकारियों ने बताया है कि नाले का निर्माण उनके विभाग ने वर्ष 2023 में किराया था। इसके बाद इसको नगर निगम को हैंड ओवर करने की प्रक्रिया चल रही थी। हादसे को लेकर जांच जारी है। अधिकारियों का कहना है कि किस स्तर पर लापरवाही हुई, उसकी भी पड़ताल की जा रही है।

अश्वी। फाइल

सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग के लापरवाही की भेंट चढ़ी दो साल की अश्वी

10 दिन पहले नाले की सफाई के लिए हटाए गए थे नाले के स्लैब

इसी नाले में गिरने से गई अश्वी की जान। संवाद

मासूम की मौत से माता-पिता का रो-रोकर बुरा हाल : अश्वी कुमार परिवार के साथ मुकुंदपुर गांव में रहती थी। इसके परिवार में पिता विकास केसरी, मां सुलोचना देवी, दादा शंभु प्रसाद केसरी और ताऊ अजीत प्रसाद केसरी हैं। विकास और सुलोचनी की वर्ष 2023 में शादी हुई थी। विकास की घर के पास ही किराने की दुकान है। रविवार सुबह मासूम घर के पास खेल रही थी। इस बीच वह गायब हो गई। परिजनों ने उसकी तलाश शुरू की। कई घंटे तलाश करने के बाद परिवार ने भलस्वा डेरी थाने पहुंचकर उसकी गुमशुदगी दर्ज करा दी। इस बीच परिवार खुद ही मासूम को ढूंढता रहा। एक पड़ोसी के कहने पर परिजनों को मासूम के नाले में गिरने का शक हुआ। शक आधार पर परिजन नाले में उतरे। करीब दो फीट चौड़े और चार फीट गहरे नाले से कुछ ही देर में मासूम का शव बरामद हुआ। मासूम की मौत का पता चलते ही सुलोचना बेहोश हो गई और विकास भी रोने लगा। सोमवार को उसके शव का पोस्टमॉर्टम करवाया गया। अब पुलिस मामले की जांच कर रही है।

अक्सर हो जाते हैं हादसे : प्रदर्शन में परिजनों ने आरोप लगाया कि आए दिन कोई न कोई इस खुले नाले में गिरता रहता है। पिछले दिनों एक बुजुर्ग नाले में गिरकर जख्मी हो गए थे। इसके अलावा मवेशी और दूसरे जानवर भी नाले में गिरते रहते हैं। हादसे के बाद स्थानीय लोगों ने इस नाले को तुरंत बंद करवाने की अपील की। पुलिस अधिकारियों ने वादा किया है कि वह विभाग से गुजारिश कर इस नाले को बंद करवाने के लिए लिखेंगे।

मां-चाचा के साथ बाइक पर था देवांश

नई दिल्ली। उत्तर-पूर्वी दिल्ली के न्यू उस्मानपुर इलाके में रविवार शाम मां और चाचा के साथ बाइक पर जा रहे पांच साल के मासूम देवांश की गर्दन मांझे की चपेट में आने से कट गई। गंभीर और लहूलुहान हालत में मासूम को नजदीकी जग प्रवेश चंद्र अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मासूम की मौत की खबर सुनकर मां बदहवास हो गई। किसी तरह लोगों ने उसे संभाला। देवांश अपनी मां और चाचा के साथ घर से कश्मीरी गेट बस अड्डे की ओर जा रहा था। वह बाइक पर आगे बैठा था। इसी बीच जीटी रोड पर सीएनजी पंप के पास अचानक मांझा मासूम के गले में उलझ गया। चाचा ने जब तक बाइक रोकी तब तक मासूम की गर्दन पर गहरा जख्म हो गया। पुलिस के मुताबिक मासूम अपने परिवार के साथ दिलशाद गार्डन ई-ब्लॉक में रहता था। इसके परिवार में पिता शिवा और मां वंदना है। पिता प्राइवेट नौकरी करते हैं। पुलिस ने छानबीन के बाद मामला दर्ज कर लिया। इसके बाद पुलिस की टीम ने घटना स्थल का मुआयना किया। पुलिस मामले की छानबीन में जुटी है। मासूम की मौत के बाद परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। परिजनों ने मांग की है कि आरोपी को पकड़ा जाए और परिवार को इंसाफ दिलवाया जाए।

युवक बहन पर करता था कमेंट नाबालिग ने चाकू से ली जान

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। उत्तर-पश्चिम दिल्ली के मुखर्जी नगर इलाके में सोमवार सुबह एक नाबालिग ने अपने दोस्त की चाकू से वारकर हत्या कर दी। वारदात के बाद आरोपी भाग गया। मृतक की शिनाख्त आमान (19) के रूप में हुई है।

पुलिस ने उसका शव कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए मोर्चरी भेजा है। शाम के समय पुलिस ने 16 वर्षीय नाबालिग को हत्या के आरोप में दबोच लिया। पुलिस की पूछताछ में आरोपी ने बताया है कि आमान उसकी रिश्ते ही बहन को आते-जाते कमेंट करता था। उसने कई बार आमान को मना भी किया था, लेकिन वह नहीं मान रहा था। सोमवार को योजना बनाकर उसने वारदात को अंजाम दे दिया।

उत्तर-पश्चिम जिला पुलिस उपायुक्त आकांक्षा यादव ने बताया कि आमान अपने परिवार के साथ गली नंबर-3, धोबी घाट, अशोक विहार के संगम पार्क में रहता था। इसके परिवार में भाई रहमान व अन्य सदस्य हैं। आमान एरिया की एक मीट की दुकान पर काम करता था। नाबालिग दोस्त भी उसके साथ वहीं काम कर रहा था। सोमवार सुबह 9 बजे दोनों दोस्त स्कूटी पर सवार होकर दुकान जाने के लिए निकले। आमान स्कूटी चला रहा था। इस बीच नाबालिग उसके पीछे बैठा हुआ था। इस बीच कूड़ा खत्ता, मलिकपुर पहुंचने पर पीछे बैठे नाबालिग ने अचानक चाकू निकाला और आमान की पीठ पर वार कर दिया। आमान ने स्कूटी रोकी तो आरोपी ने चाकू के कई वार किए। आमान वहीं पर गिर गया। बाद में आरोपी फरार हो गया। मौके पर लोगों की भीड़ जुट गई। किसी ने पुलिस को सूचना दे दी। पुलिस की गाड़ी भी काफी देर में पहुंची। इस बीच आमान वहीं पर पड़ा तड़पता रहा।

बाद में मौके पर पहुंची पुलिस ने आमान को बाबू जगजीवन राम अस्पताल में भर्ती कराया, जहां उसका उपचार शुरू हुआ। दोपहर के समय इलाज के दौरान आमान ने दम तोड़ दिया। उसकी मौत के बाद पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज कर आरोपी नाबालिग की तलाश शुरू की। देर शाम उसे संगम पार्क एरिया से दबोच लिया गया।

आरोपी के पास से वारदात में इस्तेमाल चाकू भी बरामद कर लिया गया। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

एआई तस्वीर

मुखर्जी नगर की वारदात पुलिस ने 16 साल के नाबालिग को दबोचा

मुठभेड़ में कच्छा-बनियान गिरोह के 6 बदमाश दबोचे

मालवीय नगर इलाके में कच्छा-बनियान गिरोह घर में चोरी करता हुआ। संवाद

नई दिल्ली। दक्षिण जिले के वाहन चोरी निरोधक दस्ते (एएटीएस) ने दक्षिण दिल्ली के सर्वोदय एनक्लेव में हाल ही में हुई लूट में शामिल कुख्यात कच्छा-बनियान गिरोह के छह सदस्यों को को सोमवार तड़के मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार किया है।

इनमें से निर्मल पारदी उर्फ निखिल (34), अंबर उर्फ डेविन (25) और सम्राट उर्फ समर उर्फ काला (30) को गोली लगी हैं। यहां से तीन अन्य बदमाशों को भी गिरफ्तार कर लिया गया। तीन घायलों को अस्पताल जबकि तीन अन्य को कोर्ट में पेश किया गया जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

दक्षिण जिला पुलिस अधिकारियों के अनुसार सर्वोदय एनक्लेव में लूट की यह वारदात गत बृहस्पतिवार और शुक्रवार की मध्यरात्रि को हुई थी। आरोपी विजय मंडल पार्क की चहारदीवारी से सटे पेड़ पर चढ़कर बालकनी से घर में घुसा था। इन्होंने कटर का इस्तेमाल करके दरवाजे का ताला काटा और घर में घुस गए और चोरी की वारदात की। ब्यूरो

ट्रैफिक इंस्पेक्टर ने घायल की जान बचाई

नई दिल्ली। दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के एक इंस्पेक्टर की त्वरित कार्रवाई से सड़क हदासे में गंभीर रूप से घायल 40 वर्षीय व्यक्ति की जान बच गई। पीड़ित को समय से अस्पताल में भर्ती कराया तो उसकी जान बच गई।

यशपाल। संवाद

दिल्ली ट्रैफिक की नार्थन रेंज के पुलिस उपायुक्त राजीव अमबस्त ने बताया कि यह घटना 2 मई की देर रात की है। जब नॉर्दर्न रेंज के इंस्पेक्टर और नरेला सर्किल के टीआई यशपाल भाटी रात 10.30 से 11 बजे के बीच ड्यूटी पूरी करने के बाद अपने घर से लौट रहे थे और उन्होंने बुराड़ी फ्लाईओवर पर एक स्कूटी सवार को डिवाइडर से टकराने के बाद सड़क पर बेहोश देखा। घायल के सिर और चेहरे पर गंभीर चोटें आई थीं। इंस्पेक्टर भाटी ने सिपाही साहदेव के साथ तुरंत अपनी गाड़ी रोकी और एंबुलेंस का इंतजार किए बिना घायल को सिविल लाइंस स्थित ट्रॉमा सेंटर पहुंचाया। ब्यूरो

मीटर अपडेट कराने के नाम पर खाते से निकाले 20 लाख

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। शाहदरा जिले की साइबर थाना पुलिस ने बिजली मीटर अपडेट कराने के नाम पर 20 लाख रुपये से ज्यादा की ठगी करने वाले एक आरोपी धनंजय गोंड को गाजीपुर, यूपी से गिरफ्तार किया है। वह ठगी के एक मामले का मुख्य आरोपी है।

शाहदरा जिला पुलिस उपायुक्त राजेंद्र प्रसाद मीणा ने बताया कि यह मामला 8 मार्च, 2026 को उस समय सामने आया था जब शिकायतकर्ता मानसरोवर पार्क, शाहदरा, दिल्ली निवासी विनोद शर्मा रिपोर्ट की कि बीएसईएस के अधिकासी बनकर जालसाजों उसके साथ धोखाधड़ी की है।

पीड़ित को शुरू में उनके बिजली मीटर को अपडेट करने के बहाने फोन पे के माध्यम से 13 रुपये का मामूली भुगतान करने के लिए कहा था। इसके बाद उनके मोबाइल डिवाइस से छेड़छाड़ की गई, जिसके परिणामस्वरूप कई अनाधिकृत और बड़ी रकम के लेन-देन हुए। इसके बाद साइबर थाना पुलिस ने मामला दर्जकर जांच शुरू की। इस मामले में दो आरोपी कबीरपुर, फिरोजाबाद, यूपी निवासी शिव कुमार और धोंकेली, फिरोजाबाद यूपी निवासी अंशु कुमार को पहले ही गिरफ्तार किया गया। आरोपियों ने बताया था कि धोखाधड़ी से प्राप्त रकम को पैसे के लेन-देन का सुराग मिटाने के लिए सीएससी आईडी के माध्यम से भेजा गया था।

रोहिणी आरडब्ल्यूए ने जताया शोक

नई दिल्ली। चार मंजिला इमारत में लगी भीषण आग से 9 लोगों की मौत की खबर पर रोहिणी सेक्टर-2 और 18 आरडब्ल्यूए के ने दुख व्यक्त किया है और मृतकों के परिजनों के प्रति संवेदना प्रकट की है। आरडब्ल्यूए के प्रतिनिधियों ने कहा कि यह घटना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है और इससे सभी निवासी स्तब्ध हैं। पदाधिकारियों ने प्रशासन से मांग की है कि हादसे की पूरी जांच कराई जाए और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। संवाद

अजब-गजब | दिल्ली हाईकोर्ट ने जिला अदालत के फैसले में एआई के इस्तेमाल के दावे पर जताई चिंता

एआई से फैसला लिखने का दावा, हाईकोर्ट करेगा जांच

गौरव बाजपेई

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने अकासा एयर के उस गंभीर दावे पर संज्ञान लिया है, जिसमें कहा गया कि जिला अदालत का फैसला आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एआई टूल का उपयोग करके तैयार किया गया है।

न्यायमूर्ति प्रतिबा एम. सिंह और न्यायमूर्ति मधु जैन की खंडपीठ ने 30 अप्रैल को अंतरिम आदेश जारी करते हुए जिला अदालत के 24 फरवरी 2026 के फैसले पर रोक लगाई है। अदालत ने कहा कि फैसले की ड्राफ्टिंग शैली और सुप्रीम कोर्ट के फैसलों में गैर-मौजूद कानूनी प्रस्तावों का हवाला दिए जाने से प्रथम दृष्टया एआई सॉफ्टवेयर के इस्तेमाल का संकेत मिलता है।

अदालत ने अपने आदेश में स्पष्ट रूप से कहा कि प्रथम दृष्टया ऐसा लगता है कि कुछ एआई सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल हुआ है। हालांकि, इस चरण में निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। आगे जांच के बाद ही पता चलेगा कि जिला न्यायाधीश द्वारा एआई का इस्तेमाल हुआ या नहीं और यदि हुआ तो क्या फैसले की समुचित समीक्षा की गई या नहीं।

यह है मामला : एबीएस टूर एंड ट्रैवल्स ने अकासा एयर के खिलाफ मुकदमा दायर किया था। यात्री ने दिसंबर 2023-जनवरी 2024 के त्योहारी सीजन में दिल्ली-गोवा रूट पर 640 सीटें बुक की थीं। बाद में अकासा एयर ने बुकिंग रद्द कर दी। जिला अदालत (कॉमर्शियल) ने ट्रैवल एजेंट के पक्ष में फैसला देते हुए अकासा एयर को एक करोड़ आठ लाख अस्सी हजार रुपये चुकाने का आदेश दिया था। अकासा एयर ने हाईकोर्ट में अपील दायर कर कहा कि पूरा फैसला एआई से तैयार किया गया प्रतीत होता है।

इसके अलावा, टिकटों की पूरी राशि को लॉस ऑफ प्रॉफिट के रूप में देने का जिला अदालत का फैसला भी कानूनी रूप से गलत है। हाईकोर्ट ने अपील पर नोटिस जारी किया और फैसले पर रोक लगा दी। अदालत ने अकासा एयर को 30 मई 2026 तक 20 लाख जमा करने का निर्देश दिया है। मामले की अगली सुनवाई 20 अगस्त 2026 को होगी।

सांकेतिक

Medical Helpline
कैंसर अभिशाप नहीं, रोग है, निराश न हों
इलेक्ट्रो होम्योपैथी दवाओं से चिकित्सा सम्भव
डॉ. आर.के. गुप्ता
कैंसर रोग विशेषज्ञ
बी.ई.एम.एस., एम.डी., पीएच.डी., डी.लिट. (इलेक्ट्रो होम्योपैथी), भारत गौरव, हिन्द रत्न, अन्तर्राष्ट्रीय रत्न, बैस्ट कैंसर प्रेक्टीशनर ऑफ द वर्ल्ड, विश्व कैंसर सम्राट अवार्ड तथा गोल्ड मैडलों से सम्मानित

विकास इलेक्ट्रो होम्योपैथी क्लीनिक – कैंसर का निदान एवं चिकित्सा केन्द्र
पता–168, आवास विकास कॉलोनी, सासनी गेट, अलीगढ़, उ.प्र., भारत
मो.: 07060363535, 09319047859 कोई परामर्श शुल्क नहीं

इंदिरा IVF रवि वुमन्स हॉस्पिटल
अब सेक्टर–35 नोएडा में
नि:शुल्क
नि:संतानता परामर्श
सप्ताह के 7 दिन खुला

8826975080, 8585808073
ए–1 गोल्फ कोर्स रोड सेक्टर 35 (मोरना बस स्टैण्ड के पास)
RAVI HOSPITAL
Email : noida@ravihospital.org
आगरा । अलीगढ़ । फिरोजाबाद । नोएडा

गुप्त रोगी मिलें
नामर्दी, शीघ्रपतन, शुक्राणुओं की कमी
भारत प्रसिद्ध
गोल्ड मेडलिस्ट
डा. शेख
रोजाना मिलें – लाजपत नगर, नई दिल्ली
हर मंगलवार – सेक्टर 18 नोएडा
हर बुधवार – नीलम चौक, फरीदाबाद
हर इतवार – बस स्टैण्ड, गुरुग्राम
Call & Book Appointment
9837023223

प्रवाह

78 निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना : 18 अप्रैल 1948 • आगरा

लोकतंत्र में चुनाव हमें केवल अधिकारों की नहीं, बल्कि जिम्मेदारियों की भी याद दिलाते हैं। - रॉबर्ट एफ केनेडी

बदलते सियासी पदचिह्न

पश्चिम बंगाल, असम, तमिलनाडु, केरल व पुडुचेरी में विधानसभा चुनावों के नतीजे भारतीय राजनीति के नक्शे को फिर से आकार देने वाले तो हैं ही, इन्हें राष्ट्रीय राजनीतिक धाराओं के दिशासूचक के रूप में भी देखा जा सकता है, जिसमें भाजपा अपनी पैठ वहां तक बढ़ा रही है, जहां उसके राजनीतिक पदचिह्न अब तक नहीं पड़े थे, जबकि विपक्षी दलों के लिए अपनी रणनीतियों पर पुनर्विचार करने की जरूरत स्पष्ट दिख रही है। पश्चिम बंगाल को ही लें, जहां एक दशक पहले तक भाजपा हाशिये की पार्टी थी, पर 2016 की तुलना में उसके वोट प्रतिशत में करीब 35 फीसदी का भारी उछाल और पहली बार राज्य की सत्ता पर काबिज होना कभी वामपंथ और फिर तृणमूल के अभेद्य दुर्ग माने जाने वाले इस राज्य में उसकी वैचारिक स्वीकार्यता का ही प्रमाण है। ममता की हार के पीछे पंद्रह वर्षों का सत्ता विरोधी रुझान तो था ही, कानून-व्यवस्था की कमजोरी, महिलाओं की असुरक्षा, उद्योग धंधों का बंद होना और एक खास तबके के प्रति तुष्टिकरण की नीति भी मुख्य कारण रहे। लेकिन इसका श्रेय प्रधानमंत्री के नेतृत्व वाली भाजपा के उस माइक्रो मैनेजमेंट को भी जाता है, जिसकी बदौलत 2014 के बाद से पहले उसने उत्तर व मध्य भारत में अपने आधार को ताकत दी तथा अब वह पूर्वी व पूर्वोत्तर भारत में परिवर्तन का चेहरा बनकर उभर रही है। पश्चिम बंगाल में अभूतपूर्व जीत और असम में लगातार तीसरी बार वापसी भाजपा को एक तरह से मनोवैज्ञानिक बढ़त दिलाती है, जिसने यह मिथक तोड़ दिया कि वह पूर्वी भारत के सांस्कृतिक-राजनीतिक ढांचे में स्थायी जगह नहीं बना सकती। हालांकि, असम में मिली जीत का श्रेय हिमंत बिस्वा सरमा को भी जाता है, जिनकी पहचान, सुरक्षा, विकास और क्षेत्रीय अस्मिता आधारित रणनीति ने विपक्ष को हाशिये पर धकेल दिया। केरल में हालांकि कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ गठबंधन को जीत मिली है, पर चाहे तमिलनाडु हो, महाराष्ट्र हो, उत्तर प्रदेश हो या फिर बिहार, सभी जगहों पर क्षेत्रीय सहयोगियों पर उसकी निर्भरता देख यही लगता है कि वह अपने पुराने राजनीतिक वैभव का अक्स मात्र ही रह गई है। तमिलनाडु में द्रमुक और असम में कांग्रेस का प्रदर्शन विपक्षी दलों की रणनीतियों पर प्रश्नचिह्न लगाता है, जहां

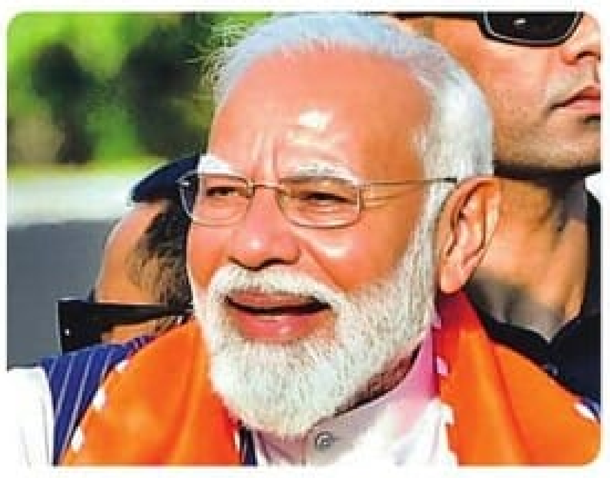

इनके नेतृत्वकर्ता ही अपनी सीट नहीं बचा सके। ये नतीजे भाजपा कार्यकर्ताओं का मनोबल तो बढ़ाएंगे ही, विपक्ष को भी आत्ममंथन के लिए प्रेरित करेंगे। इसका फायदा भाजपा को अगले वर्ष यूपी, उत्तराखंड और पंजाब में होने वाले विधानसभा चुनावों में तो मिलेगा ही, इस जीत की गूंज राष्ट्रीय राजनीति में भी यकीनन सुनाई देगी।

इस हार की गूंज

ममता बनर्जी की पार्टी और एमके स्टालिन की हार इंडिया गठबंधन के लिए बहुत बड़ा झटका है। इसके दो सबसे मजबूत स्तंभ ढह गए हैं, जिससे विपक्ष की पूरी इमारत कमजोर और डगमगा गई है। जाहिर है, अगले साल होने वाले उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में इसका असर जरूर दिखेगा।

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों में भाजपा की शानदार जीत भारतीय राजनीति में एक जबर्दस्त बदलाव का संकेत है। यह न केवल तृणमूल कांग्रेस नेता ममता बनर्जी, जो आज देश की सबसे कद्दावर महिला नेता हैं, की विदाई का प्रतीक है, बल्कि यह संभवतः क्षेत्रीय दलों और उनकी उप-राष्ट्रवाद तथा स्थानीय सांस्कृतिक पहचान की राजनीति के अंत की शुरुआत भी है। इसलिए, पश्चिम बंगाल का 'भगवाकरण' भाजपा के प्रभाव क्षेत्र में एक और राज्य के जुड़ने से कहीं ज्यादा है। यह एक धार्मिक-राजनीतिक विचारधारा के रूप में 'हिंदुत्व' की बढ़ती लोकप्रियता को दर्शाता है।

आरती आर जेरथ
वरिष्ठ पत्रकार

ममता बनर्जी की पार्टी की हार, जिसे तमिलनाडु के कद्दावर क्षेत्रीय नेता एमके स्टालिन और द्रमुक की हार के साथ मिलाकर देखा जाए, इंडिया गठबंधन के लिए एक बहुत बड़ा झटका है। इसके दो सबसे मजबूत स्तंभ ढह गए हैं, जिससे विपक्ष की पूरी इमारत कमजोर और डगमगाती हुई रह गई है। जाहिर है, अगले साल उत्तर प्रदेश में होने वाले विधानसभा चुनावों में इसका असर जरूर दिखेगा, जहां 'इंडिया' गठबंधन के एक और अहम स्तंभ (अखिलेश यादव और उनकी समाजवादी पार्टी) के सामने अब एक मुश्किल चुनौती है: भाजपा के खिलाफ लड़ाई में अपने कार्यकर्ताओं के गिरते मनोबल को बढ़ाना।

भले ही इस बात को लेकर सवाल उठते रहेंगे कि चुनाव आयोग द्वारा मतदाता सूचियों की जल्दबाजी में की गई 'विशेष गहन समीक्षा' (एसआईआर) और 2.5 लाख अर्धसैनिक बलों की तैनाती जैसे सरकारी हस्तक्षेपों का चुनाव परिणामों पर क्या असर पड़ा, लेकिन एक ऐसे राज्य में, जहां लंबे समय से वामपंथी राजनीति का दबदबा रहा है (पहले माकपा और फिर बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस का), यह पहली बार होगा, जब भाजपा का कोई मुख्यमंत्री बहुमत वाली सरकार की कमान संभालेगा। एसआईआर के दौरान लगभग 90 लाख नाम हटा दिए गए थे, जिनमें से 27 लाख नामों को 'जांच के अधीन' सूची में डाल दिया गया था, क्योंकि उन्होंने सत्यापन के लिए जो दस्तावेज जमा किए थे, उनमें तकनीकी त्रुटियां थीं। पश्चिम बंगाल में चुनावी प्रक्रिया को लेकर जो विवाद लगातार बने रहे हैं, उनका कोई संक्षिप्त जवाब नहीं है। हालांकि, दो बातें साफ हैं। पहली यह कि ममता ने भाजपा के हर हमले का जिस जोरदार और जोशीले अंदाज में मुकाबला किया, वह तारीफ के काबिल है। यहां तक कि उनके आलोचकों को भी मानना पड़ेगा कि उन्होंने अपने 'बंगाल की शेरनी' उपनाम को पूरी तरह से सही साबित किया। उन्होंने यह दिखा दिया कि वह ऐसी इन्सान नहीं हैं, जो आसानी से किसी के आगे झुक जाएं। आखिरकार, उन्होंने पश्चिम बंगाल की सड़कों पर कई दशकों तक वाम मोर्चा की सरकार से लोहा लेते हुए अपनी पहचान बनाई है।

दूसरी बात यह है कि 2021 के चुनावों में उनसे करारी हार मिलने के बाद, भाजपा ने उनकी हार की पटकथा बेहद बारीकी से तैयार की। पार्टी ने जमीनी स्तर पर मतदान के रुझान का विस्तृत अध्ययन करने के लिए काम शुरू कर दिया, जिसमें आरएसएस ने भी मदद की। हर निर्वाचन क्षेत्र का नक्शा तैयार किया गया, कमजोर क्षेत्रों की पहचान की गई, लोगों के मिजाज का लगातार सर्वेक्षण किया गया और एक विस्तृत रूपरेखा तैयार की गई। भाजपा ने दो ऐसे कारकों का लाभ उठाया, जो ऊपरी तौर पर स्पष्ट नहीं थे। पहला, तृणमूल कांग्रेस के प्रति बढ़ता असंतोष; और दूसरा, वह कार्यप्रणाली, जिसे तृणमूल ने वामपंथियों से हूबहू अपना लिया था, यानी फुटबाल क्लबों, सामाजिक और सांस्कृतिक समितियों में बाहुबलियों के स्थानीय दस्तों को पालना-पोसना।

दिलचस्प बात है कि जहां एक ओर ममता खुद बेहद लोकप्रिय बनी हुई हैं, खासकर महिलाओं के बीच, वहीं मौजूदा विधायकों और पूरी सरकार के खिलाफ सत्ता-विरोधी लहर साफ तौर पर मौजूद थी। इसे राज्य के बाहर से आए पत्रकारों ने तो भांप लिया, लेकिन बंगाल में रहने वाले इसे समझने से चूक गए। हालांकि, ममता ने सत्ता-विरोधी लहर का मुकाबला करने के लिए अपने मौजूदा विधायकों में से लगभग 40 फीसदी को बदल दिया था, लेकिन भाजपा ने लोगों की नाराजगी को पहले ही भांप लिया था तथा उसे और हवा दी। दूसरी बात थी बंगाली हिंदुओं में छिपा हुआ इस्लामोफोबिया। भाजपा घुसपैठियों (बांग्लादेशी मुसलमानों) के बारे में लगातार अभियान चलाकर बता रही थी कि किस तरह वे ममता की मदद से पश्चिम बंगाल की आबादी का ढांचा बदल रहे हैं। इस अभियान ने न केवल बंगाली 'भद्रलोक' को प्रभावित किया, जो उदारवादी परंपराओं को बहुत पहले ही भुला चुके हैं, बल्कि उन महत्वाकांक्षी ग्रामीणों को भी अपनी ओर खींचा, जो बढ़ती कीमतों, बेरोजगारी और विकास के अवसरों की कमी के बोझ तले दबे थे। ये ग्रामीण लोग अपनी असंतुष्टि के लिए मोदी सरकार के बजाय, तृणमूल सरकार को जिम्मेदार ठहराते नजर आए।

बंगाल में भाजपा की शानदार जीत का श्रेय काफी हद तक केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह को जाता है, जो लगभग एक महीने तक पश्चिम बंगाल में ही डटे रहे और चुनावी गतिविधियों पर नजर रखते रहे। भाजपा के बारे में यह कहा जाता है कि एक बार किसी राज्य पर पूरी तरह से नियंत्रण हासिल कर लेने के बाद, वह उसे कभी नहीं गंवाती।

आज, भाजपा के प्रभुत्व का दायरा पश्चिम में महाराष्ट्र और गुजरात से लेकर, उत्तरी भारत के मैदानी इलाकों से होते हुए पूर्व में पश्चिम बंगाल और असम तक, और देश के सबसे पूर्वोत्तर छोर तक फैला हुआ है, जहां वह स्थानीय पार्टियों के साथ गठबंधन सरकारों में सत्ता में है। इससे उसे अपनी पूरी ताकत दक्षिणी राज्यों को जीतने पर लगाने की आजादी मिल जाती है। इन पांच राज्यों में से तीन (केरल, तेलंगाना और कर्नाटक) में उसका मुख्य मुकाबला कांग्रेस से है, जो उत्तर भारत में 'भगवा लहर' को रोकने में ज्यादातर नाकाम ही रही है। पश्चिम बंगाल में 'भगवा लहर' इस बात को रेखांकित करती है कि भारत बदल रहा है। यहां के सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक परिदृश्य में एक समतलीकरण देखने को मिल रहा है, जो भाजपा की हिंदुत्व की राजनीति को बल प्रदान करता है।

हर लोकतंत्र को फलने-फूलने और मजबूत बने रहने के लिए एक विपक्ष की जरूरत होती है। बाजार के विकास और एक जैसी जन-संस्कृति के फैलाव से जो नया भारत उभर रहा है, उसे शायद पारंपरिक पार्टियों से बिल्कुल अलग तरह के विपक्ष की जरूरत है। मौजूदा विपक्षी पार्टियां भाजपा की जबर्दस्त चुनावी मशीनरी के आगे ताश के पत्तों की तरह ढहती नजर आ रही हैं।

पूर्वोत्तर

असम के चाणक्य

■ शेखर अय्यर

हिमंत बिस्वा सरमा की सबसे बड़ी उपलब्धि असम के लोगों को यह विश्वास दिलाना रही कि बांग्लादेशी अवैध प्रवासन जैसी जटिल समस्या का समाधान केवल भाजपा ही कर सकती है।

असम विधानसभा चुनाव के नतीजों का सीधा श्रेय कांग्रेस के पूर्व नेता और दो बार के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा को जाता है। अपने नेतृत्व के खास अंदाज और राजनीतिक सूझबूझ के दम पर उन्होंने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को लगातार तीसरी बार जीत दिलाई। इस जीत के साथ सरमा अब एक राष्ट्रीय स्तर के नेता और प्रभावशाली चुनावी रणनीतिकार के रूप में उभरते दिखाई दे रहे हैं।

सरमा की सबसे बड़ी राजनीतिक सफलता यह रही कि उन्होंने असम के बहुसंख्यक समाज को यह विश्वास दिलाया कि बांग्लादेश से होने वाले अवैध प्रवासन जैसी पुरानी और जटिल समस्या का समाधान केवल भाजपा ही कर सकती है। वहीं, कांग्रेस ने इस मुद्दे को गंभीरता से नहीं लिया। इसी कारण भाजपा ने 2021 के अपने 75 सीटों के आंकड़े को पार करते हुए लगभग 44.51 प्रतिशत वोट हासिल किए। सरमा ने यह सुनिश्चित किया कि जरूरतमंदों तक सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे पहुंचे। उन्होंने खुद को एक सख्त और निर्णायक नेता के रूप में स्थापित किया। साथ ही, वह मोदी सरकार के वादों को जमीन पर उतारने में सक्षम रहे। हालांकि, उनके विरोधी उन पर असम में बांग्लादेशी मुसलमानों के लिए प्रयुक्त शब्द 'मियां' के खिलाफ सख्त रुख अपनाने का आरोप लगाते रहे। पर, कांग्रेस यह समझने में नाकाम रही कि असम की बहुसंख्यक आबादी लगातार हो रहे प्रवासन को लेकर चिंतित थी। सरमा ने 34 प्रतिशत मुस्लिम आबादी वाले इस राज्य में हिंदू वोटों को मजबूती से अपने पक्ष में संगठित किया। इसके साथ ही, 2023 के परिसीमन ने भी भाजपा को फायदा पहुंचाया। एक कुशल रणनीतिकार के रूप में सरमा ने समय-समय पर अपने राजनीतिक समीकरण बदले। इसके अलावा, बोडोलैंड पीपल्स फ्रंट (बीपीएफ), जो 2021 में कांग्रेस के नेतृत्व वाले 'महाजोत' का हिस्सा था, एनडीए के साथ आ गया।

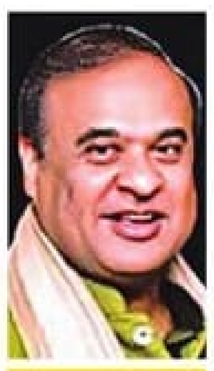

कांग्रेस के मुख्यमंत्री पद का चेहरा गौरव गोगोई, जो खुद अपनी सीट नहीं बचा सके और 23,000 मतों से हार गए, पर राहुल गांधी ने अधिक भरोसा जताया। नतीजतन, पार्टी के कई वरिष्ठ नेता खुद को नजरअंदाज महसूस करने लगे और पार्टी में नाराजगी बढ़ने लगी। कई जगहों पर कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों के बीच सीधा मुकाबला देखने को मिला, जिसने गठबंधन की रणनीति पर सवाल खड़े किए।

2021 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने आठ दलों के गठबंधन 'महाजोत' का नेतृत्व किया था, जिसने 43.68 प्रतिशत वोट हासिल कर 50 सीटें जीती थीं। इनमें से कांग्रेस ने 29.67 प्रतिशत वोट शेयर के साथ 29 सीटें अपने नाम की थीं। 2021 में विपक्षी गठबंधन की ताकत दो अहम पार्टियों-बीपीएफ और बदरूद्दीन अजमल की अगुवाई वाली ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (एआईयूडीएफ)-से भी बढ़ी थी। पर इस बार तस्वीर बदल गई। बीपीएफ अब एनडीए के साथ है, जबकि एआईयूडीएफ अकेले मैदान में उतरी, क्योंकि कांग्रेस ने उसके साथ गठबंधन करने से साफ इन्कार कर दिया। नतीजों में भी यह असर साफ दिखा।

हर लड़ाई ताकत से नहीं, बल्कि दिमाग से जीती जाती है।

नए नायक का उदय

तमिलनाडु में दशकों से सत्ता में रहे दोनों द्रविड़ राजनीतिक दलों की दीवार को भेदकर अभिनेता विजय ने नायक के रूप में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज की है। उनके नेतृत्व वाली पार्टी 'तमिलगा वेत्री कड़गम' (टीवीके) ने द्रमुक को पूरी तरह से खत्म करने का जो प्रण किया था, उसे प्रभावी ढंग से करके भी दिखाया।

सोमवार, चार मई का दिन भारतीय राजनीति के इतिहास में एक स्वर्णिम दिवस के रूप में दर्ज होगा। एक तरफ जहां पश्चिम बंगाल में भाजपा ने तृणमूल कांग्रेस को शिकस्त देकर पहली बार अपनी जीत दर्ज कर इतिहास रचा है, वहीं तमिलनाडु में दशकों से सत्ता में रहे दोनों द्रविड़ राजनीतिक दलों की दीवार को भेदकर अभिनेता विजय ने नायक के रूप में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज की है। केरल में कांग्रेस के नेतृत्व में यूडीएफ, तो भाजपा के नेतृत्व में एनडीए ने असम व पुडुचेरी में अपना परचम लहराया है।

दक्षिण भारतीय सुपरस्टार जोसेफ विजय ने तमिलनाडु विधानसभा चुनाव में अपने प्रदर्शन से राजनीतिक पंडितों तक को हैरान कर दिया है। फिल्मों में सफलता के बाद राजनीति में प्रवेश करने वाले विजय, जिन्हें उनके प्रशंसक 'थलापति' कहते हैं, हिंदी भाषी इलाकों में भी काफी लोकप्रिय हैं। 22 जून, 1974 को जन्मे विजय के पिता एसए चंद्रशेखर तमिल सिनेमा के प्रतिष्ठित निर्देशक रहे हैं, तो मां शोभा एक गायिका थीं। फिल्मी माहौल में जन्मे और पले-बढ़े विजय की जिंदगी किसी फिल्मी कहानी से कम दिलचस्प नहीं है। स्टारडम हासिल करने के लिए उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा। फिर, राजनीति में उतरे, तो नतीजा सबके सामने है।

आर राजगोपालन

विजय के नेतृत्व वाली पार्टी 'तमिलगा वेत्री कड़गम' (टीवीके) ने द्रमुक को जड़ से खत्म करने का जो प्रण किया था, उसे प्रभावी ढंग से पूरा करके भी दिखाया। विजय के गुस्से की वजह थी कि द्रमुक ने टीवीके को कुचलने की कोशिश की थी। पहला कारण था करूर में हुई भगदड़। दूसरा, 'जन नायगन' फिल्म की रिलीज को रोकना। और तीसरा, पत्नी संगीता का विजय से अलग हो जाना। संगीता ने तलाक के लिए अर्जी दी थी। वह हलफनामा लीक हो गया था। विजय को शक है कि इन सबके पीछे द्रमुक का ही हाथ था।

तमिलनाडु में भ्रष्टाचार, नशे की समस्या, हत्या, बलात्कार और कानून-व्यवस्था की विफलता ने सत्तारूढ़ द्रमुक को सत्ता से बेदखल कर दिया। मुख्यमंत्री एमके स्टालिन का खराब शासन और उनके दामाद की लूट-खसोट बेनकाब हो गई। इसके अलावा, वीसीके, डीएमएफके और एमडीएमके जैसी क्षेत्रीय पार्टियों के प्रभाव ने भी द्रमुक के वोट प्रतिशत को कम किया।

सनातन धर्म को 'डेंगू' और 'कोरोना' बताने वाले उदयनिधि के नफरती बयान पर गृहमंत्री अमित शाह की जोरदार प्रतिक्रिया की वजह से तमिलनाडु और पुडुचेरी में वोटों का ध्रुवीकरण हुआ। द्रमुक के खिलाफ सत्ता-विरोधी लहर भी जुड़ गई है। स्टालिन ने मोदी के खिलाफ नकारात्मक चुनावी अभियान चलाया, लेकिन अपनी सीट पर भी हार गए।

पुडुचेरी में राजग ने अच्छा प्रदर्शन किया है। भाजपा का गठबंधन एनआर कांग्रेस के साथ था, जिसने पिछले पांच वर्षों में सबसे बेहतरीन प्रदर्शन किया था। मतदाताओं ने राजग को जनादेश दिया है। चार मई का फैसला तमिलनाडु के 39 सांसदों के लिए भी एक जनमत संग्रह है कि उन्होंने आठ करोड़ तमिल लोगों की किस तरह से सेवा की।

खुद अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी

प. बंगाल में चुनाव प्रचार के दूसरे चरण में राहुल गांधी द्वारा ममता बनर्जी पर किया गया हमला इंडिया गठबंधन के लिए आत्मघाती साबित हुआ। उसने भाजपा विरोधी वोटों को विभाजित कर दिया, जिसका सीधा लाभ भाजपा को मिला।

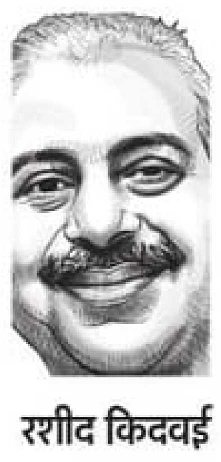

रशीद किदवई

पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के परिणाम कांग्रेस के लिए किसी बड़े राजनीतिक सदमे से कम नहीं हैं। केरल को छोड़कर, जहां वाम मोर्चे के खिलाफ दस साल की एंटी-इनकंबेंसी के चलते कांग्रेसनीत यूडीएफ की जीत पहले से ही तय मानी जा रही थी, शेष चार राज्यों के नतीजों ने पार्टी की सांगठनिक कमजोरियों की पोल खोलकर रख दी है। इन नतीजों ने साफ कर दिया है कि कांग्रेस न तो अपनी पुरानी गलतियों से सबक ले रही है और न ही जोखिम उठाकर नई रणनीति बनाने का साहस दिखा पा रही है। यह न केवल कांग्रेस, बल्कि पूरे इंडिया ब्लॉक के लिए करारा झटका है, जिससे उबरना उसके लिए काफी मुश्किल होगा।

पश्चिम बंगाल और असम में कांग्रेस ने जैसा प्रदर्शन किया, वह काफी हद तक अपेक्षित भी था, लेकिन तमिलनाडु के नतीजों ने कांग्रेस नेतृत्व की भारी रणनीतिक खामियों को उजागर कर दिया है। अचरज तो इस बात को लेकर है कि पार्टी नेतृत्व राज्य में द्रमुक के खिलाफ पनप रहे सत्ता विरोधी रुझान को भांपने में हर स्तर पर विफल रहा। कांग्रेस के आंतरिक सर्वे भी राज्य में अभिनेता विजय की नई पार्टी 'तमिलगा वेत्री कड़गम' (टीवीके) के एक मजबूत ताकत के रूप में उभरने के संकेत दे रहे थे। कांग्रेस के पास टीवीके के साथ गठबंधन करने का तब एक सुनहरा अवसर भी था, जब खुद विजय के पिता एसए चंद्रशेखर ने साल की शुरुआत में स्वयं गठबंधन करने का प्रस्ताव दिया था।

विजय की पार्टी के साथ चुनावी तालमेल करने की जोरदार पैरवी करने वाले कांग्रेस नेता प्रवीण चक्रवर्ती ने चुनाव नतीजों के तुरंत बाद एक टीवी चैनल पर कहा भी कि हमने राज्य में एक बड़ा मौका गंवा दिया। उनके मुताबिक, अगर राज्य में कांग्रेस और टीवीके के बीच गठबंधन होता, तो राहुल गांधी और विजय की जोड़ी राज्य में दो-तिहाई

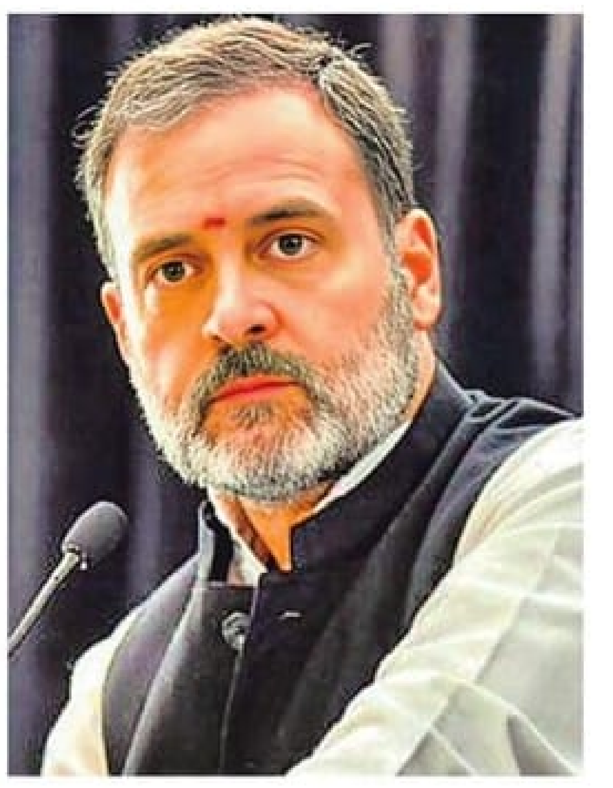

बहुमत के साथ सत्ता में आती। बकौल चक्रवर्ती, राज्य के युवा मतदाता बदलाव चाहते थे। ज्योति मणि और मणिकम टैगोर जैसे युवा कांग्रेसी सांसद भी पुराने गठबंधन को छोड़कर टीवीके के साथ जाने के पक्ष में थे। लेकिन पार्टी के वरिष्ठ नेता पुरानी वफादारी पर अड़ गए। राहुल गांधी और केंद्रीय नेतृत्व ने भी पी चिदंबरम जैसे कुछ दिग्गज कांग्रेस नेताओं की सलाह को तरजीह दी और टीवीके के साथ गठबंधन करने का साहस नहीं दिखा पाए।

असम में मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा के प्रखर हिंदुत्ववादी एजेंडे का मुकाबला करना कांग्रेस के लिए पहले से ही आसान नहीं था, लेकिन पार्टी वहां कुछ बेहतर करने की अपेक्षा तो रख सकती थी। किंतु, समस्या यह थी कि वहां भाजपा से लड़ने के बजाय पार्टी के वरिष्ठ नेता आपस में ही सिर-फुटव्वल में लगे रहे। किसी राज्य में चुनावी सफलता के लिए प्रदेश इकाई में जिस तालमेल की दरकार होती है, वह असम में गायब था। पूरे चुनाव प्रचार के दौरान कांग्रेस के राज्य प्रभारी भंवर जितेंद्र सिंह और प्रदेश अध्यक्ष गौरव गोगोई के बीच एक तरह से संवादहीनता की स्थिति बनी रही। केंद्रीय नेतृत्व ने भी समय रहते दखल नहीं दिया, मानो उसने उस नियति को पहले ही स्वीकार कर लिया, जो आज ईवीएम खुलने के बाद सामने आई है।

वहीं पश्चिम बंगाल में चुनाव प्रचार के दूसरे चरण में राहुल गांधी द्वारा ममता बनर्जी पर किया गया सीधा हमला इंडिया गठबंधन के लिए आत्मघाती साबित हुआ। ममता की तीखी आलोचना ने भाजपा विरोधी वोटों को विभाजित कर दिया, जिसका सीधा लाभ भाजपा को मिला। हालांकि, ममता की हार का श्रेय भाजपा के सुनियोजित चुनावी प्रबंधन को ज्यादा दिया जाना चाहिए, लेकिन कांग्रेस की रणनीति ने इस पराजय को और विराट बना दिया। लोकसभा चुनावों में कांग्रेस और इंडिया गठबंधन ने जो धाक जमाई थी, वह अब दो साल के भीतर ही खत्म-सी होती नजर आ रही है। दोनों एक बार फिर सिफर पर जा खड़े हुए हैं। भाजपा ने हिंदुत्व का जो नैरेशन गढ़ लिया है, उसकी कोई प्रभावी काट किसी भी विपक्षी दल के पास दिखाई नहीं देती। तृणमूल और द्रमुक की इस जबर्दस्त हार के बाद विपक्ष की रही-सही उम्मीद भी चली गई है।

अगले साल की शुरुआत में उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और पंजाब जैसे राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण राज्यों में चुनाव होने हैं। उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड भाजपा के लिए हिंदुत्व की सफल प्रयोगशालाएं रही हैं, जहां यह कार्ड अब और अधिक आक्रामकता के साथ खेला जाएगा। ऐसे में, टूटे हुए मनोबल के साथ कांग्रेस और उसके सहयोगी दल भाजपा की मशीनरी का मुकाबला कैसे करेंगे, यह एक बड़ा यक्ष प्रश्न है।

edit@amarujala.com

चुनावी नतीजों ने बाजार को दी राहत अब तेल, रुपया व मानसून लेंगे परीक्षा

दिन में 997 अंक उछल गया था सेंसेक्स, बाद में मुनाफावसूली का दिखा असर

बोनस डेस्क

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल समेत पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के नतीजे बाजार की उम्मीदों के अनुरूप रहे। इसलिए, नतीजों ने सोमवार को शेयर बाजार में तेजी की कोई नई कहानी नहीं लिखी, बल्कि अनिश्चितता का एक पर्दा भर हटाया। इससे दिन के कारोबार में 997.25 अंक की बढ़त बनाने वाला सेंसेक्स ऊपरी स्तर पर मुनाफावसूली के दबाव से अंत में 355.90 अंक उछलकर 77,269.40 पर बंद हुआ। निफ्टी 121.75 अंक चढ़कर 24,119.30 पर बंद हुआ। मिडकैप और स्मॉलकैप सूचकांक भी क्रमशः 0.63 फीसदी एवं 0.70 फीसदी बढ़त में रहे।

बाजार की भाषा में यह डिस्काउंटेड इवेंट था। यानी राजनीतिक तस्वीर का बड़ा हिस्सा पहले ही शेयरों के भाव में शामिल हो चुका था। यही वजह है कि नतीजे बाजार में बड़ा जोश भी नहीं भर सके। पश्चिम बंगाल में भाजपा की मजबूती जैसे संकेत बाजार के लिए सहज रहे। वहीं, तमिलनाडु में विजय की पार्टी का उभार राजनीतिक रूप से दिलचस्प जरूर है, लेकिन फिलहाल शेयर बाजार की कमाई, मार्जिन या पूंजी प्रवाह से उसका सीधा रिश्ता नहीं दिखता। **सेंसेक्स की 30 में से 22 कंपनियों के शेयर 5.30 फीसदी तक बढ़त में रहे।**

77,269.40 पर सेंसेक्स बंद 355.9 अंक चढ़ा

121.75 अंक उछला निफ्टी

2,835.62 करोड़ के शेयर खरीदे विदेशी निवेशकों ने

3.95 लाख करोड़ बढ़ी निवेशकों की संपत्ति

सेंसेक्स के टॉप-5 गेनर

अदाणी पोर्ट्स	5.30 फीसदी
एचयूएल	2.60 फीसदी
रिलायंस	2.24 फीसदी
एलएंडटी	2.18 फीसदी
इटरनल	2.09 फीसदी

इंडेक्स में भी दिखी बढ़त

रियल्टी	2.51 फीसदी
हॉस्पिटैलिटी	2.51 फीसदी
सर्विसेज	1.94 फीसदी
इंडस्ट्रियल्स	1.27 फीसदी
मेटल	0.84 फीसदी

निवेशक क्या करें...अभी खुलकर खरीदारी से बचें

रिसर्च फर्म कमोडिटी समाचार के सीनियर रिसर्च एनालिस्ट राजेश शर्मा ने कहा, चुनावी नतीजों को खरीदारी का खुला निमंत्रण मानना जल्दबाजी होगी। मजबूत कंपनियों के शेयर घबराकर न बेचें। नई खरीदारी चरणबद्ध तरीके से चुनिंदा कंपनियों में करें। तेल-संवेदनशील और महंगे शेयरों में सावधानी बरतना बेहतर है। ग्रामीण मांग से जुड़े शेयरों में मानसून की प्रगति देखकर ही दांव लगाएं।

पांच बड़े संकेतकों पर टिकेगा बाजार

चुनावी नतीजों के बाद बाजार अब पांच बड़े संकेतकों पर टिकेगा...कंपनियों के तिमाही नतीजे, कच्चा तेल, रुपया, विदेशी निवेशकों का रुख और मानसून।

- बाजार आने वाले दिनों में सूचकांक से ज्यादा कंपनियों की बैलेंस शीट और कमाई की गुणवत्ता पर नजर रखेगा।
- भारत के लिए महंगा तेल सिर्फ पेट्रोल-डीजल की कहानी नहीं है। यह आयात बिल बढ़ाता है, महंगाई को हवा देता है, चालू खाते पर दबाव डालता है और रुपये को कमजोर करता है।
- सोमवार को रुपया 95 के पार फिसल गया। रुपया और तेल मिलकर बाजार को यह याद दिला रहे हैं कि भारत को सबसे बड़ी परीक्षा अब बाहरी मोर्चे पर देनी होगी।
- कमजोर बारिश का असर सिर्फ खेत तक सीमित नहीं रहता। यह ग्रामीण मांग, महंगाई, ब्याज कटौती, एफएमसीजी, ट्रैक्टर व दोपहिया बिक्री, उर्वरक जैसे क्षेत्रों पर भी असर डालता है।

रिकॉर्ड गिरावट...अब 95 रुपये का हो गया एक डॉलर

ईरान युद्ध के बीच तेल की कीमतों में उछाल, विदेशी पूंजी निकासी और मजबूत डॉलर से रुपये पर बढ़ा दबाव

नई दिल्ली। रुपया सोमवार को डॉलर के मुकाबले 39 पैसे टूटकर पहली बार 95 के स्तर से नीचे 95.23 पर बंद हुआ। रुपये की गिरावट के पीछे तीन बड़े कारण हैं। पहला, पश्चिम एशिया के तनाव ने कच्चे तेल को फिर महंगा कर दिया है। भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए बड़े पैमाने पर आयात पर निर्भर है, इसलिए तेल महंगा होते ही डॉलर की मांग बढ़ती है। दूसरा, विदेशी निवेशकों की निकासी जारी है। इस साल अब तक विदेशी निवेशक भारतीय शेयरों और बॉन्ड से करीब 20 अरब डॉलर निकाल चुके हैं। तीसरा, मजबूत डॉलर और वैश्विक जोखिम से उभरते बाजारों की मुद्राओं पर दबाव है। इस गिरावट के साथ रुपया इस साल अब तक 5.5 फीसदी टूट चुका है। इस गिरावट से पहले रुपया 29 अप्रैल को 94.88 के सार्वकालिक निचले स्तर पर बंद हुआ था। ■ बोनस डेस्क

■ ***एक अनुमान के मुताबिक, रुपये की विनिमय दर में 10 फीसदी गिरावट थोक महंगाई को करीब एक फीसदी अंक तक तक बढ़ा सकती है।*** *आगे रुपये की चाल कच्चा तेल, विदेशी निवेश, आरबीआई के हस्तक्षेप और डॉलर इंडेक्स से तय होगी। फिलहाल संकेत साफ है...रुपये की गिरावट बाजार की नहीं, घरेलू बजट की भी चिंता है।*

चांदी की कीमत 6,800 रुपये बढ़ी, सोने में 2,000 गिरावट

नई दिल्ली। विदेशी बाजारों में कीमतों पर दबाव के बावजूद आभूषण विक्रेताओं और स्टॉकिस्टों की मजबूत खरीदारी से सोमवार को दिल्ली सराफा बाजार में चांदी 6,800 रुपये महंगी होकर 2,49,500 रुपये प्रति किलोग्राम के भाव पहुंच गई। हालांकि, सोना 2,000 रुपये सस्ता होकर 1,52,800 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव बंद हुआ। एचडीएफसी सिक्योरिटीज में वरिष्ठ विश्लेषक (जिंस) सौमिल गांधी ने कहा, ऊर्जा की ऊंची कीमतों और अमेरिका-ईरान बातचीत को लेकर जारी अनिश्चितता के बीच सोने की कीमत में गिरावट आई। वैश्विक बाजार में सोना 49.27 टूटकर 4,565.68 डॉलर प्रति औंस रहा। एजेंसी

लगातार तीसरे महीने तेल उत्पादन बढ़ाएगा ओपेक

संयुक्त अरब अमीरात के बाहर होने की घोषणा के बाद ओपेक प्लस देशों की पहली बैठक

नई दिल्ली। वैश्विक क्रूड बाजार में मचे उथल-पुथल और पश्चिम एशिया में जारी युद्ध के बीच तेल उत्पादक देशों के समूह ओपेक प्लस ने रविवार को कच्चे तेल के उत्पादन में मामूली बढ़ोतरी करने पर सहमति जताई है। यह लगातार तीसरा महीना है, जब समूह ने उत्पादन कोटा बढ़ाने का निर्णय लिया है। दिलचस्प बात यह है कि इस सप्ताह संयुक्त अरब अमीरात के समूह से बाहर होने के बावजूद ओपेक प्लस ने अपनी विस्तार योजनाओं को जारी रखा है।

ओपेक प्लस का यह कदम वैश्विक बाजार को संदेश देने की कोशिश है कि वह आपूर्ति बढ़ाने के लिए तैयार है, लेकिन वास्तविक राहत तभी मिलेगी, जब युद्ध के बादल छटेंगे और होर्मुज जलडमरूमध्य का रास्ता खुलेगा।

समूह के सात प्रमुख देश जून में तेल उत्पादन लक्ष्य को 1,88,000 बैरल प्रतिदिन बढ़ाने पर सैद्धांतिक रूप से सहमत हुए हैं। इस बैठक में सऊदी अरब, रूस, इराक, कुवैत, अल्जीरिया, कजाखस्तान और ओमान शामिल हुए। बाजार विशेषज्ञों एवं तेल व्यापारियों का मानना है कि उत्पादन बढ़ाने का यह फैसला फिलहाल काफी हद तक कागजी या सांकेतिक ही रहेगा।

उधर, आपूर्ति में बाधा के कारण कच्चे तेल की कीमतें पिछले सप्ताह बढ़कर 126 डॉलर प्रति बैरल के चार साल के उच्च स्तर को पार कर गई थीं। विश्लेषकों ने चेतावनी दी है कि अगले एक से दो महीनों में दुनियाभर में विमान ईंधन की भारी कमी हो सकती है और वैश्विक महंगाई में तेज उछाल आ सकता है। ■ बोनस डेस्क

न्यूज डायरी

अंबुजा सीमेंट दो व भेल 1.40 रुपये देगी लाभांश

नई दिल्ली। अदाणी समूह की कंपनी अंबुजा सीमेंट्स लि. का वित्त वर्ष 2025-26 की मार्च तिमाही में शुद्ध लाभ 37.43 फीसदी बढ़कर 1,857.43 करोड़ रुपये पहुंच गया। कंपनी के बोर्ड ने 2025-26 के लिए 100 फीसदी यानी दो रुपये के अंकित मूल्य पर प्रति शेयर दो रुपये लाभांश देने की सिफारिश की है। **उधर, भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लि. (भेल)** का मुनाफा मार्च तिमाही में 2.5 गुना से अधिक बढ़ाकर 1,290.47 करोड़ हो गया है। कंपनी ने 1.40 रुपये प्रति शेयर के अंतिम लाभांश को मंजूरी दी है। एजेंसी

जेपी मामले में वेदांता लि. की अपील खारिज

नई दिल्ली। राष्ट्रीय कंपनी विधि अपीलीय न्यायाधिकरण (एनसीएलएटी) ने वेदांता लि. की उन दो याचिकाओं को खारिज कर दिया, जिनमें जयप्रकाश एसोसिएट्स (जेपी) के अधिग्रहण के लिए अदाणी इंटरप्राइजेज की बोली के चयन को चुनौती दी गई थी। एनसीएलएटी ने आदेश में कहा, ऋणदाताओं की समिति का निर्णय समाधान योजनाओं के समग्र मूल्यांकन और व्यावसायिक समझ पर आधारित था। समिति की ओर से उच्च मूल्य वाली योजना को मंजूरी न देने को अनुचित नहीं कहा जा सकता। एजेंसी

रसोई गैस की खपत 16.16 फीसदी घटी, पेट्रोल में 6.36 फीसदी उछाल

ऊर्जा आपूर्ति बाधित होने से डीजल और विमान ईंधन की खपत पर भी दिखा असर

नई दिल्ली। पश्चिम एशिया संघर्ष के कारण ऊर्जा आपूर्ति बाधित होने से देश में रसोई गैस (एलपीजी) की खपत अप्रैल में सालाना आधार पर 16.16 फीसदी घटकर 22 लाख टन रह गई। एक साल पहले की समान अवधि में खपत 26.2 लाख टन रही थी। हालांकि, पेट्रोल की मांग 6.36 फीसदी बढ़कर 36.7 लाख टन पहुंच गई। खपत में यह बढ़ोतरी मार्च के 7.6 फीसदी से कम है।

पेट्रोलियम मंत्रालय के पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ के आंकड़ों के मुताबिक, एलपीजी खपत में मासिक आधार पर 12.8 फीसदी की गिरावट देखने को मिली। मार्च में रसोई गैस की खपत 23.79 लाख टन रही थी। बीते महीने डीजल की खपत 0.25 फीसदी की सुस्त वृद्धि के साथ 82.82 लाख टन रही, जबकि मार्च में यह 8.1 फीसदी बढ़कर 87.27 लाख टन पहुंच गई थी। हवाई क्षेत्र बंद होने और उड़ानों में कमी से विमान ईंधन की खपत भी 1.37 फीसदी घटकर 7.61 लाख टन रह गई। मार्च में यह 8.07 लाख टन रही थी। एजेंसी

पाम तेल आयात एक साल के निचले स्तर पर, 27% घटा

मुंबई। भारत में पाम तेल का आयात अप्रैल में 27 फीसदी कम होकर एक साल के निचले स्तर 5.05 लाख पर आ गया। अप्रैल, 2025 के बाद यह सबसे निचला स्तर है और मार्च, 2026 के 6.89 लाख टन से काफी कम है।

डीलरों के मुताबिक, कमजोर मांग और कीमतों में हालिया तेजी के चलते कंपनियों ने खरीद घटा दी। होटल और रेस्टोरेंट सेक्टर में कुकिंग गैस की कमी से भी खपत प्रभावित हुई, जिससे पाम तेल की मांग घटी। हालांकि, कुल खाद्य तेल आयात बीते महीने 10.4 फीसदी बढ़कर तीन महीने के उच्च स्तर 13 लाख टन पर पहुंच गया। एजेंसी

विनिर्माण गतिविधियों पर ईरान संघर्ष का असर वृद्धि दर चार साल में दूसरी बार सबसे कमजोर

नई दिल्ली। देश के विनिर्माण क्षेत्र की गतिविधियों में नए कारोबार और उत्पादन वृद्धि के मामले में अप्रैल में मामूली सुधार देखने को मिला। हालांकि, वृद्धि दर चार वर्ष में दूसरी बार सबसे कमजोर रही। एचएसबीसी इंडिया विनिर्माण खरीद प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) मार्च के 53.9 से मामूली बढ़कर बीते महीने 54.7 के स्तर पर पहुंच गया।

एचएसबीसी की मुख्य अर्थशास्त्री (भारत) प्रांजुल भंडारी ने कहा, पीएमआई के दो सबसे बड़े घटक नए ऑर्डर और उत्पादन मार्च की तुलना में जरूर बढ़े, लेकिन पिछले साढ़े तीन साल के स्तर से पीछे रहे। विज्ञापन एवं मांग की मजबूती ने बिक्री और उत्पादन को सहारा दिया, लेकिन ईरान संघर्ष, प्रतिस्पर्धा की स्थिति और ग्राहकों के लंबित कोटेशन मंजूर करने में हिचक के कारण वृद्धि प्रभावित हुई। उत्पादन, निर्यात सहित नए ऑर्डर और रोजगार में मध्यम वृद्धि दर्ज हुई, जो विनिर्माण क्षेत्र की मजबूती को दर्शाती है। एजेंसी

लागत का दबाव 44 महीने में सर्वाधिक

कीमतों के मोर्चे पर विनिर्माण क्षेत्र की कंपनियों ने कहा, ईरान युद्ध की वजह से महंगाई पर ऊपर की ओर दबाव बना हुआ है। कच्चे माल की लागत और तैयार माल की कीमतें क्रमशः 44 महीने एवं छह महीने में सबसे तेज दर से बढ़ीं।

■ ***इस साल जनवरी-मार्च तिमाही की शुरुआत में नए निर्यात ऑर्डर मिलने की रफ्तार सात माह में सबसे ज्यादा रही। अतिरिक्त भर्तियों के कारण रोजगार सृजन की दर 10 महीने में सबसे मजबूत रही।***

पीएनबी : 220 स्थानों पर मेगा एमएसएमई आउटरीच कार्यक्रम

नई दिल्ली। पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) ने देशभर में 220 स्थानों पर अपने मेगा एमएसएमई आउटरीच प्रोग्राम की मेजबानी की। बैंक के एमडी-सीईओ अशोक चंद्र ने कहा, हम देशभर के एमएसएमई को सेवाएं, अनुकूल उत्पाद, डिजिटल सुलभता और समय पर वित्तीय समाधान देकर क्रेडिट गैप को पाटने के लिए निर्णायक कदम उठा रहे हैं। ब्यूरो

अमर उजाला **Job Alert**
Real-time job alerts
amarujala.com/jobs

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड
टीचिंग एसोसिएट के पदों पर रिक्तियां

3540 पद

आवेदन की अंतिम तिथि : 03 जून, 2026
वेतनमान : रुपये 28,850 प्रतिमाह
यहां आवेदन करें : rssb.rajasthan.gov.in

महानदी कोलफील्ड्स ■ 500 पद
असिस्टेंट फोरमैन आदि पदों पर रिक्तियां
आवेदन की अंतिम तिथि : 28 मई, 2026
आयु-सीमा : न्यूनतम 18 वर्ष व अधिकतम 30 वर्ष
यहां आवेदन करें : mahanadicoal.in

बीपीसीएल में करें आवेदन ■ 250 पद
जूनियर एग्जीक्यूटिव व अन्य पदों पर निकली भर्ती
आवेदन की अंतिम तिथि : 17 मई, 2026
आयु-सीमा : पदानुसार अधिकतम उम्र 32 व 35 वर्ष निर्धारित
यहां आवेदन करें : bharatpetroleum.in

एनएचआईडीसीएल में मौके ■ 85 पद
डिप्टी मैनेजर के पद खाली
आवेदन की अंतिम तिथि : 08 जून, 2026
आयु-सीमा : अधिकतम आयु 34 वर्ष से 49 वर्ष निर्धारित
यहां आवेदन करें : nhidcl.com

यूसीआईएल में निकली भर्ती ■ 19 पद
सहायक व सहायक प्रबंधक आदि पदों पर रिक्तियां
आवेदन की अंतिम तिथि : 19 मई, 2026
वेतनमान : रुपये 40,000 से लेकर रुपये 2,40,000 प्रतिमाह
यहां आवेदन करें : uraniumcorp.in

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ■ 15 पद
सहायक महाप्रबंधक के पद खाली
आवेदन की अंतिम तिथि : 17 मई, 2026
योग्यताएं : बीएससी, बीई, बीटेक व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें : centralbank.bank.in

विभिन्न पदों के लिए विज्ञापन जारी...
भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण : अपर डिवीजन क्लर्क के पदों पर रिक्तियां।
■ आवेदन की अंतिम तिथि : 17 मई, 2026
■ iwai.nic.in
भारतीय प्रबंधन संस्थान, लखनऊ : शोध सहयोगी/शोध सहायक का पद खाली।
■ आवेदन की अंतिम तिथि : 15 मई, 2026
■ iiml.ac.in

अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों के लिए हमें udaan@amarujala.com पर ई-मेल करें।

एजुकेशन & कॅरिअर

आपका समय सीमित है, इसलिए इसे किसी और की तरह जीने में बर्बाद न करें।

यों ही न बीत जाएं छुट्टियां

गर्मी की छुट्टियां आने वाली हैं। मौज-मस्ती अपनी जगह, लेकिन यह समय खुद को बेहतर बनाने का अवसर भी हो सकता है

भारत भूषण अरजरिया
कॅरिअर सलाहकार

अक्सर गर्मी की छुट्टियों का नाम सुनते ही हमारे मन में पढ़ाई से ब्रेक और मौज-मस्ती का ख्याल आता है। इसी चक्कर में ज्यादातर छात्र अपना कीमती समय मोबाइल-इंटरनेट की आभासी दुनिया में या बिना किसी योजना के खेलकूद में बिता देते हैं। लेकिन वास्तव में छुट्टियां केवल आराम के लिए नहीं, बल्कि अपनी प्रतिभा को निखारने और खुद को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने का समय है। जरा सोचिए, जब छुट्टियों के बाद आप स्कूल या कॉलेज लौटें और आपके पास केवल घूमने-फिरने की यादें ही न हों, बल्कि कोई नया हुनर भी हो, तो आपका आत्मविश्वास कितना बढ़ जाएगा। यह समय खुद में निवेश करने का है, ताकि आप भीड़ से अलग अपनी पहचान बना सकें।

■ रुचियों को दें नई उड़ान

छुट्टियों का सबसे बड़ा फायदा यह है कि आपके पास समय की कोई कमी नहीं होती। स्कूल के व्यस्त रूटीन के कारण आप जो शौक पूरे नहीं कर पाए, उन्हें अब समय दें। आप गिटार बजाना, कोडिंग, ग्राफिक डिजाइनिंग या कोई नई भाषा सीख सकते हैं। अपनी एक छोटी कहानी की किताब लिखें या एक आर्ट पोर्टफोलियो तैयार करें। यह रचनात्मकता आपके दिमाग को सक्रिय रखती है और आपको एक नई पहचान दिलाती है।

■ घूमते-फिरते बढ़ाएं नॉलेज

सीखना केवल क्लासरूम तक सीमित नहीं है। यात्राएं हमें वो सिखाती हैं, जो किताबें नहीं सिखा सकतीं। ऐतिहासिक किलों, संग्रहालयों और स्मारकों की सैर करें। जब आप इतिहास को अपनी आंखों से देखते हैं, तो वह हमेशा के लिए याद हो जाता है। नई जगहों के खान-पान, रहन-सहन और परंपराओं को समझें। इससे दुनिया को देखने का आपका नजरिया बदलता है और आप विविधता का सम्मान करना सीखते हैं।

■ शरीर और मन का रखें ख्याल

छुट्टियों का मतलब सारा दिन मोबाइल या टीवी के सामने बैठना नहीं है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ दिमाग निवास करता है। तैराकी, योग, साइकिलिंग या किसी खेल जैसे फुटबाल या बैडमिंटन को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं। रोज रात को दस मिनट अपनी दिनभर की बातों को डायरी में लिखें। यह आदत न केवल आपके विचारों को स्पष्ट करती है, बल्कि मानसिक शांति भी प्रदान करती है।

■ जिम्मेदार नागरिक बनें

एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए समाज के प्रति संवेदनशील होना जरूरी है। किसी एनजीओ के साथ जुड़ें, पौधों की देखभाल करें या पक्षियों के लिए पानी की व्यवस्था करें। ये छोटे-छोटे कार्य आपमें दया और सहानुभूति का भाव जगाते हैं। घर के छोटे-बड़े कामों में हाथ बंटाना या अपना बजट खुद मैनेज करना आपको आत्मनिर्भर बनाता है। इसके अलावा छात्र किसी शॉर्ट टर्म इंटर्नशिप के जरिये व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त कर सकते हैं।

■ किताबों से करें दोस्ती

किताबें ज्ञान का वो समंदर हैं, जो आपको घर बैठे पूरी दुनिया की सैर करा सकती हैं। महापुरुषों की जीवनियां, विज्ञान की रोचक बातें या प्रेरणादायक कहानियां पढ़ें। पढ़ने से आपकी कल्पना शक्ति और बातचीत करने का तरीका बेहतर होता है। अपने पास के किसी पुस्तकालय का हिस्सा बनें, जहां आपको अलग-अलग विषयों की किताबें पढ़ने का मौका मिले।

स्कॉलरशिप प्रोग्राम

डॉ. राजेंद्र प्रसाद स्कॉलरशिप प्रोग्राम

- संस्थान : बडी4स्टडी
- योग्यताएं : कक्षा दसवीं, बारहवीं उत्तीर्ण व अन्य निर्धारित पात्रताएं।
- आय : आठ लाख रुपये से कम या बराबर
- वजीफा : 30,000 रुपये तक
- आवेदन करने की अंतिम तिथि : 28 जून, 2026
- आवेदन लिंक : tinyurl.com/39aat2jf

आवेदन आमंत्रित

सेल्स एग्जीक्यूटिव (सीएलसी) इंटर्नशिप

- संस्थान : पीटीओएल इम्पैक्ट लर्निंग एम्पावर्स प्राइवेट लिमिटेड
- अवधि : छह महीने
- स्टाइपेंड : रुपये 2,000 प्रतिमाह
- पात्रताएं : संचार कौशल, एक्सेल गूगल शीट्स का बुनियादी ज्ञान व व्यवहार कौशल
- आवेदन की अंतिम तिथि : 31 मई, 2026
- आधिकारिक लिंक : tinyurl.com/39xu5m8n

एग्जाम अलर्ट

एमपीईएसबी प्री-एग्रीकल्चर टेस्ट-2026

- परीक्षा की तिथि : 08 मई, 2026
- यह परीक्षा दो पाली में आयोजित की जाएगी, जिसमें गणित, भौतिकी, रसायन विज्ञान व एग्रीकल्चर आदि से 200-200 अंकों के बहुविकल्पीय प्रकार के 200-200 प्रश्न पूछे जाएंगे।
- यहां से प्रवेश-पत्र डाउनलोड करें tinyurl.com/2v6wkzm

पंजाब एंड सिंध बैंक एलबीओ परीक्षा-2026

- परीक्षा की तिथि : 10 मई, 2026
- इस परीक्षा में अंग्रेजी भाषा, बैंकिंग ज्ञान, सामान्य जागरूकता, कंप्यूटर अभिरुचि से 120 अंकों के 120 प्रश्न पूछे जाएंगे। इन प्रश्नों को हल करने के लिए अभ्यर्थी को दो घंटे का समय दिया जाएगा।
- यहां से प्रवेश-पत्र डाउनलोड करें tinyurl.com/mt7tt5a6

खुद को परखें

1. हाल ही में खबरों में रहने वाला ईस्टर द्वीप किस महासागर में स्थित है?
   (a) प्रशांत महासागर (b) अटलांटिक महासागर
   (c) हिंद महासागर (d) आर्कटिक महासागर
2. कोटगढ़ वन्यजीव अभयारण्य किस राज्य में स्थित है?
   (a) ओडिशा (b) महाराष्ट्र
   (c) गुजरात (d) कर्नाटक
3. कैनाइन डिस्टेंपर बीमारी किस कारक के कारण होती है?
   (a) जीवाणु (b) विषाणु
   (c) कवक (d) प्रोटोजोआ
4. आईएनएस महेंद्रगिरि का निर्माण किस जहाज निर्माण कंपनी ने किया था?
   (a) कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड
   (b) हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड
   (c) मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड
   (d) गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स

उत्तर-1.a, 2.a, 3.b, 4.c

आज का दिन

05 मई, 2017

इसरो ने जीसैट-9 उपग्रह लॉन्च किया था। यह पड़ोसी देशों को आपदा प्रबंधन, टेली-मेडिसिन, शिक्षा और बैंकिंग सेवाओं में सहायता प्रदान करता है।

- ■ 1809 : मैरी कीस (अमेरिकी महिला) को बुनाई तकनीक के लिए पेटेंट मिला था।
- ■ 1927 : ब्रिटिश लेखिका वर्जीनिया वूल्फ की किताब 'टू द लाइटहाउस' प्रकाशित हुई थी।
- ■ 1956 : टी-सीरीज कंपनी के संस्थापक गुलशन कुमार का जन्म हुआ था।
- ■ 2006 : फिल्म संगीतकार नौशाद अली का निधन हुआ था।

व्रत त्योहार

आज : ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष चतुर्थी।
कल : ग्रीष्म ऋतु, सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोले।
राहुकाल : दिन में 12.00 से 13.30 तक।

■ सूर्योदय : 05.40
■ सूर्यास्त : 18.55
(भारतीय मानक समयानुसार)

कल का पंचांग

विक्रमी संवत 2083, 16 वैशाख मास शक 1948, वैशाख मास 23 प्रविष्टे, 18 जिल्काद हिजरी 1447, प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष चतुर्थी 07.51 तक उपरांत पंचमी, मूल नक्षत्र 15.53 तक उपरांत पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र, सिद्ध योग 25.11 तक उपरांत साध्य योग, बालव करण 07.51 तक उपरांत कौलव करण, चंद्रमा धनु राशि में दिन रात।

राशिफल

amarujala.com/astrology ■ पं. विनोद त्यागी

मेष : मानसिक उलझन बनी रहेगी। स्वजनों से वाद-विवाद संभव है। बनते कार्य में अवरोध आएंगे।

वृष : सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। अचानक अर्थ प्राप्ति संभव है। नौकरी में सम्मान बना रहेगा।

मिथुन : आरोग्य सुख उत्तम रहेगा। कार्य विशेष में सफलता मिलेगा। नौकरी में सम्मान बढ़ेगा।

कर्क : मान-सम्मान की चिंता रहेगी। नौकरी में सहकर्मियों से निराशा होगी। निर्णय लेने में सावधानी बरतें।

सिंह : मानसिक अस्थिरता बनी रहेगी। संपत्ति संबंधी कार्य अटक सकता है।

कन्या : मन प्रसन्न रहेगा। पूर्व नियोजित कार्य में व्यस्त रहेंगे। घर में शांति रहेगी।

तुला : अध्ययन में अरुचि रहेगी। नौकरी में स्थिति अनुकूल रहेगी। अनैतिक कार्य से दूरी बनाए रखें।

वृश्चिक : उपहार सम्मान की प्राप्ति होगी। नौकरी में उन्नति हो सकती है। आर्थिक स्थिति से संतुष्ट रहेंगे।

धनु : अनजानी दुविधा बनी रहेगी। योजना में निराशा होगी। नौकरी में मन नहीं लगेगा।

मकर : मन में आशा का संचार होगा। संतान से सुख मिलेगा। नौकरी में वर्चस्व बना रहेगा।

कुंभ : मनोकामना पूर्ति का अवसर मिलेगा। सरकारी क्षेत्र में कार्य बनेंगे। नौकरी में उन्नति हो सकती है।

मीन : दिनमान प्रतिकूल रहेगा। नौकरी में तबादले की आशंका रहेगी। संतान से निराशा होगी।

सुडोकू

2	7	3			9	5		
	8		2	1	4	7		
				7		8		
9							4	6
	2	7				3	8	
8	1							9
		2		9				
		8	4	6	7		2	
		9	8			6	3	7

सुडोकू 81 वर्गों का ग्रिड है, जो 9 वर्गों के ब्लॉक में बंटा हुआ होता है। कुछ वर्गों के अंक लिखे है और खाली वर्गों में 1 से लेकर 9 तक के अंक लिखने होते हैं। कोई नंबर 1 पंक्ति, कॉलम या 9 वर्ग वाले छोटे ब्लॉक में दोबारा नहीं आ सकता है।

उत्तर

2	7	3	6	8	9	5	1	4
5	8	6	2	1	4	7	9	3
4	9	1	3	7	5	8	6	2
9	3	5	7	2	8	1	4	6
6	2	7	9	4	1	3	8	5
8	1	4	5	3	6	2	7	9
7	6	2	1	9	3	4	5	8
3	5	8	4	6	7	9	2	1
1	4	9	8	5	2	6	3	7

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
मंगलवार, 5 मई, 2026

दैनिक जागरण

निरंतर प्रयास ही सफलता का सूत्र है

अपेक्षित और अप्रत्याशित

पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में से जहां असम, केरलम और केंद्रशासित प्रदेश पुडुचेरी के परिणाम अपेक्षा के अनुरूप सिद्ध हुए, वहीं पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु के नतीजे अप्रत्याशित रहे। बंगाल और तमिलनाडु के नतीजों ने इसलिए चौंकाया, क्योंकि जहां बंगाल में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस के सत्ता विरोधी माहौल का सामना करने के बाद भी इसकी आशा शायद ही किसी को रही हो कि उसके लिए सौ सीटों तक पहुंचना भी कठिन हो जाएगा और भाजपा दो सौ सीटों के निकट पहुंच जाएगी, वहीं तमिलनाडु में नए बने दल टीवीके के बारे में कम ही लोगों ने कमजोर सा अनुमान लगाया था कि वह सत्ता के निकट पहुंच जाएगी। बंगाल में ममता बनर्जी और तमिलनाडु में स्टालिन की पराजय यह बताती है कि जो क्षेत्रीय नेता अपनी सत्ता को खुद की निजी जागीर में बदल लेते हैं, उन्हें जनता अधिक समय तक सहन नहीं करती। तमिलनाडु में टीवीके के जोसेफ विजय ने वह कर दिखाया, जो एक समय आंध्र में एनटी रामाराव और दिल्ली में अरविंद केजरीवाल ने किया था-पहली बार में ही बंपर जीत। विजय की जीत का महत्व इसलिए भी है कि उन्होंने छह दशक बाद द्रविड़ दलों को तमिलनाडु की सत्ता से बाहर कर दिया। बंगाल में भी भाजपा ने कांग्रेस, वाम दलों के लंबे शासन के बाद 15 वर्षों तक शासन करने वाली तृणमूल कांग्रेस को बाहर का दरवाजा दिखा दिया। बंगाल में प्रचंड जीत के साथ ही भाजपा ने पूर्वोत्तर के साथ पूर्वी भारत पर बढ़त हासिल कर ली। बंगाल में जो राजनीतिक लड़ाई कांटे की मानी जा रही थी, उसमें भाजपा की इतनी बड़ी जीत यह बताती है कि ममता का शासन कुशासन का पर्याय बन गया था और मुस्लिम तुष्टीकरण की उनकी राजनीति एवं बांग्लादेश से होने वाली घुसपैठ की गंभीर समस्या की अनदेखी ने बहुसंख्यक समुदाय को भाजपा के पक्ष में एकजुट करने का काम किया। भाजपा के पूर्व संस्करण जनसंघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी के गृह राज्य में भाजपा की जीत ने यह भी रेखांकित किया कि उसके विस्तार और बढ़ते प्रभाव का सिलसिला तेज होने वाला है। इस जीत ने प्रधानमंत्री मोदी के साथ गृहमंत्री अमित शाह के कद को और अधिक बढ़ाने का काम किया है।

> 2026 की भाजपा वह नहीं, जो 2024 के लोकसभा चुनावों के बाद निस्तेज दिखने लगी थी और विपक्षी दल यह प्रतीति कराने लगे कि अब उनका नंबर आएगा

2026 की भाजपा वह नहीं, जो 2024 के लोकसभा चुनावों के बाद निस्तेज दिखने लगी थी और कांग्रेस समेत अन्य विपक्षी दल यह प्रतीति कराने लगे कि अब उनका नंबर आएगा। निःसंदेह अब बंगाल में भी डबल इंजन सरकार होगी, लेकिन इसके साथ ही भाजपा के सामने यह चुनौती भी आ खड़ी हुई है कि वह राज्य की जनता से किए गए अपने वादों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करे और इस राज्य को राजनीतिक हिंसा एवं घुसपैठियों से मुक्त करने के साथ फिर से पटरी पर लाए। पांच राज्यों के चुनाव नतीजे इसलिए भाजपा का अतिरिक्त उत्साहवर्धन करने वाले हैं, क्योंकि उसने असम में तीसरी बार कहीं बड़े अंतर से जीत हासिल की। इसके साथ ही केरलम और तमिलनाडु में भी अपने लिए कुछ जगह बनाई। पुडुचेरी में उसके समर्थन वाली सरकार का फिर से बनना भी कम महत्वपूर्ण नहीं, क्योंकि वह असम के साथ यहां भी सत्ता विरोधी माहौल को दरकिनार करने में सफल रही। ऐसा न तो बंगाल में ममता कर सकीं, न केरलम में विजयन और न ही तमिलनाडु में स्टालिन। कांग्रेस इससे प्रसन्न हो सकती है कि केरलम के रूप में एक और राज्य उसके हाथ आ गया, पर असम में वह जिस तरह पराजित हुई और यहां तक कि उसके सबसे प्रमुख नेता गौरव गोगोई भी हार गए, वह उसके लिए गहन आत्मचिंतन का विषय बनना चाहिए। वह भले ही केरलम में अपने सहयोगी दलों के साथ सरकार बनाने जा रही हो, लेकिन पांच राज्यों के नतीजे यही कह रहे हैं कि उसके नेतृत्व वाला गठबंधन आइएनडीआइए और कमजोर हो गया है।

राष्ट्रीय राजनीति को बदलने वाले नतीजे

राहुल वर्मा

पांच राज्यों के जनादेश से जहां भाजपा और मजबूत होगी, वहीं तृणमूल, द्रमुक और वाम दलों की हार से विपक्षी दलों का मोर्चा न केवल कमजोर होगा, बल्कि उसका संतुलन भी बदलेगा

चार राज्यों और एक केंद्रशासित प्रदेश के विधानसभा चुनाव परिणाम मिले-जुले रहे। असम, केरलम और पुडुचेरी के परिणाम अनुमानों के अनुरूप रहे तो पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु के नतीजे अप्रत्याशित एवं नाटकीय राजनीतिक परिवर्तन को रेखांकित कर रहे हैं। असम के बारे में माना जा रहा था कि भाजपा सत्ता में वापसी करने में सफल रहेगी तो केरलम में कांग्रेस को कामयाबी मिलेगी। पुडुचेरी में भी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की राह में कोई मुश्किल नहीं दिख रही थी। दो बड़े चुनावी राज्यों में से एक तमिलनाडु में नई-नवेली पार्टी टीवीके की भारी जीत ने राजनीतिक पंडितों को भी हैरान किया तो बंगाल में भाजपा की जीत ने लंबे समय से कायम ममता बनर्जी को सत्ता से बाहर का रास्ता दिखाया। इन दोनों बड़े राज्यों में भारी राजनीतिक उलटफेर हुआ है।

पिछले कुछ वर्षों में असम भाजपा के राजनीतिक वर्चस्व वाले राज्य के रूप में उभरा है। लगातार सत्ता में रहने के बावजूद उसकी सीटों में बढ़ोतरी दर्शाती है कि जनता सरकार के कामकाज से काफी संतुष्ट है। 2023 में विधानसभा क्षेत्रों के नए सिरे से परिसीमन ने भी भाजपा की राजनीतिक ताकत बढ़ाई है। बोडोलैंड में सहयोगी दलों और असम गण परिषद के साथ ने भी पार्टी को मजबूती दी। कल्याणकारी योजनाओं और मुख्यमंत्री हिमंत की लोकप्रियता भी उसके पक्ष में जाती है। कांग्रेस सांगठनिक स्तर पर एकदम लुंज-पुंज हो गई है। चुनावों के दौरान ही उसकी राज्य इकाई के पूर्व अध्यक्ष के अलावा प्रचार अभियान समिति के प्रमुख जैसे दो दिग्गज नेता भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए। यह दर्शाता है कि राज्य की राजनीतिक हवा कांग्रेस के कितने विपरीत रही, जिसकी पुष्टि न केवल घटी हुई सीटों, बल्कि गौरव गोगोई जैसे नेता की हार में भी झलकती है, जिनके चेहरे पर पार्टी चुनाव लड़ रही थी।

केरलम में दस साल से वामपंथी सरकार सत्ता में थी, जिसने पिछले विधानसभा चुनाव में हर पांच साल में सरकार बदलने वाले राज्य के राजनीतिक रुझान को धता बताते हुए सत्ता में वापसी की थी। इसलिए यहां राजनीतिक परिवर्तन अवश्यंभावी माना जा रहा था। भाजपा यहां राजनीतिक पैठ बढ़ाने के प्रयास तो भरपूर कर रही है, पर वे फलीभूत नहीं हो पा रहे। वैसे भाजपा के इन प्रयासों की कीमत वाम दलों को चुकानी पड़ी, क्योंकि वह दक्षिण केरल और हिंदुओं विशेषकर एझावा जैसे उन समुदायों को साधने की जुगत में है, जो पारंपरिक रूप से वाम समर्थक माने जाते हैं। इसीलिए, केरलम की राजनीतिक लड़ाई में कांग्रेस के लिए कोई खास मुश्किल नहीं थी। केरलम से विदाई के बाद अब किसी भी राज्य में वामपंथी दलों की सरकार नहीं रह गई है।

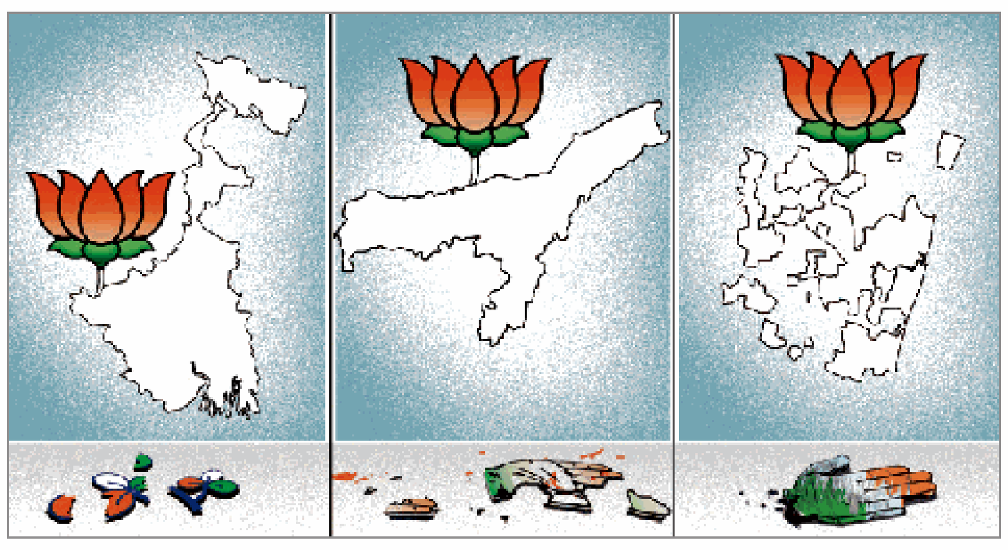

अवधेश राजपूत

बंगाल में भाजपा की ऐतिहासिक जीत पर भले ही कुछ राजनीतिक प्रेक्षक हैरानी जताएं, लेकिन राज्य की सत्ता तक उसकी पहुंच बस समय की ही बात थी। वर्ष 2019 से हो रहे चुनावों के समय से ही भाजपा करीब 40 प्रतिशत मतों के स्तर पर अटकी थी और इसमें पांच प्रतिशत तक की बढ़ोतरी उसे राज्य की कमान दिलाने को पर्याप्त थी। यह चुनाव उसके सत्तारोहण का पड़ाव बनकर उभरा। मतदाता सूचियों के गहन पुनरीक्षण यानी एसआइआर की भूमिका को भी भाजपा की चुनावी जीत में एक कारक माना जा सकता है, लेकिन यही इकलौता कारण नहीं रहा। राज्य की ममता बनर्जी सरकार लंबे समय से कायम सत्ता से उपजे असंतोष से भी जूझ रही थी। विभिन्न योजनाओं को लेकर केंद्र के साथ उनका टकराव भी एक वर्ग को अखर रहा था कि राज्य को इसके चलते अपेक्षित लाभ नहीं मिल पा रहे हैं। ममता बनर्जी की निजी लोकप्रियता के बावजूद उन्हें सबसे अधिक दुष्परिणाम अपने स्थानीय कार्यकर्ताओं के मनमानेपन और बड़बोलेपन का ही भुगतना पड़ा, जो लोगों को आतंकित करने के साथ ही उनके दैनंदिन जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप भी करते थे। चुनाव आयोग द्वारा मुहैया व्यापक सुरक्षा छत्र राज्य सरकार से कुपित मतदाताओं को आश्वस्त करने वाला साबित हुआ और मतदान के रुझान से लेकर परिणाम भी इस पहलू को पुष्ट करते हुए प्रतीत होते हैं। भाजपा ने भी पिछले विधानसभा चुनाव में की गई गलतियों से सबक लेते हुए सकारात्मक अभियान पर ध्यान केंद्रित किया, जिसका भी उसे लाभ मिला।

चुनाव परिणामों को लेकर सबसे हैरान करने का काम तमिलनाडु ने किया है, जहां 1967 के बाद पहली बार द्रविड़ केंद्रित राजनीति से इतर कोई दल सत्ता के शिखर पर उभरा है। तमिलनाडु की राजनीति पर फिल्म जगत का प्रभाव हमेशा से रहा है और देश में पहले भी बड़े राजनीतिक उलटफेर हुए हैं, लेकिन अभिनेता से नेता बने विजय की जीत कई मायनों में अप्रत्याशित रही है। एक समय एनटीआर ने समूचे आंध्र प्रदेश का दौरा कर अपनी सिनेमाई छवि को राजनीतिक स्वरूप दिया था, लेकिन उसकी तुलना में विजय ने ऐसा कुछ नहीं किया। आम आदमी पार्टी और असम गण परिषद जैसे एकाएक सफल हुए राजनीतिक प्रयोगों की पृष्ठभूमि भी कहीं न कहीं किसी सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों से जुड़ी रही, लेकिन विजय की टीवीके के साथ ऐसा भी कुछ नहीं रहा। इसलिए उनकी जीत वाकई चौंकाने वाली है।

इन चुनावों से भाजपा को बड़ा राजनीतिक संबल मिलेगा। केरलम और तमिलनाडु में असफलता के बावजूद असम में मजबूती और बंगाल के प्रचंड जनादेश से उसका 'मिशन ईस्ट' लगभग पूरा हो गया है। इससे उत्साहित पार्टी दक्षिण में और मजबूती के साथ अपनी ताकत लगाएगी। तृणमूल कांग्रेस और द्रमुक की ऐसी जबरदस्त हार विपक्षी दलों के मोर्चे आइएनडीआइए के लिए तगड़ा झटका है, क्योंकि ये इस गठबंधन के प्रमुख स्तंभ रहे हैं। उनकी हार से इस गठबंधन का संतुलन भी बदलेगा। कांग्रेस का दो राज्यों में दांव लगा था, जिसमें केरलम की जीत से उसे दम तो मिलेगा, लेकिन असम उसके लिए जिस तरह विषम होता जा रहा है, उसकी टीस उसे सालती रहेगी। लोकसभा सीटों के लिहाज से बड़े राज्यों में निरंतर हाशिए पर पहुंचना भी उसके लिए चिंतित करने वाला पहलू बनता जा रहा है।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं सेंटर फार पालिसी रिसर्च में फेलो हैं)

response@jagran.com

बंगाल में भाजपा ने किया कमाल

यदि पांच राज्यों-पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरलम, असम और पुडुचेरी के चुनाव परिणामों को समग्र रूप में देखा जाए, तो एक व्यापक तस्वीर उभरती है। इस तस्वीर में दो घटनाएं विशेष रूप से ऐतिहासिक प्रतीत होती हैं-बंगाल में भाजपा की उल्लेखनीय बढ़त और तमिलनाडु में थलापति विजय की पार्टी टीवीके का प्रभावशाली प्रदर्शन। हालांकि असम में भाजपा की लगातार तीसरी जीत भी महत्वपूर्ण है, लेकिन बंगाल और तमिलनाडु की घटनाएं राजनीतिक दृष्टि से अधिक दूरगामी प्रभाव वाली हैं। बंगाल में एक बड़े मुस्लिम मतदाता वर्ग के तृणमूल कांग्रेस के संगठित समर्थन के बावजूद भाजपा की बढ़त सामान्य घटना नहीं। वैसे तो असम में भी उल्लेखनीय मुस्लिम आबादी के बावजूद भाजपा की जीत ने कई स्थापित राजनीतिक मिथकों को तोड़ा है, पर असम और बंगाल की राजनीति के स्वरूप और सत्ता संरचना में मौलिक अंतर है। बंगाल में ममता बनर्जी ने जिस प्रकार का राजनीतिक माहौल और सत्ता संरचना विकसित की थी, उसमें किसी अन्य दल के लिए प्रभावी चुनौती पेश करना कठिन था। ऐसे में भाजपा की यह सफलता केवल चुनावी उपलब्धि नहीं, बल्कि एक बड़े परिवर्तन का संकेत है कि बंगाल की राजनीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है।

अवधेश कुमार

बंगाल के परिणाम से वही चकित हैं, जो राज्य में जमीनी सच्चाई और एक वर्ग की छटपटाहट महसूस नहीं कर रहे थे

सीएम आवास के पास से निकलते भाजपा कार्यकर्ता। प्रेट्र

पिछले एक दशक से चुनावी रुझानों का यह एक प्रमुख पहलू लगभग हर राज्य में दिखाई देता है कि हिंदुत्व, संस्कृति और धार्मिक पहचान के प्रति हिंदुओं के एक व्यापक पुनर्जागरण ने एक स्थायी मतदाता आधार का निर्माण किया है। यह आधार ऐसा है, जो संतुष्टि, असंतोष या आंशिक नाराजगी के बावजूद किसी न किसी रूप में भाजपा या उसके सहयोगी दलों के पक्ष में झुकाव बनाए रखता है और कई बार उसकी अनुपस्थिति में वैचारिक रूप से निकट दलों की ओर भी स्थानांतरित हो जाता है। यह प्रवृत्ति पांचों राज्यों के चुनावों में भी देखने को मिली। भाजपा स्थानीय और क्षेत्रीय मुद्दों को उठाने के साथ-साथ चुनावी विमर्श को राष्ट्रीय विषयों से जोड़ने की रणनीति अपनाती रही है। इससे मतदाताओं के साथ उसका सीधा भावनात्मक संवाद स्थापित होता है। भाजपा ने बंगाल, असम में राष्ट्रीय सुरक्षा, जनसांख्यिकीय संतुलन जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उभारा, जो चुनावी एजेंडे के केंद्र में रहे। मोदी सरकार द्वारा महिलाओं के सशक्तीकरण से जुड़े कार्यक्रमों ने भी चुनावी माहौल को प्रभावित किया।

वास्तव में बंगाल के परिणाम ने केवल उन्हें ही चौंकाया है, जो जमीनी सच्चाई के साथ मतदाताओं और विशेष रूप से हिंदुओं के बड़े वर्ग के अंदर बदलाव की छटपटाहट को महसूस नहीं कर रहे थे। तृणमूल कांग्रेस ने बंगाल की सत्ता और पूरी राजनीति को निहित स्वार्थी तत्वों के हाथों में सौंप दिया था। इससे कट्टरपंथी तत्वों को मिले प्रत्यक्ष-परोक्ष संरक्षण और प्रोत्साहन के कारण पूरे प्रदेश में सांप्रदायिक भय और तनाव की स्थिति में कायम हो गई थी। वे कहने लगे थे कि मतदाता अपनी इच्छा से नहीं, तृणमूल कांग्रेस के नेताओं की चाहत से मतदान करें या घर बैठें, अन्यथा हिंसा, दमन, उत्पीड़न और पलायन का दंश झेलें। 'साइलेंट रिगिंग' बंगाल की मुख्य चुनावी प्रवृत्ति रही है। पहले इसी रास्ते वाम मोर्चा ने लगातार जीत सुनिश्चित की और फिर ममता ने भी अपनी पूरी पार्टी को उससे ज्यादा हिंसक और दमनकारी तत्वों में परिणत कर दिया। पलायन या हिंसा की सर्वाधिक शिकार महिलाएं होती हैं। इसी कारण इनका बहुत बड़ा मत तृणमूल के बजाय भाजपा को गया। जो लोग भाजपा पर हिंदुओं के ध्रुवीकरण का आरोप लगा रहे हैं, वे सतही विश्लेषण कर रहे हैं। वास्तव में बंगाल में राजनीतिक संघर्ष वास्तविक लोकतंत्र की पुनर्स्थापना तथा सत्ता संस्कृति को सर्वसमावेशी बनाने का था। यह जिम्मेदारी मुख्यतः प्रदेश के हिंदुओं को ही लेनी थी। हिंदुओं के अंदर अगर यह भाव पैदा हुआ कि इस सरकार के रहते हमारा अस्तित्व संकट में है, तो इसके कारण अत्यंत गहरे हैं। बांग्लादेश की हिंसक घटनाओं ने हिंदुओं के इस मनोविज्ञान को सशक्त किया कि हमें कुछ हद तक जान की बाजी लगानी होगी। इसके अलावा एसआइआर में मृत, संदिग्ध और स्थानांतरित मतदाताओं के नाम हटाने के कारण फर्जी मतदाताओं का खेल खत्म हो गया। केंद्रीय बलों की उपस्थिति, चुनाव के बाद भी सुरक्षा बलों के बने रहने की घोषणा, दूसरे राज्यों के अधिकारियों की चुनाव पर्यवेक्षक के रूप में नियुक्ति, प्रदेश के अधिकारियों का व्यापक पैमाने पर स्थानांतरण या चुनाव प्रक्रिया तक कार्य मुक्ति तथा चुनावी हिंसा वाले चिह्नित व्यक्तित्वों के विरुद्ध कार्रवाई एवं सतर्क दृष्टि आदि ने भय और संशयग्रस्त मतदाताओं के अंदर सुरक्षा को लेकर आश्वस्त किया, जिससे चुनावी माहौल में बड़ा परिवर्तन आया। भाजपा ने प्रधानमंत्री मोदी एवं गृह मंत्री अमित शाह के नेतृत्व में मतदाताओं को पहले दिन से यह विश्वास दिलाने की रणनीति अपनाई कि हम सत्ता में आ रहे हैं तथा किसी के साथ अन्याय हुआ तो पूरी पार्टी खड़ी रहेगी। इन सबके कारण ही बंगाल में यह असंभव-सा लगने वाला सत्ता परिवर्तन हुआ है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

सहिष्णुता का मार्ग

आज के समय में परिवारों के भीतर बढ़ती हुई हिंसा, आपसी तनाव, द्वेष और कटुता एक गंभीर सामाजिक चुनौती बनती जा रही है। छोटी-छोटी बातों पर विवाद, अहंकार और संवादहीनता के कारण परिवार, जो शांति और स्नेह का केंद्र होना चाहिए, वह संघर्ष का स्थल बनता जा रहा है। ऐसे समय में आवश्यक है कि हम अपने परिवार को अहिंसा की प्रयोगशाला बनाएं, जहां विचार, व्यवहार और संबंधों में सौम्यता और संतुलन का अभ्यास हो।

अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा से बचना नहीं है, बल्कि यह मन, वचन और कर्म की कोमलता का नाम है। मानसिक हिंसा-जैसे कटु शब्द, उपेक्षा, तिरस्कार और ईर्ष्या अक्सर शारीरिक हिंसा से भी अधिक गहरी चोट पहुंचाती है। इसलिए परिवार में शांति स्थापित करने के लिए सबसे पहले हमें अपनी मानसिक वृत्तियों को शुद्ध करना होगा। इस दिशा में मैत्री भावना का विशेष महत्व है। मैत्री का अर्थ है-हर सदस्य के प्रति अपनत्व और सद्भाव का भाव रखना। जब हम अपने परिवार के सदस्यों को प्रतिस्पर्धी या विरोधी नहीं, बल्कि सहयोगी और शुभचिंतक के रूप में देखने लगते हैं, तब आपसी तनाव स्वतः कम होने लगता है। मैत्री भावना से संवाद के द्वार खुलते हैं और गलतफहमियां दूर होती हैं। इसी प्रकार प्रमोद की भावना भी अत्यंत आवश्यक है। प्रमोद का अर्थ है-दूसरों की प्रगति, सफलता और गुणों में आनंदित होना। परिवारों में अक्सर ईर्ष्या और तुलना के कारण द्वेष उत्पन्न होता है। यदि हम एक-दूसरे की उपलब्धियों में हर्ष अनुभव करें, तो यह सकारात्मक ऊर्जा पूरे परिवार के परिवेश को बदल सकती है। प्रमोद भावना रिश्तों में मधुरता और सहयोग का संचार करती है। विरोध से तनाव बढ़ता है, जबकि धैर्य और संयम से प्रतिक्रिया देने पर विवाद शांत हो सकता है।

ललित गर्ग

आपदा में जान बचाएगी नई चेतावनी प्रणाली

योगेश कुमार गोयल

गत दिनों देशभर में लाखों स्मार्टफोन अचानक तेज अलार्म जैसी आवाज के साथ गूंज उठे, जिसने सभी को चौंका दिया। यह कोई साधारण नोटिफिकेशन नहीं था, बल्कि एक तीखी 'एसओएस' जैसी ध्वनि थी, जिसके साथ स्क्रीन पर एक सरकारी अलर्ट प्रदर्शित हो रहा था। यह भारत सरकार द्वारा विकसित स्वदेशी 'सेल ब्राडकास्ट सिस्टम' का परीक्षण था, जो आपदा प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत देता है। इस परीक्षण ने यह स्पष्ट कर दिया कि भविष्य में आपदाओं के दौरान सूचना प्रसारण का तरीका पूरी तरह बदलने वाला है। दूरसंचार विभाग और राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) द्वारा विकसित यह तकनीक भूकंप, बाढ़ और चक्रवात जैसी आपदाओं के समय 'लाइफ-सेवर' साबित होगी।

सेल ब्राडकास्ट सिस्टम (सीबीएस) एक मोबाइल संचार तकनीक है, जो किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र में मौजूद सभी मोबाइल उपकरणों पर एक साथ संदेश भेज सकती है। इसे 'डिजिटल लाउडस्पीकर' के रूप में समझा जा सकता है। यह पारंपरिक एसएमएस की तरह नहीं है, जहां संदेश एक-एक नंबर पर भेजा जाता है। सेल ब्राडकास्ट सीधे मोबाइल टावर से पूरे क्षेत्र में 'पुश' किया जाता है, जिससे हजारों लोग एक साथ अलर्ट प्राप्त कर लेते हैं। यदि आप उस टावर की सीमा में हैं, तो संदेश तुरंत मिलेगा, चाहे नेटवर्क व्यस्त हो या इंटरनेट काम न कर रहा हो। जब कोई आपातकालीन संदेश जारी किया जाता है, तो वह किसी विशेष मोबाइल नंबर पर नहीं, बल्कि एक पूरे क्षेत्र में प्रसारित होता है। भारतीय मौसम विभाग या एनडीएमए संभावित खतरे की पहचान करते हैं और संबंधित क्षेत्र को चिह्नित करते हैं। फिर आपदा से जुड़ा संदेश दूरसंचार आपरेटरों के माध्यम से उस क्षेत्र के मोबाइल टावरों को भेजा जाता है। फिर टावर की रेंज में मौजूद हर मोबाइल, चाहे उसमें सिम हो या न हो, एक तेज बीप और वाइब्रेशन के साथ संदेश प्रदर्शित करता है।

> सेल ब्राडकास्ट तकनीक केवल एक संदेश सेवा नहीं हैं, बल्कि यह डिजिटल युग का सुरक्षा कवच हैं

सेल ब्राडकास्ट तकनीक कई विकसित देशों में पहले से उपयोग में है। उदाहरण के लिए, इजरायल में यह प्रणाली नागरिकों को मिसाइल हमलों के दौरान तुरंत चेतावनी देती है। अमेरिका, जापान और यूरोप के कई देशों में भी इसी तरह के अलर्ट सिस्टम सक्रिय हैं। भारत के लिए यह तकनीक अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह आपदा-संवेदनशील देश है। समय पर चेतावनी देना हजारों जानें बचा सकता है। यदि आपका फोन ऐसे क्षेत्र में है, जहां मोबाइल टावर का कोई सिग्नल नहीं है, तो अलर्ट नहीं मिलेगा। भारत सरकार का लक्ष्य इस तकनीक को देश के कोने-कोने तक पहुंचाना है। सेल ब्राडकास्ट तकनीक केवल एक संदेश सेवा नहीं है, बल्कि यह डिजिटल युग का सुरक्षा कवच है, जो जान-माल के नुकसान को कम कर सकता है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

मेलबाक्स

बैंकिंग कार्यप्रणाली में सुधार जरूरी

'नागरिकों की समस्या बढ़ाते जटिल नियम' शीर्षक से प्रकाशित डा. ब्रजेश कुमार तिवारी का आलेख पढ़ा। लेखक द्वारा बैंकिंग प्रणाली में खामियों के समाधान के लिए जो उपाय सुझाए गए हैं, सराहनीय हैं। इन पर बैंक अथारिटी को गंभीरता से विचार करना चाहिए। इस अव्यवस्था के शिकार केवल सुदूर गांव में रहने वाले आदिवासी, अशिक्षित और वरिष्ठ नागरिक ही नहीं हैं, बल्कि शहरी शिक्षित नागरिक भी हैं। इसका एक उदाहरण मेरा व्यक्तिगत अनुभव है। मेरा और मेरी पत्नी का सार्वजनिक क्षेत्र के एक बैंक में खाता था। कुछ साल पहले मैंने इसी खाते के आधार पर एक फिक्स्ड डिपाजिट (एफडी) भी केवल अपने हस्ताक्षर से खुलवाया। उस समय बैंक ने न तो कोई आपत्ति जताई और न ही मेरी पत्नी के हस्ताक्षर आवश्यक बताए। दुर्भाग्यवश, नवंबर 2024 में मेरी पत्नी का निधन हो गया। कुछ महीनों बाद जब मैं एफडी को अपने नाम कराने और उत्तराधिकारी का नाम दर्ज कराने बैंक गया, तो बैंक ने यह कहते हुए मना कर दिया कि खाता दोनों हस्ताक्षरों से नहीं खोला गया है। इसके लिए मुझसे लीगल सर्टिफिकेट और सभी उत्तराधिकारियों का अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) मांगा गया, जिसकी प्रक्रिया अत्यंत जटिल है। मैंने बैंक को लिखित शिकायत दी और यह स्पष्ट किया कि इसमें मेरी कोई गलती नहीं है। बैंक ने भी भारतीय रिजर्व बैंक के 2011 और उसके बाद जारी निर्देशों का पालन नहीं किया, जिनके अनुसार ई या एस मोड में खाते खोलते समय ग्राहकों की उचित काउंसिलिंग और दोनों खाताधारकों के हस्ताक्षर सुनिश्चित किए जाने चाहिए, ताकि भविष्य में ऐसी समस्या उत्पन्न न हो। यह दर्शाता है कि बैंकिंग प्रणाली में नियमों के साथ-साथ उनकी कार्यप्रणाली में भी सुधार की आवश्यकता है।

श्रीभगवान भारद्वाज, बहादुरगढ़, हरियाणा

सकारात्मक बदलाव की उम्मीद

बंगाल में राजनीतिक हिंसा, कटुता और ध्रुवीकरण जैसे मुद्दे लंबे समय से चर्चा में रहे हैं। यदि चुनावों के बाद भी यह प्रवृत्ति बनी रहती है, तो यह केवल सत्ता परिवर्तन तक सीमित प्रक्रिया बनकर रह जाएगी। भाजपा ने अपने चुनावी अभियान में राजनीतिक हिंसा को समाप्त करने का वादा किया था। ऐसे में उस पर यह जिम्मेदारी और दबाव स्वाभाविक रूप से बढ़ जाता है कि वह राज्य की राजनीतिक संस्कृति में सकारात्मक बदलाव लाए। दरअसल किसी भी राज्य के विकास की दिशा काफी हद तक उसकी राजनीतिक संस्कृति पर निर्भर करती है। यदि माहौल भय, हिंसा और अविश्वास से भरा हो, तो विकास की गति प्रभावित होती है। अब देखने वाली बात यह होगी कि क्या बंगाल की राजनीति एक अधिक शांत, संवादपरक और लोकतांत्रिक दिशा में आगे बढ़ती है या नहीं। यह भी महत्वपूर्ण है कि केंद्र में सत्तारूढ़ दल होने के कारण भाजपा के पास संसाधन और अवसर अधिक हैं, जिनका उपयोग वह सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए कर सकती है।

मुकेश कुमार मनन, पटना

खतरे में उपभोक्ताओं की सुरक्षा

गर्मियों के आगमन के साथ आग लगने की घटनाओं में तेजी आना चिंताजनक है। विशेष रूप से एसी ब्लास्ट और शार्ट सर्किट जैसी घटनाएं बार-बार सामने आ रही हैं, जिनसे जान-माल का भारी नुकसान हो रहा है। बिजली उपकरणों की घटती गुणवत्ता और सुरक्षा मानकों की अनदेखी का परिणाम है। इस स्थिति का मुख्य कारण निम्न गुणवत्ता वाले उत्पादों का निर्माण और उनका बिना पर्याप्त जांच के बाजार में आना है। नियम-कानून मौजूद होने के बावजूद उनका प्रभावी क्रियान्वयन नहीं हो पा रहा है। इससे उपभोक्ताओं की सुरक्षा खतरे में पड़ रही है। आवश्यकता है कि गुणवत्ता मानकों का सख्ती से पालन सुनिश्चित किया जाए, संबंधित संस्थाएं अधिक सक्रिय हों और कंपनियों की जवाबदेही तय की जाए। आम लोगों को भी बिजली उपकरणों के उपयोग में सावधानी बरतनी चाहिए।

हिमांशु शेखर, केसपा, गयाजी

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें:

दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: response@jagran.com

संस्थापक- स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा-201309 से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

गोदरेज प्रापर्टीज का शुद्ध लाभ 70 प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली : रियल एस्टेट फर्म गोदरेज प्रापर्टीज ने सोमवार को बताया कि बीते वित्त वर्ष की चौथी तिमाही (जनवरी-मार्च 2026) में उसका शुद्ध लाभ 70 प्रतिशत घटकर 649.88 करोड़ रुपये रहा है। इसमें घरों की मजबूत मांग के बीच उच्च आय का प्रमुख योगदान रहा है। पिछले वर्ष समान अवधि में कंपनी को 381.99 करोड़ रुपये का लाभ हुआ था। पूरे वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान कंपनी का शुद्ध लाभ बढ़कर 1,850.20 करोड़ रुपये रहा है। (प्रेट्र)

भारत को ऊर्जा, भोजन, उर्वरक, धातु और महत्वपूर्ण खनिजों जैसे क्षेत्रों में प्रमुख आर्थिक कमजोरियों की पहचान और निगरानी करनी चाहिए ताकि भविष्य में पश्चिम एशिया जैसे संकट का प्रभाव कम किया जा सके।

– एस. महेंद्र देव, पीएम की आर्थिक सलाहकार परिषद के चेयरमैन

सेंसेक्स	77,269.40	▲ 355.90
निफ्टी	24,119.30	▲ 121.75
सोना प्रति दस ग्राम	₹ 1,52,800	▼ ₹ 2,000
चांदी प्रति किलो ग्राम	₹ 2,49,500	▲ ₹ 6,800
डालर	₹ 95.23	▼ ₹ 0.39
क्रूड प्रति बैरल	$ 109.8	

एक नजर में

बीती तिमाही में भेल को 1,290 करोड़ का लाभ

नई दिल्ली: सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी भेल ने सोमवार को बताया कि जनवरी-मार्च 2026 तिमाही में उसका शुद्ध लाभ 2.5 गुना बढ़कर 1,290.47 करोड़ रुपये रहा है। इसमें बिजली क्षेत्र के राजस्व में वृद्धि का प्रमुख योगदान रहा है। पिछले वर्ष समान अवधि में कंपनी को 504.45 करोड़ रुपये का लाभ हुआ था। बीते वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान कंपनी का कुल लाभ 1,600.26 करोड़ रुपये रहा है, जो इससे पिछले वित्त वर्ष में 533.90 करोड़ रुपये था। कंपनी बोर्ड ने 1.40 रुपये प्रति शेयर के लाभांश को मंजूरी दी है। (प्रेट्र)

अप्रैल में बजाज आटो की बिक्री 40 प्रतिशत बढ़ी

नई दिल्ली: दोपहिया-तिपहिया निर्माता बजाज आटो ने सोमवार को बताया कि अप्रैल में उसकी कुल बिक्री 40 प्रतिशत बढ़कर 5,13,792 इकाई रही है। अप्रैल 2025 में कंपनी की कुल वाहन बिक्री 3,65,810 इकाई रही थी। कंपनी ने बताया कि पिछले महीने उसकी घरेलू बिक्री 13 प्रतिशत बढ़कर 2,48,210 इकाई रही है, जबकि निर्यात 83 प्रतिशत बढ़र 2,65,582 इकाई रहा है। घरेलू बाजार में दोपहिया की बिक्री 11 प्रतिशत बढ़कर 2,10,063 इकाई और निर्यात 78 प्रतिशत बढ़कर 2,29,890 इकाई रहा है। (प्रेट्र)

अप्रैल में यूपीआइ के जरिये 22.35 अरब लेनदेन

नई दिल्ली: वित्तीय सेवा विभाग ने सोमवार को बताया कि अप्रैल में यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआइ) के जरिये कुल 22.35 अरब लेनदेन हुए हैं। इसमें अप्रैल 2025 के 17.89 अरब के मुकाबले 25 प्रतिशत की वृद्धि रही है। इसी वर्ष मार्च में रिकार्ड 22.64 करोड़ यूपीआइ लेनदेन हुए थे। विभाग ने एक एक्स पोस्ट में कहा कि भारत में होने वाले सभी डिजिटल लेन-देन में यूपीआइ की हिस्सेदारी लगभग 85 प्रतिशत है और यह दुनियाभर में होने वाले लगभग 50 प्रतिशत रियल-टाइम डिजिटल भुगतानों को संचालित करता है। (प्रेट्र)

अप्रैल में भी एलपीजी की खपत 16 प्रतिशत घटी

ईरान युद्ध के कारण आपूर्ति संबंधी बाधाओं से पिछले महीने कुकिंग गैस की खपत 22 लाख टन रही

- मार्च 2026 में एलपीजी की खपत 13 प्रतिशत घटकर 23.79 लाख टन रही थी
- पिछले महीने पेट्रोल की बिक्री 6.36 प्रतिशत बढ़कर 36.7 लाख टन पर पहुंची

नई दिल्ली, प्रेट्र : ईरान युद्ध के कारण आपूर्ति बाधाओं में आई रुकावटों के चलते अप्रैल में भी कुकिंग गैस या एलपीजी की खपत में वार्षिक आधार पर 16 प्रतिशत की भारी गिरावट आई है। तेल मंत्रालय के अधीन पेट्रोलियम प्लानिंग एंड एनालिसिस सेल (पीपीएसी) के आंकड़ों के अनुसार, पिछले महीने एलपीजी की खपत घटकर 22 लाख टन रही है, जो अप्रैल 2025 में 26.2 लाख टन थी। इसी वर्ष मार्च में भी एलपीजी की खपत 13 प्रतिशत घटकर 23.79 लाख टन रही थी।

भारत अपनी जरूरत की करीब 60 प्रतिशत एलपीजी आयात करता है। इसका ज्यादातर हिस्सा होर्मुज जलडमरूमध्य के रास्ते आता है। अमेरिका और इजरायल द्वारा ईरान पर किए गए हमलों और उसके जवाब में तेहरान की जवाबी कार्रवाई के बाद यह रास्ता लगभग बंद हो गया था। सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात से सप्लाई में रुकावट आने के कारण सरकार ने घरेलू कुकिंग गैस की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए होटलों और उद्योगों जैसे कमर्शियल संस्थानों को होने वाली आपूर्ति में कटौती कर दी है। इसके अलावा, दो रिफिल के बीच के अंतराल को बढ़ाकर घरों में होने वाली सप्लाई को भी नियंत्रित किया गया। हाल के वर्षों में एलपीजी की खपत में लगातार बढ़ोतरी हुई है। इसका मुख्य कारण सरकार द्वारा लकड़ी और अन्य प्रदूषण फैलाने वाले ईंधनों की जगह स्वच्छ विकल्पों को बढ़ावा देने के प्रयास हैं।

युद्ध के कारण कई खाड़ी देशों में हवाई क्षेत्र बंद होने और उड़ानों के स्थगित होने से अप्रैल में विमान ईंधन या एटीएफ की खपत पिछले साल की तुलना में 1.37 प्रतिशत घटकर 761,000 टन रह गई। मासिक आधार पर भी इसमें गिरावट आई और यह मार्च की बिक्री 807,000 टन से कम है।

पिछले महीने डीजल की बिक्री में मामूली वृद्धि

युद्ध से प्रभावित इन दो ईंधनों के अलावा पिछले महीने डीजल की बिक्री में भी नरमी देखने को मिली और केवल 0.25 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ इसकी बिक्री 82.82 लाख टन रही। मार्च में डीजल की बिक्री में 8.1 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई थी और यह 87.27 लाख टन तक पहुंच गई थी। अप्रैल में पेट्रोल की बिक्री में 6.36 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई और यह 36.7 लाख टन तक पहुंच गई। यह वृद्धि मार्च में हुई 7.6 प्रतिशत की बढ़त (जो 37.8 लाख टन थी) से कम रही।

अप्रैल में पाम तेल आयात 27 प्रतिशत घटा

मुंबई, प्रेट्र: इस वर्ष अप्रैल में पाम तेल आयात में 27 प्रतिशत की गिरावट रही है और यह एक वर्ष के निचले स्तर पर पहुंच गया है। डीलरों के अनुसार, पिछले महीने पाम तेल आयात घटकर 5.05 लाख टन रह गया है जो अप्रैल 2025 के बाद का सबसे निचला स्तर है। मार्च 2026 में 6.89 लाख टन पाम तेल का आयात किया गया था। डीलर्स का कहना है कि इस गिरावट की वजह संस्थागत खरीदारों की ओर से सुस्त मांग और हाल ही में कीमतों में आई तेजी है। इसने पाम तेल को अन्य प्रतिस्पर्धी तेलों के मुकाबले मिलने वाली छूट को कम कर दिया और रिफाइनरों ने इसकी खरीद में कटौती कर दी। अप्रैल में सोयाबीन तेल का आयात मासिक आधार पर 24 प्रतिशत बढ़कर 355,000 टन हो गया, जो चार महीनों में सबसे अधिक है। सूरजमुखी तेल का आयात दोगुना से भी अधिक बढ़कर 4.35 लाख टन रहा है, जो 22 महीनों में सबसे अधिक है। अनुमान के अनुसार, अप्रैल में कुल खाद्य तेल आयात मासिक आधार पर 10.4 प्रतिशत बढ़कर 13 लाख टन रहा है, जो जनवरी 2026 के बाद सबसे अधिक है।

चालू वित्त वर्ष में बजट आवंटन से ज्यादा होगा उर्वरक सब्सिडी बिल

नई दिल्ली, प्रेट्र: चालू वित्त वर्ष 2026-27 के लिए सरकार का उर्वरक सब्सिडी बिल 1.71 लाख करोड़ रुपये के बजटीय आवंटन से ज्यादा हो सकता है। इसकी वजह पश्चिम एशिया में चल रहे संकट के कारण आयातित यूरिया और दूसरे उर्वरकों की बढ़ती कीमतें हैं।

उर्वरक विभाग की अतिरिक्त सचिव अपर्णा एस शर्मा ने सोमवार को अंतर-मंत्रालयी ब्रीफिंग में कहा, 'हम जानते हैं कि कीमतें बढ़ी हैं। यूरिया और दूसरे उर्वरकों, दोनों की कीमतों में बढ़ोतरी का रुझान दिख रहा है। निश्चित रूप से सब्सिडी बिल में बढ़ोतरी होगी, लेकिन अभी हम कुछ नहीं कह सकते।' सप्लाई चेन में आई रुकावटों के बावजूद खरीफ 2026 सीजन के लिए उर्वरकों की उपलब्धता 'मजबूत और स्थिर' बनी हुई है।

बिजनेस से जुड़ी खबरों और अपडेट के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

ईंधन कंपनियों को नहीं मिलेगी आर्थिक मदद

नई दिल्ली, प्रेट्र : पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय में संयुक्त सचिव सुजाता शर्मा ने कहा कि तेल वितरण कंपनियों को पेट्रोल, डीजल और विमान ईंधन की बिक्री पर हो रहे नुकसान के लिए उनको मदद देने का कोई प्रस्ताव सरकार के पास नहीं है। सरकारी तेल कंपनियों इंडियन आयल कारपोरेशन, भारत पेट्रोलियम कारपोरेशन और हिंदुस्तान पेट्रोलियम कारपोरेशन को पेट्रोल और डीजल की बिक्री पर भारी नुकसान हो रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने खुदरा दरों में बदलाव पर चार साल से लगी रोक को जारी रखा है, जबकि दो महीने पहले पश्चिम एशिया में शुरू हुए संघर्ष के बाद से कच्चे तेल की कीमतें तेजी से बढ़ी हैं। इसके अलावा, दो दशकों से भी ज्यादा समय में पहली बार पिछले महीने से उन्हें विमान ईंधन या एटीएफ पर भी नुकसान होने लगा है।

मैन्यूफैक्चरिंग उत्पादन में पिछले महीने रहा मामूली सुधार

नई दिल्ली, प्रेट्र: नए कारोबारी आर्डर और उत्पाद में वृद्धि के चलते पिछले महीने मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्र की गतिविधियों में मामूली सुधार रहा है। हालांकि, बढ़ोतरी की दर लगभग चार वर्षों में दूसरी बार सबसे कमजोर रही है। अप्रैल में एचएसबीसी इंडिया का मैन्यूफैक्चरिंग परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (पीएमआइ) 54.7 रहा है, जो इसी वर्ष मार्च में 53.9 था।

एचएसबीसी मैन्यूफैक्चरिंग पीएमआइ कुल स्थितियों का एक पैमाना है, जो नए आर्डर, उत्पादन, रोजगार, सप्लायर डिलीवरी के समय और खरीदे गए स्टाक जैसे पैमानों से निकाला जाता है। एचएस एचएसबीसी इंडिया की मुख्य अर्थशास्त्री प्रांजुल भंडारी ने कहा कि पश्चिम एशिया संघर्ष के असर अब ज्यादा साफ तौर पर दिख रहे हैं। इनपुट लागत अगस्त 2022 के बाद से सबसे तेज गति से बढ़ी है।

चुनाव परिणामों से इंट्रा-डे में 997 अंक तक उछला सेंसेक्स

दिनभर के कारोबार के बाद 355 अंक बढ़कर बंद हुआ बीएसई सूचकांक, निफ्टी 121 अंक बढ़कर 24 हजार के पार पहुंचा

मुंबई, प्रेट्र: राज्यों में उम्मीद के अनुरूप चुनाव परिणाम रहने और बड़ी कंपनियों के शेयरों की खरीदारी की बदौलत सोमवार को बीएसई का मानक सूचकांक सेंसेक्स इंट्रा-डे में 997.25 अंक बढ़कर 77,910.75 के उच्च स्तर तक पहुंचा। हालांकि, दिनभर के कारोबार के बाद यह 355.90 अंक की वृद्धि के साथ 77,269.40 पर बंद हुआ। एनएसई का निफ्टी 121.75 अंक की बढ़त के साथ 24,119.30 पर बंद हुआ।

सेंसेक्स में अदाणी पोर्ट्स, हिंदुस्तान यूनिलीवर, रिलायंस, लार्सन एंड टूब्रो, एटरनल और मारुति में बढ़त रही। दूसरी ओर, भारती एयरटेल, कोटक महिंद्रा बैंक, टीसीएस और आइटीसी में गिरावट रही। जियोजित इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा कि निवेशकों की भावना बंगाल में अनुकूल चुनाव परिणामों और चौथी तिमाही की अपेक्षा से बेहतर आय के कारण मजबूत रही। कच्चे तेल 110 डालर प्रति बैरल से नीचे हो, जो निकट अवधि में राहत प्रदान कर रहा है।

6,800 रुपये बढ़ी चांदी

नई दिल्ली, प्रेट्र: ज्वेलर और स्टाकिस्ट की ओर से ताजा खरीदारी के कारण सोमवार को दिल्ली में चांदी की कीमत 6,800 रुपये बढ़कर 2,49,500 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई। हालांकि, सोने में दो हजार रुपये की गिरावट रही और यह 1,52,800 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया।

कमोडिटी डेरिवेटिव्स में निवेश के पक्ष में नहीं आरबीआइ-इरडा

मुंबई, प्रेट्र : सेबी चेयरमैन तुहिन कांत पांडे ने सोमवार को कहा कि बैंकिंग नियामक आरबीआइ और बीमा नियामक इरडा बैंकों और बीमा कंपनियों को कमोडिटी डेरिवेटिव्स में निवेश करने की अनुमति देने के पक्ष में नहीं हैं।

मुंबई में आइएमसी कैपिटल मार्केट कान्फ्रेंस के दौरान पांडे ने कहा कि इसके लिए आरबीआइ और इरडा के पास कुछ वैध तर्क भी हैं। उन्होंने कहा कि पेंशन नियामक पीएफआरडीए ने भी पेंशन फंड्स को कमोडिटी डेरिवेटिव्स में निवेश करने की अनुमति देने पर विचार किया था, लेकिन उन्होंने यह नहीं बताया कि क्या इस पर कोई फैसला लिया गया है। पांडे ने कहा कि सेबी जल्दी ही एंथ्रोपिक के एआइ माडल माइथोस और अन्य एआइ टूल्स से पैदा होने वाले नए जोखिमों के बारे में मार्केट इंटरमीडियरीज के लिए एक एडवाइजरी जारी करेगा।

जेएएल मामले में वेदांता की याचिका खारिज

- एनसीएलएटी ने कहा, वेदांता की ओर से उठाए गए मुद्दों में कोई योग्यता नहीं
- अदाणी समूह ने 14,535 करोड़ रुपये में किया है जेएएल का अधिग्रहण

नई दिल्ली, प्रेट्र: अदाणी समूह की ओर से कर्ज में डूबी रियल एस्टेट कंपनी जयप्रकाश एसोसिएट्स लिमिटेड (जेएएल) के अधिग्रहण का रास्ता साफ हो गया है। इसका कारण यह है कि नेशनल कंपनी ला अपीलेट ट्रिब्यूनल (एनसीएलएटी) ने अदाणी समूह की बोली को चुनौती देने वाली वेदांता समूह की याचिका खारिज कर दी है। जेएएल की संपत्तियों में भारत का एकमात्र फार्मूला वन सर्किट भी शामिल है।

एनसीएलएटी को वेदांता की ओर से उठाए गए मुद्दों में कोई योग्यता नहीं दिखी और इसकी दो याचिकाओं को खारिज कर दिया। न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) अशोक भूषण और तकनीकी सदस्य बरुण मित्रा की एक बेंच ने कहा कि क्रेडिटर्स की समिति (सीओसी) ने अदाणी समूह की 14,535 करोड़ रुपये की बोली को वेदांता की समाधान योजना पर प्राथमिकता देने में सही निर्णय लिया है। सीओसी के फैसले को नेशनल कंपनी ला ट्रिब्यूनल (एनसीएलटी) ने मंजूरी दी थी, जिसके खिलाफ वेदांता समूह ने एनसीएलएटी ने अपील की थी। एनसीएलएटी ने कहा कि एनसीएलटी के निर्णय में हस्तक्षेप करने के लिए वेदांता द्वारा कोई आधार नहीं प्रस्तुत किया गया है। याचिका में कोई योग्यता नहीं है। दोनों याचिकाएं खारिज की जाती हैं। कोई आदेश पारित नहीं किया जाएगा।

एनसीएलएटी ने कहा कि सीओसी का निर्णय ''समग्र विचार पर आधारित था और इसे व्यावसायिक बुद्धिमत्ता में लिया गया था। जेएएल को जून 2024 में दिवालियापन कार्यवाही के लिए स्वीकार किया गया था, जब यह 57,000 करोड़ रुपये से अधिक के बैंक कर्ज का भुगतान करने में असफल रही थी। समाधान प्रक्रिया में 28 बोलियां आईं। अंतिम बोलीदाताओं में वेदांता, अदाणी एंटरप्राइजेज और अन्य शामिल थे। अदाणी और वेदांता अग्रणी के रूप में उभरे। इसमें अदाणी को प्रस्ताव को अग्रिम वसूली और समग्र मूल्य में प्राथमिकता दी गई। सीओसी ने नवंबर 2025 में अदाणी की योजना को मंजूरी दी थी।

वेदांता ने तर्क दिया कि प्रक्रिया में पारदर्शिता की कमी थी और इसका संशोधित बोली उच्च मूल्य प्रदान करती थी। क्रेडिटर्स ने जवाब दिया कि संशोधित प्रस्ताव केवल तब प्रस्तुत किया गया, जब वेदांता को पता चला कि यह जीतने वाली बोली से पीछे है।

राष्ट्रीय फलक

एफआइआर के लिए सीधे हाईकोर्ट का रुख नहीं, सुप्रीम कोर्ट का फैसला

कहा - अगर पुलिस एफआइआर दर्ज नहीं करती तो पहले वैकल्पिक कानूनी रास्तों का पालन करना अनिवार्य

नई दिल्ली, प्रेट्र : न्याय की तलाश में अक्सर लोग भावुकता और जल्दबाजी में सीधे उच्च न्यायालयों का दरवाजा खटखटाते हैं, विशेषकर जब पुलिस प्राथमिकी दर्ज करने में आनाकानी करे। लेकिन सर्वोच्च न्यायालय ने एक महत्वपूर्ण फैसले में स्पष्ट किया है कि न्याय की सीढ़ियां लांघी नहीं जा सकतीं। इसने कहा कि यदि पुलिस एफआइआर दर्ज नहीं करती, तो सीधे उच्च न्यायालय जाने के बजाय नागरिक को पहले कानून द्वारा निर्धारित वैकल्पिक कानूनी रास्तों का पालन करना अनिवार्य है।

असाधारण अधिकार क्षेत्र का विवेकपूर्ण उपयोग : न्यायमूर्ति संजय करोल व न्यायमूर्ति आगस्टीन जार्ज मसीह की पीठ ने संविधान के अनुच्छेद 226 की व्याख्या करते हुए कहा कि उच्च न्यायालयों के पास रिट जारी करने की शक्ति व्यापक तो है, लेकिन यह 'असाधारण' व 'विवेकाधीन' है। स्पष्ट किया कि केवल इसलिए कि किसी अधिकारी ने लापरवाही बरती है, उच्च न्यायालय को सीधे हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। जब तक कि स्थिति अत्यंत गंभीर या आपातकालीन न हो, तब तक कानूनी ढांचे के भीतर उपलब्ध विकल्पों को दरकिनार करना न्यायिक मर्यादा के अनुकूल नहीं है। सर्वोच्च न्यायालय ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस), 2023 का हवाला देते हुए व्यवस्थित क्रम समझाया।

सुप्रीम कोर्ट।

स्थिति गंभीर न हो तो विकल्पों को दरकिनार करना न्यायिक मर्यादा के अनुकूल नहीं

उत्तर प्रदेश और बिहार में आंधी-बारिश और वज्रपात का कहर, 44 लोगों की मौत

जागरण टीम, नई दिल्ली

- मौसम के कारण जनजीवन अस्त-व्यस्त, फसलों को भी भारी नुकसान पहुंचा
- लखनऊ से गोरखपुर तक तबाही, दीवार, पेड़ और बिजली गिरने से हुए हादसे

सोमवार को तेज आंधी, बारिश, ओलावृष्टि और वज्रपात ने भारी तबाही मचाई। इस कारण हुए हादसों में उत्तर प्रदेश में 24 और बिहार में 20 लोगों की मौत हो गई। बड़ी संख्या में लोग जख्मी हो गए। मौसम के कारण जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया और फसलों को भी भारी नुकसान पहुंचा। आंधी से बिजली के खंभे गिरने और तार टूटने से सैकड़ों गांवों की आपूर्ति ठप हो गई। इससे कई जगह सड़कें बाधित रहीं और आम, गेहूं व सब्जियों की फसल को भारी नुकसान पहुंचा।

उत्तर प्रदेश में भीषण गर्मी के बीच पिछले एक सप्ताह से रुक-रुककर वर्षा का दौर जारी है। सोमवार को लखनऊ समेत करीब 50 से अधिक जिलों में सुबह साढ़े आठ बजे के आसपास आसमान में काले बादल छा गए और सुबह साढ़े आठ बजे ही अंधेरा छा गया। गरज-चमक के साथ तेज हवा और बारिश होने लगी। इस दौरान सड़कों पर चलने वाले वाहनों को लाइट जलानी पड़ी। मौसम विभाग के अनुसार, मंगलवार और बुधवार को प्रदेश के पूर्वी से लेकर पश्चिमी हिस्सों तक तेज आंधी, मध्यम से भारी बारिश और ओलावृष्टि का अलर्ट जारी किया है। 60 जिलों में आरेंज अलर्ट घोषित किया गया है। 40 से अधिक जिलों में वज्रपात की भी चेतावनी जारी की गई है।

दोनों उप मुख्यमंत्रियों को लेकर आ रहा विमान आंधी-पानी में फंसा

सोमवार सुबह मौसम खराब होने के कारण दिल्ली से लखनऊ आ रहे उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक और केशव प्रसाद मौर्य का विमान फंस गया। विमान को भोपाल डायवर्ट किया गया। मौसम ठीक होने के बाद सोमवार दोपहर 12:27 बजे विमान लखनऊ पहुंच सका। इसके अलावा दो अन्य विमान भी हवा में चक्कर काटते रहे। वहीं, दिल्ली में खराब मौसम के कारण दृश्यता कम हो गई। इससे रविवार रात 11 से तड़के तीन बजे तक 15 विमानों को लखनऊ डायवर्ट किया गया। यह विमान एक के बाद एक चौधरी चरण सिंह अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर उतरे। मौसम ठीक होने के बाद इन विमानों को दिल्ली के लिए रवाना किया गया।

सरकार ने पेट्रोल, डीजल, एलपीजी की कीमतें नहीं बढ़ाने का दिया भरोसा

- स्थिर और निर्बाध बनी हुई है एलपीजी और ईंधन की आपूर्ति

नई दिल्ली, एएनआइ: सरकार ने सोमवार को यह भरोसा दिया कि पश्चिम एशिया में तनाव के बावजूद घरेलू एलपीजी और ईंधन की आपूर्ति स्थिर और निर्बाध बनी हुई है। पेट्रोल, डीजल और एलपीजी सिलिंडरों की खुदरा कीमतें बढ़ाने की फिलहाल कोई योजना नहीं है। सरकार ने यह भी बताया कि घरेलू एलपीजी की आपूर्ति सामान्य है और रविवार को इसके लिए आनलाइन बुकिंग बढ़कर 99 प्रतिशत हो गई।

पेट्रोलियम मंत्रालय के अधिकारियों ने एक अंतर-मंत्रालयी ब्रीफिंग में बताया कि खुदरा आउटलेट पर एलपीजी की कोई किल्लत नहीं है। जबकि एलपीजी के लिए आइनलाइन बुकिंग अब तक के सबसे उच्चतम स्तर पर है। जबकि ईंधन के मामले में अधिकारियों ने इस बात की पुष्टि की है कि पेट्रोल और डीजल की खुदरा कीमतें अपरिवर्तित हैं।

कच्चे तेल का भंडार पर्याप्त रूप से बनाए रखा गया है। जबकि रिफाइनरियां अपनी अधिकतम क्षमता के साथ काम कर रही हैं। साथ ही यह माना कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल, एलपीजी और प्राकृतिक गैस की कीमतें तेजी से बढ़ी हैं।

एलएनजी के भंडारण टैंक की संख्या बढ़ाने की तैयारी

प्रेट्र के अनुसार, पश्चिम एशिया में तनाव और बढ़ते जोखिमों के बीच भारत अपनी ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाने के लिए तरलीकृत प्राकृतिक गैस (एलएनजी) के भंडारण के लिए नए टैंक बनाने की तैयारी में है। पेट्रोनेट एलएनजी लिमिटेड के एक शीर्ष अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। भारत अपनी प्राकृतिक गैस जरूरतों का करीब 50 प्रतिशत हिस्सा आयात करता है।

सशस्त्र बल न्यायाधिकरण में रिक्तियों पर सुप्रीम कोर्ट ने मांगा केंद्र से जवाब

नई दिल्ली, प्रेट्र : सशस्त्र बल न्यायाधिकरण (एएफटी) में रिक्तियों पर संज्ञान लेते हुए सुप्रीम कोर्ट ने एक याचिका पर सोमवार को केंद्र सरकार और अन्य से जवाब तलब किया। याचिका में समयबद्ध तरीके से चयन प्रक्रिया पूरी करने और रिक्त पदों को भरने की मांग की गई है।

प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत एवं जस्टिस जोयमाल्या बागची की पीठ ने याचिका पर सुनवाई करने पर सहमति व्यक्त की और अटार्नी जनरल आर. वेंकटरमणी से इस मामले में सहायता करने का अनुरोध किया। पीठ ने याचिकाकर्ता आर्म्ड फोर्सेज ट्रिब्युनल बार एसोसिएशन (रीजनल बेंच) के वकील से याचिका की एक प्रति अटार्नी जनरल के कार्यालय को भी सौंपने को कहा। इसके बाद पीठ ने मामले की सुनवाई दो सप्ताह बाद के लिए स्थगित कर दी।

शराब घोटाले में मैनपावर के नाम पर 115 करोड़ का गबन, सात गिरफ्तार

राज्य ब्यूरो, नईदुनिया • रायपुर

3,200 करोड़ रुपये के शराब घोटाले से जुड़े मैनपावर घोटाले में राज्य आर्थिक अपराध अन्वेषण ब्यूरो (ईओडब्ल्यू) की टीम ने सात आरोपितों को गिरफ्तार किया है। शनिवार को विशेष न्यायालय ने आरोपितों को 11 मई तक न्यायिक अभिरक्षा पर ईओडब्ल्यू को सौंपने का आदेश दिया।

गिरफ्तार आरोपित हरियाणा, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के निवासी हैं। ईओडब्ल्यू की जांच में सामने आया है कि छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड (सीएसएमसीएल) में प्लेसमेंट और मैनपावर एजेंसियों के माध्यम से ओवरटाइम भत्ते के नाम पर बड़े पैमाने पर गड़बड़ी की गई। वर्ष 2019-2020 से 2023-24 के बीच फर्जी तरीके से भुगतान किया गया। जांच के अनुसार यह गबन 115 करोड़ रुपये से अधिक का है। एफआइआर के मुताबिक सीएसएमसीएल के तत्कालीन एमडी अरुणपति त्रिपाठी समेत अन्य ने मैनपावर एजेंसियों के साथ मिलकर सुनियोजित षड्यंत्र रचा था।

ये हुए गिरफ्तार

- नीरज चौधरी, सीए एवं सलाहकार, ईगल इंटर साल्यूशन लिमिटेड।
- अजय लोहिया, डायरेक्टर, अलर्ट कमांडोज प्राइवेट लिमिटेड।
- अमित मित्तल,चेयरमैन एवं डायरेक्टर, ए-टू-जेड इन्फ्रासर्विसेस लिमिटेड।
- अजीत दरंदले, डायरेक्टर।
- अमित प्रभाकर सालुंके, डायरेक्टर, सुमीत फैसिलिटीज लिमिटेड।
- राजीव द्विवेदी, डायरेक्टर, प्राइमवन वर्कफोर्स प्राइवेट लिमिटेड, संजीव जैन, डायरेक्टर, प्राइमवन वर्कफोर्स लिमिटेड।

वित्त वर्ष में संशोधित अनुमान से कम रहा प्रत्यक्ष कर संग्रह

नई दिल्ली, प्रेट्र: बीते वित्त वर्ष 2025-26 में केंद्र सरकार का शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह 5.12 प्रतिशत बढ़कर 23.40 लाख करोड़ रुपये रहा है। हालांकि, यह संशोधित अनुमान 24.21 लाख करोड़ रुपये था जिसमें कारपोरेट कर से 11.09 लाख करोड़ रुपये और व्यक्तिगत आयकर से 13.12 लाख करोड़ रुपये मिलने का अनुमान जताया गया था।

केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) की ओर से जारी डाटा के अनुसार, पिछले वित्त वर्ष में शुद्ध कारपोरेट कर संग्रह 10.99 लाख करोड़ रुपये और व्यक्तिगत आयकर 12.41 लाख करोड़ रुपये रहा है। आयकर में सिक्योरिटी ट्रांजेक्शन टैक्स (एसटीटी) भी शामिल है। वित्त वर्ष 2024-25 में शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह 22.26 लाख करोड़ रुपये रहा था। 2025-26 के दौरान रिफंड में 1.09 लाख करोड़ की कमी आई है और यह घटकर 4.71 लाख करोड़ रह गया है।

बिहार में नीट में धांधली कराने वाले एमबीबीएस छात्र समेत तीन गिरफ्तार

जागरण संवाददाता, नालंदा

- तीन मोबाइल, स्कार्पियो और कार जब्त, मास्टरमाइंड फरार

बिहार में नालंदा पुलिस ने नीट में धांधली कराने वाले गिरोह के तीन सदस्यों को गिरफ्तार किया है। इनमें एमबीबीएस छात्र भी शामिल हैं। सभी साल्वर गिरोह के सदस्य हैं। एक आरोपित एमबीबीएस द्वितीय वर्ष का छात्र है। आरोपितों के पास से दो लाख 95 हजार रुपये, तीन मोबाइल व स्कार्पियो और कार बरामद की गई है। उनके मोबाइल में नीट के फर्जी एडमिट कार्ड एवं विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रवेशपत्र मिले हैं।

राजगीर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सुनील कुमार सिंह ने सोमवार को बताया कि दो मई की रात करीब 1:45 बजे पुलिस को देखकर दो वाहन भागने लगे। तभी पुलिस ने घेरकर उन्हें दबोच लिया। पकड़े गए लोगों से पूछताछ की गई तो साल्वर गिरोह का पता चला। उसके मोबाइल से एडीईओ व बीएसएनएल समेत अन्य परीक्षाओं में धांधली के ठोस साक्ष्य मिले हैं। गिरफ्तार आरोपितों ने पूछताछ में बताया कि गिरोह का मास्टरमाइंड उज्ज्वल उर्फ राजा बाबू है। वह पावापुरी मेडिकल कालेज के 2022 बैच का छात्र है। उज्ज्वल पर पहले से केस दर्ज है। बता दें कि नीट-यूजी 2024 पेपरलीक में नालंदा के संजीव मुखिया का नाम सामने आया था।

गिरफ्तार बदमाश के साथ प्रेस कान्फ्रेंस करते डीएसपी।

स्पाइसजेट एयरलाइन की समीक्षा अर्जी खारिज, लगाया जुर्माना

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: केएएल एयरवेज और उसके प्रमोटर कलानिधि मारन के साथ चल रहे कानूनी विवाद में 144 करोड़ रुपये जमा करने के आदेश की समीक्षा की स्पाइसजेट एयरलाइन की मांग को दिल्ली हाई कोर्ट ने सोमवार को ठुकरा दिया।

न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद की पीठ ने स्पाइसजेट और इसके प्रमोटर अजय सिंह पर 50 हजार रुपये के जुर्माने के साथ याचिका खारिज कर दी। 19 जनवरी को हाई कोर्ट ने स्पाइसजेट और अजय सिंह को निर्देश दिया था कि वे 194 करोड़ रुपये की स्वीकार की गई देनदारी के बदले 144 करोड़ रुपये छह सप्ताह के भीतर रजिस्ट्री में जमा करें। 18 मार्च को जमा करने की समय-सीमा चार सप्ताह के लिए बढ़ा दी गई थी। अजय सिंह और उनकी एयरलाइन ने 18 मार्च के निर्देश पर कई आधारों पर पुनर्विचार की मांग की।

हिन्दुस्तान
1936
सत्य • सार्थक • सदैव

जनादेश का संदेश

चार राज्यों और एक केंद्रशासित प्रदेश में विधानसभा चुनावों के नतीजे इतने दिलचस्प आए हैं कि कई दिनों तक चर्चा जारी रहेगी। दोराय नहीं, पश्चिम बंगाल का चुनावी रण सबसे खास बन गया था और यहां भाजपा पहली बार अपनी जीत का ध्वज फहराने में कामयाब हुई है। भाजपा का केंद्रीय नेतृत्व बंगाल में जिस तरह पार्टी को मजबूत करने में लगा था, उसके नतीजे आ गए हैं। ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस के हाथ से सत्ता क्यों फिसली? इसके कुछ प्रमुख कारणों पर ध्यान देना चाहिए। अव्वल तो एसआईआर की जरूरत से ज्यादा आलोचना तृणमूल को भारी पड़ी है। संदेश यही गया कि तृणमूल संदिग्ध वोटर को बचाना चाहती है। नतीजा यह कि राज्य में रिकॉर्ड मतदान हुआ, जो भाजपा के पक्ष में गया। दूसरा कारण, सत्ता विरोधी लहर। लोग पंद्रह साल पुरानी सरकार को बदलना चाहते थे। तीसरा कारण, बांग्लादेश में हिंदुओं के साथ हुई हिंसा ने बंगाल में ध्रुवीकरण को बढ़ाया। धर्म विशेष के प्रति तृणमूल के ज्यादा झुकाव ने भद्रलोक को नाराज किया। कभी भद्रलोक की प्रतिनिधि रही दीदी की चमक धीरे-धीरे उतर गई। ऐसा क्यों हुआ, यह सोचने के लिए उनके पास अब काफी वक्त होगा। दूसरी ओर, अब भाजपा के सामने बंगाल राज्य और बंगाली राजनीति को भद्रलोक के अनुकूल बनाना सबसे बड़ी चुनाती होगी।

ममता बनर्जी की तरह ही तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन भी कुछ अक्खड़ता प्रदर्शित करने लगे थे। दोनों ही नेता केंद्र सरकार, भाजपा और प्रधानमंत्री को कुछ ज्यादा ही कटुता से निशाना बनाते थे। दोनों ही नेताओं ने महिला आरक्षण के ताजा प्रयासों का तीखा विरोध किया था। अब यह अध्ययन का विषय होगा कि क्या महिलाओं की नाराजगी दोनों नेताओं पर भारी पड़ी है? हिंदी, हिंदू और उत्तर भारत के विरोध में भी द्रमुक तमाम सीमाएं लांघ जाती थी। साथ ही, उनके खिलाफ सत्ता विरोधी लहर ने भी काम किया। खैर, इस सूबे की सिनेमाई सियासत ने जो रंग दिखाया है, उसकी लंबे समय तक विवेचना होगी। एक सिनेमाई अभिनेता विजय में लोग अपना नेता तलाश चुके हैं और ऐसा करते हुए उन्होंने द्रमुक और अन्नाद्रमुक को चुनते रहने का क्रम तोड़कर सबको चौंका दिया है। वैसे, पुडुचेरी के नतीजों ने किसी को नहीं चौंकाया है।

विधानसभा चुनाव के नतीजों से हर पार्टी को सबक लेने की जरूरत है। अंततः वही पार्टी चुनाव जीतती है, जो मतदाताओं से प्रभावी संवाद बना पाती है।

केरलम में वामपंथियों की सत्ता अब इतिहास में दर्ज हो जाएगी। पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा में एक समय वाम पार्टियां बहुत मजबूत थीं, पर अब उनके दिन लद गए हैं। केरलम में कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन की जीत कांग्रेस के लिए संजीवनी की तरह है। वहां भी सत्ता विरोधी लहर ने खूब काम किया है और दस साल बाद कांग्रेस सत्ता में लौटी है। तमिलनाडु में कांग्रेस हारी है, लेकिन केरलम उसके लिए बड़ी जीत है। ध्यान रहे, वह कर्नाटक पहले ही जीत चुकी है। अब यह कहने में कोई हर्ज नहीं कि कांग्रेस दक्षिण में ज्यादा मजबूत है। हालांकि, पूर्वोत्तर के असम में कांग्रेस की उम्मीदों पर लगातार तीसरी बार पानी फिर गया है। यहां भाजपा की लगातार तीसरी जीत के साथ हिमंत बिस्व सरमा पूर्वोत्तर के सबसे सशक्त क्षत्रप के रूप में उभर आए हैं। समग्रता में इन चुनावों ने भाजपा और उसके युवा अध्यक्ष नितिन नवीन को जो बल दिया है, वह निस्संदेह अगले साल उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में काम आएगा। फिलहाल, ताजा चुनावों से देश के नेताओं को सबक लेने की जरूरत है। क्षेत्रीय राजनीति में उग्रता ज्यादा समय तक नहीं चलती। जमीन पर आकर जनता की उम्मीदों पर खरा उतरना पड़ता है।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 05 मई, 1951

कांग्रेस में एकता

अखिल भारतीय कांग्रेस की बैठक दिल्ली में शुरू हो रही है। उसका मुख्य काम कांग्रेस की केन्द्रीय चुनाव कमेटी के लिए पांच सदस्यों का चुनाव करना है। इन सदस्यों का चुनाव अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अहमदाबाद अधिवेशन में ही हो जाता, किन्तु कांग्रेस हाई कमान ने कांग्रेस में एकता बनाये रखने के लिए उसे आगे के लिए सरका दिया था।

इस प्रस्ताव में कांग्रेसजनों से अन्तरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अपने आपसी मतभेदों को दूर करने और मिलजुल कर काम करने की अपील की गई थी। उसका अभी तक कोई वांछित परिणाम निकला हो, ऐसा नजर नहीं आता। यों तो सामान्यतः भी किसी भी संगठन के लिए एकता का महत्व कम नहीं होता, किन्तु देश में आम चुनाव निकट भविष्य में होने जा रहे हैं। इस समय यदि देश की सबसे प्रमुख राजनीतिक पार्टी में फूट पड़ जाती है, तो चुनावों में कांग्रेस उतनी सफलता हासिल नहीं कर सकेगी, जितनी साधारणतः आशा की जाती है। कांग्रेस ही इस समय अपनी समस्त त्रुटियों के बावजूद ऐसी संस्था है, जो चुनावों में भारी बहुमत हासिल करके देश को स्थिर और मजबूत शासन प्रदान कर सकती है, जिसकी आज की परिस्थितियों में विशेष आवश्यकता है। विभाजित कांग्रेस आगामी चुनावों का पूरे आत्म-विश्वास के साथ सामना नहीं कर सकती।

पिछले कुछ समय से कांग्रेस में विघटन के लक्षण प्रकट हो रहे थे। उत्तर प्रदेश में कतिपय कांग्रेसियों ने कांग्रेस से अलग होकर जन-कांग्रेस की स्थापना कर डाली। बंगाल में कांग्रेस के पुराने गांधीवादी नेता श्री प्रफुल्लचन्द्र घोष और उनके साथियों ने इसी प्रकार कांग्रेस से पृथक् होकर कृषक-मजदूर पार्टी का निर्माण किया। आन्ध्र में श्री प्रकाशम और प्रो. रंगा ने मिलकर प्रजा पार्टी कायम की। आचार्य कृपलानी और उनके साथियों ने डिमोक्रेटिक फ्रण्ट के नाम से कांग्रेस के भीतर ही एक दल बनाया। अहमदाबाद के एकता प्रस्ताव के बाद से ही कांग्रेस और डिमोक्रेटिक फ्रण्ट के नेताओं के बीच पत्र-व्यवहार और विचार-विनिमय हुआ। इसका कोई नतीजा नहीं निकला और यह आशंका की जाने लगी थी कि डिमोक्रेटिक फ्रण्ट के लोग भी कांग्रेस से अलग हो जायेंगे।

बंगाल में भाजपा से मात खा गई ममता

प्रभाकर मणि तिवारी | वरिष्ठ पत्रकार

भाजपा को लग रहा था कि अगर अब चूक गए, तो शायद दोबारा ऐसा मौका नहीं मिलेगा। यही वजह थी कि उसने इस बार तमाम संसाधन यहां झोंक दिए थे।

पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस तिहाई तक भी नहीं पहुंच सकेगी, यह शायद ही किसी ने सोचा था। इस चुनाव में 'बदला' बनाम 'बदलाव' का नारा था और जनादेश बता रहा है कि लोगों ने 'बदलाव' को चुना है। चूंकि अब तक ममता बनर्जी अकेली भाजपा से मुकाबला करती नजर आ रही थीं, इसलिए इस मजबूत क्षेत्रीय ताकत के कमजोर पड़ने का असर 2029 के लोकसभा चुनाव पर पड़ना लाजिमी है।

भाजपा की इस ऐतिहासिक जीत के संकेत दूरगामी होंगे। पूर्वी भारत में ओडिशा और बंगाल ही दो ऐसे राज्य थे, जहां तमाम कोशिशों के बावजूद पार्टी पैठ नहीं बना पा रही थी, पर उसने पहले ओडिशा का मोर्चा फतह किया और अब बंगाल में तृणमूल कांग्रेस के मजबूत किले में सेंध लगाते हुए पंद्रह साल से राज कर रही ममता बनर्जी को सत्ता से बाहर का रास्ता दिखा दिया है।

तृणमूल कांग्रेस से पहले वाममोर्चा ने लगातार 34 साल पश्चिम बंगाल पर राज किया था। ममता बनर्जी के नेतृत्व में तृणमूल कांग्रेस यहां वाममोर्चा का रिकॉर्ड तोड़ने का सपना पाल रही थी, लेकिन बीते दस साल से मजबूती से उभरी भाजपा ने 2021 की गलतियों से सबक लेते हुए भारी जीत के साथ उसके मंसूबे पर पानी फेर दिया।

आखिर ममता बनर्जी की हार की वजह क्या रही? चुनाव से पहले तमाम आकलन बता रहे थे कि भाजपा संगठनात्मक तौर पर तृणमूल कांग्रेस के मुकाबले कमजोर है और उसके पास ममता बनर्जी के स्तर का कोई चेहरा नहीं है। इतना ही नहीं, तमाम विश्लेषक तृणमूल कांग्रेस और भाजपा में कांटे की टक्कर होने के कयास लगा रहे थे। ऐसे में, तृणमूल कांग्रेस की यह दुर्गति शोचनीय है।

मतदाताओं का गहन पुनरीक्षण, यानी एसआईआर इस चुनाव का बड़ा मुद्दा रहा। तृणमूल नेताओं ने इस मुद्दे पर आक्रामक प्रचार अभियान चलाया था। कयास लग रहे थे कि एसआईआर के दौरान भारी तादाद में कटे नामों ने सरकार के खिलाफ सत्ता-विरोधी रुझानों की काफी हद तक भरपायी कर दी है। किंतु चुनावी नतीजों ने इस आकलन को गलत साबित कर दिया है। एसआईआर के दौरान कटे नामों ने तो तृणमूल कांग्रेस के समीकरण बिगाड़े ही, भाजपा को पार्टी के दूसरे बड़े महिला वोट बैंक में भी सेंध लगाने में कामयाबी मिली है। पहले कहा जा रहा था कि लक्ष्मी भंडार जैसी योजना के कारण ममता को इस मोर्चे पर बढ़त मिली है। किंतु इस बार यह वोट बैंक तो बिखरा ही, मुस्लिम वोट बैंक भी बिखराव का शिकार रहा।

ममता की मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति को अपना चुनावी मुद्दा बनाने के कारण भाजपा को तृणमूल के खिलाफ गैर-बंगाली और बंगाली हिंदू वोटरों को लामबंद करने में मदद मिली, खासकर शहरी इलाके के वोटरों में सरकार के खिलाफ काफी नाराजगी थी और उनमें ध्रुवीकरण सबसे ज्यादा देखने को मिला। तृणमूल कांग्रेस का मजबूत गढ़ समझे जाने वाले शहरी इलाकों के नतीजे इस बात की पुष्टि करते हैं।

भाजपा ने अपने अभियान में सीमा पार घुसपैठ के अलावा सरकार के भ्रष्टाचार को प्रमुख चुनावी मुद्दा बनाया था। तृणमूल कांग्रेस से मुकाबले के लिए पार्टी इस बार ममता बनर्जी पर सीधा हमला करने से परहेज करती रही। इसके साथ ही वह ऐसी किसी टिप्पणी से बचती रही, जो बांग्ला अस्मिता को ठेस पहुंचा सके। इसी वजह से वह इस बार 'जय श्री राम' की बजाय 'जय मां काली' के नारे ही ज्यादा लगाती नजर आई।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जन्मभूमि होने के कारण इस बार का चुनाव भाजपा के लिए नाक और साख का सवाल था। उसे लग रहा था कि अगर इस बार चूक गए, तो शायद दोबारा ऐसा मौका नहीं मिलेगा। यही वजह थी कि उसने महीनों पहले से अपनी रणनीति बनाते हुए इस बार तमाम संसाधन यहां झोंक दिए थे। भारी तादाद में केंद्रीय बलों की तैनाती के कारण दशकों में पहली बार राज्य में कोई चुनाव हिंसा-मुक्त रहा और लोग निडर होकर मतदान के लिए घरों से निकले।

यह जीत वर्ष 2029 के लोकसभा चुनाव में भाजपा के लिए एक लॉन्च पैड की भूमिका निभाएगी। इससे यह भी साफ हो गया है कि इस बार लक्ष्मी भंडार जैसी सरकारी योजनाएं महिलाओं को लुभाने में नाकाम रही हैं। दरअसल बीते करीब पांच साल से चल रही इस योजना के तहत महिलाओं को हर महीने निश्चित रकम मिलती रही है, लेकिन पुरानी योजना होने के कारण शायद इस बार इसकी चमक कम हो गई है।

बंगाल के जानकार यह भी मानते हैं कि तृणमूल कांग्रेस खुद भी इस हार की जिम्मेदार है। वह शायद अति आत्मविश्वास की शिकार थी और उसे लग रहा था कि एसआईआर ने उसकी सरकार के खिलाफ 'एंटी-इनकंबेंसी' की लहर को काफी हद तक खत्म कर दिया है। इसके अलावा लोगों के मन में चुनाव बाद बड़े पैमाने पर हिंसा की भी आशंका थी। इसी वजह से लोगों ने बदलाव के लिए खुलकर मतदान किया।

तृणमूल को पहली बार वोट डालने आए नौजवानों ने भी खारिज कर दिया है। इसका कारण आरजी कर की घटना के अलावा राज्य का औद्योगिक माहौल और रोजगार के नए अवसर पैदा नहीं होना है। नौकरियां नहीं होने के कारण बंगाल के छात्र बड़े पैमाने पर उच्च शिक्षा या नौकरी के लिए दक्षिण भारतीय शहरों का रुख करते रहे हैं। बीते करीब एक दशक में इस पलायन में काफी तेजी आई है। सरकार के खिलाफ नाराजगी के कारण ही प्रवासी बंगालियों ने इस बार बड़े पैमाने पर यहां लौटकर तृणमूल के खिलाफ मतदान किया।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

केरलम में वामपंथियों का आखिरी गढ़ ढह गया

आरती जेरथ | वरिष्ठ पत्रकार

केरलम का परिणाम अप्रत्याशित नहीं है। दस साल बाद यहां कांग्रेस के नेतृत्व वाले 'यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट' (यूडीएफ) गठबंधन को सरकार बनाने का मौका मिला है। हालांकि, इस जीत में उसकी अपनी मेहनत से अधिक योगदान 'लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट' (एलडीएफ) के वैचारिक भटकाव और उसके अंदरूनी मतभेदों का है।

एलडीएफ का यह दूसरा कार्यकाल था। इस राज्य में हर पांच साल में सरकार बदलने का इतिहास रहा है, लेकिन 2021 में चमत्कारिक रूप से एलडीएफ को न सिर्फ लगातार दूसरा मौका मिला, बल्कि उसके खाते में आठ सीटें अधिक आईं। किंतु मुख्यमंत्री पी विजयन इस सफलता को संभाल नहीं पाए। रही-सही कसर सत्ता-विरोधी रुझान ने पूरी कर दी। नतीजतन, फिर से 'चमत्कार' की एलडीएफ की आस अधूरी रह गई।

यहां वामपंथी नेतृत्व में वैचारिक भटकाव है और युवा नेताओं की सख्त जरूरत है। एलडीएफ को अपनी इन कमजोरियों से उबरना होगा।

इस बार एलडीएफ में अंदरूनी मतभेद खूब दिखे। 2021 की चुनावी सफलता से उत्साहित होकर वियजन ने सत्ता अपने हाथों में केंद्रित कर ली थी और व्यक्तिवादी राजनीति को आगे बढ़ाया। यह वामपंथी दलों का चरित्र नहीं है। लिहाजा, यह पहला मौका था, जब एलडीएफ के तीन मौजूदा विधायकों ने पार्टी छोड़कर विरोधी दलों के टिकट पर अपनी ताल ठोकी। सीसी मुकुंदन और एस राजेंद्रन को जहां भाजपा का साथ मिला, वहीं आयशा पॉटी को कांग्रेस का। जी सुधाकरन ने जरूर निर्दलीय अपनी किस्मत आजमाई, लेकिन यूडीएफ ने उन्हें समर्थन देने का एलान किया था। इसी तरह, एलडीएफ के चार अन्य वरिष्ठ नेताओं अथवा पूर्व विधायकों ने भी कांग्रेस या भाजपा के झंडे तले अपनी किस्मत आजमाई।

विजयन में वैचारिक भटकाव भी खूब हुआ है। असल में, भाजपा केरलम में अपनी ताकत बढ़ाने की कोशिशों में है और 2024 में त्रिशूर लोकसभा की जीत से उसे जरूरी खुराक मिली है। माना गया कि भाजपा को एझावा समुदाय का वोट मिल रहा है, जो यहां का सबसे बड़ा हिंदु समुदाय है। यह वामपंथी दलों का आधार रहा है। भाजपा की रणनीति का काट निकालने के लिए विजयन ने 'सॉफ्ट हिंदुत्व' का दांव खेला, जिसने वाम काडरों को नाराज किया। उनमें नाराजगी वामपंथी विचारधारा के खिलाफ मानी जाने वाली परियोजनाओं को आगे बढ़ाने के कारण भी पनपी। मुख्यमंत्री पर भ्रष्टाचार के आरोप भी लगे।

बहरहाल, यूडीएफ की जीत के बाद उससे उम्मीदें बढ़ गई है। अच्छी बात है कि कांग्रेस ने अपने आंतरिक मतभेदों से चुनाव के दौरान ही पार पा लिया। केसी वेणुगोपाल बनाम रमेश चेन्निथला बनाम शशि थरूर की लड़ाई स्याह रूप ले चुकी थी। हालांकि, यूडीएफ में मुख्यमंत्री कौन बनेगा, इसको लेकर तनाव दिख सकता है।

उधर, एलडीएफ की इस हार से वामपंथी राजनीति पर असर पड़ेगा। पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा में चाहकर भी वाम पार्टियां सत्ता में नहीं लौट सकी हैं। ऐसे में, एकमात्र केरलम से उनको उम्मीद थी। किंतु यहां भी अब उनके हाथ खाली हो गए हैं। चूंकि यहां वामपंथी नेतृत्व में वैचारिक भटकाव है और विजयन की उम्र को देखते हुए युवा नेताओं की जरूरत है, इसलिए अगर वामपंथी दल अंदरूनी कमजोरियों से पार नहीं पा सके, तो सत्ता में उनका लौटना मुश्किल हो सकता है।

यही वह पड़ाव है, जहां भाजपा के लिए उम्मीदें अधिक हैं। एझावा वोट-बैंक में सेंध लगाकर उसने एलडीएफ को खासा चोट पहुंचाई है। वामपंथी दलों के चूकने के बाद उसके लिए जगह बन सकती है। हालांकि, इसके लिए उसे अपनी राजनीति में कुछ बदलाव करने होंगे। मसलन, चुनाव से पहले उसने 'एफसीआरए' यानी विदेशी अंशदान (विनियमन) विधेयक में संशोधन का प्रयास किया था, जिसका मकसद विदेशी चंदा पाने वाले संस्थानों पर अधिक नियंत्रण करना था। इसने यहां के ईसाई समुदाय को नाराज कर दिया, क्योंकि उनके कार्य अमूमन विदेशी चंदे से चलते हैं।

चूंकि केरलम में सिर्फ हिंदू वोट से चुनाव नहीं जीते जा सकते, मुसलमान और ईसाई जैसे अल्पसंख्यक समुदायों का भी साथ चाहिए, इसलिए भाजपा को ऐसे कदमों से बचना चाहिए था। अलबत्ता, उसे असम, झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा जैसे तमाम राज्यों में अल्पसंख्यक समुदायों के खिलाफ अपनी नीति बदलनी चाहिए, क्योंकि जितना वह इन समुदायों के करीब जाएगी, केरलम में उसके लिए मौके उतने अधिक बढ़ते जाएंगे।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

तमिलनाडु में नई पार्टी ने कर दिया चमत्कार

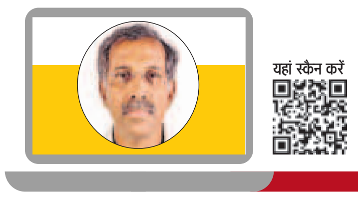

एस श्रीनिवासन | वरिष्ठ पत्रकार

भारत के दक्षिणी तट पर तमिलनाडु में चक्रवात का आना आम बात है। राज्य ने कभी विनाशकारी सुनामी का भी सामना किया था, पर अब आया राजनीतिक चक्रवात बिल्कुल नई बात है। निःसंदेह, यह राज्य प्रसिद्ध तमिल अभिनेता विजय के नेतृत्व वाली नवगठित पार्टी तमिलगा वेत्री कषगम (टीवीके) द्वारा पैदा किए गए राजनीतिक चक्रवात से बिल्कुल अनजान था।

यहां के पत्रकार और यहां तक कि राजनीतिक वर्ग का एक हिस्सा भी चुनाव परिणामों का सही अनुमान लगाने में बुरी तरह विफल रहा। स्पष्ट संकेत थे कि टीवीके राज्य में डीएमके और एआईएडीएमके जैसी स्थापित पार्टियों को नुकसान पहुंचा सकती है, पर यह स्पष्ट नहीं था कि यह नुकसान कितना और कैसे होगा?

तमिलनाडु में जो हुआ है, उस पर चक्रवात की उपमा बिल्कुल सटीक बैठती है, क्योंकि अक्सर चक्रवात के तट पर पहुंचने के अंतिम क्षणों तक यह पता नहीं चलता है कि यह कितनी चोट करेगा। डीएमके अब टीवीके द्वारा मचाई गई तबाही को समेटने में जुट गई है, क्योंकि मुख्यमंत्री एम के स्टालिन के मंत्रिमंडल के आधे से अधिक सदस्य मतगणना में पिछड़ गए।

तमिलनाडु में जो हुआ, वह द्रमुक के लिए चक्रवात की तरह है। चक्रवात जब तक तट से नहीं टकराता, पता नहीं चलता, कितना नुकसान पहुंचाएगा।

पहली बार मतदान करने वाले जेन-जी मतदाता और मिलेनियल्स ने, जिनके वयस्क जीवन का बड़ा हिस्सा डिजिटल युग में बीता है, बड़ी संख्या में विजय के लिए मतदान किया है। विजय का मूल नाम चंद्रशेखर जोसफ विजय है और उन्हें उनके प्रशंसक थलापति विजय भी कहते हैं। थलापति का अर्थ है - कमांडर। अब तमिलनाडु की कमान अपने इस नए कमांडर के हाथों में होगी।

स्पष्ट है, बीते पांच वर्षों में डीएमके ने सत्ता-विरोधी लहर पैदा कर ली थी। उससे मतदाता नाराज हो गए थे और बदलाव की तलाश में थे। मतदाता अन्नाद्रमुक या भाजपा को जनादेश देने को तैयार नहीं थे और साल 2024 में राजनीति के मैदान में विजय के आगमन के साथ ही, उसने अपनी दुविधा का समाधान ढूंढ़ लिया था।

हालांकि, तमिलनाडु देश के सर्वाधिक औद्योगिक राज्यों में एक है। प्रमुख आर्थिक और सामाजिक संकेतकों में यह अन्य राज्यों से आगे है, फिर भी यह कुछ ज्यादा ही तेज विकास की तलाश में है। नए मतदाता शायद ज्यादा बेहतर सुविधाओं और सुगम जीवन की खोज में हैं। चूंकि अधिकांश मध्यमवर्गीय तमिल परिवारों का कम से कम एक सदस्य विदेश में रहता है या विदेश यात्रा कर चुका है, इसलिए यहां लोग बहुत ऊंचे जीवन स्तर से परिचित हैं। खराब नागरिक सेवाओं और अपर्याप्त शासन व्यवस्था के कारण लोगों ने परिवर्तन की चाह में डीएमके सरकार को सत्ता से बाहर कर दिया है। इसके अलावा, एक बात यह भी है कि मुफ्त योजनाओं का चुनावी फायदा मिलना अब शायद बंद हो चुका है। लोग मानने लगे हैं कि मुफ्त उपहार वाली योजनाएं एक स्थापित व्यवस्था है। जो भी सरकार सत्ता में आएगी, वह ऐसे लाभ देगी।

यह ऐतिहासिक परिणाम है कि राज्य के अगले मुख्यमंत्री के रूप में विजय को जनादेश मिला है। वैसे, शुरुआती उत्साह के बाद उन्हें शासन में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। उनके ज्यादातर समर्थक और निर्वाचित विधायक अनुभवी राजनेता नहीं हैं, तो अनुभव की कमी झलक सकती है।

कोई संदेह नहीं, विजय के करिश्माई व्यक्तित्व के कारण ही उन्हें जीत मिली है। अपनी लोकप्रियता के अलावा, उनको अब एक ऐसी टीम बनानी पड़ेगी, जो कुशलता से सरकार चला सके और चुनाव से पहले किए गए बड़े वादों को पूरा कर सके।

वैसे, यह देखना दिलचस्प होगा कि विजय सरकार कैसे बनाएंगे, क्योंकि विधानसभा में 118 सीटों का आंकड़ा वह हासिल नहीं कर सके हैं? कांग्रेस में नए नेताओं का एक समूह, जिसमें पार्टी के डाटा विभाग के प्रमुख प्रवीण चक्रवर्ती भी शामिल हैं, टीवीके के साथ गठबंधन का पक्षधर रहा है। राहुल गांधी भी ऐसे गठबंधन के इच्छुक थे, पर अंततः पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की राय ही हावी रही।

उधर, केंद्रशासित प्रदेश पुडुचेरी में फिर एनडीए सरकार बन रही है। एआईएनआरसी और भाजपा का गठबंधन अपनी सत्ता को भारी बहुमत से बचाने में कामयाब रहा है। डीएमके के खिलाफ जो हवा तमिलनाडु में चली है, लगभग वैसी ही हवा पुडुचेरी में देखी गई है। इस केंद्रशासित प्रदेश में कांग्रेस और द्रमुक को राजनीतिक सुनामी का सामना करने के बाद खुद को फिर से खड़ा करना पड़ेगा।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

असम में बहुत मजबूती से सरकार बचाने में कामयाब रही भाजपा

चंदन कुमार शर्मा | प्रोफेसर, तेजपुर विवि, असम

असम में भारतीय जनता पार्टी की संगठनात्मक ताकत, उसके द्वारा झोंके गए अकूत संसाधन और विपक्ष की कमजोरियों को देखते हुए राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की जीत की संभावना काफी पहले से लग रही थी। उल्टे, भाजपा की इतनी आसान जीत को देखकर पर्यवेक्षक कुछ हद तक हैरान हैं, क्योंकि निवर्तमान मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा द्वारा विश्वास जताने के बावजूद, कई पर्यवेक्षक इससे कहीं कड़े मुकाबले की उम्मीद पाले बैठे थे।

यह कहना गलत होगा कि मौजूदा सरकार को किसी असंतोष का सामना नहीं करना पड़ा। नागरिक समाज संगठनों ने भ्रष्टाचार, सरकारी स्कूलों को बंद किए जाने और विकास के नाम पर पर्यावरण को हो रहे नुकसान जैसे मुद्दों पर अपनी नाराजगी जाहिर की थी। फिर भी, ये चिंताएं भाजपा के आक्रामक- धुआंधार चुनाव प्रचार में उड़ गईं। मुख्यमंत्री ने कई विवादास्पद मुद्दों को प्रमुखता से उठाया, जिनमें असम प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गौरव गोगोई और उनके परिवार पर विदेशी ताकतों से जुड़े होने के आरोप शामिल थे। इस बीच, कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा द्वारा सरकार पर लगाए गए भ्रष्टाचार के आरोपों को मतदाताओं का कोई खास समर्थन नहीं मिल पाया।

भाजपा के शानदार प्रदर्शन की मुख्य वजह यह रही कि विपक्ष समय रहते मजबूत गठबंधन बनाने में नाकाम रहा। कांग्रेस को असम जातीय परिषद और रायजोर दल जैसी क्षेत्रीय पार्टियों के साथ सीट बंटवारे पर सहमति बनाने में मशक्कत करनी पड़ी। कांग्रेस और रायजोर दल के बीच सार्वजनिक तौर पर सामने आए मतभेदों ने विपक्ष की आपसी फूट को उजागर किया और जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं को एकजुट चुनाव प्रचार करने के लिए बहुत कम समय मिला।

इसके विपरीत, भाजपा ने अपने चुनाव प्रचार-तंत्र को काफी पहले बेहद प्रभावी ढंग से सक्रिय कर दिया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह जैसे वरिष्ठ नेताओं ने राज्य के कई दौरे किए, जिससे पार्टी कार्यकर्ताओं में नया जोश भरा।

विपक्ष को अंदरूनी झटकों का भी सामना करना पड़ा। चुनाव से ठीक पहले, पूर्व मंत्री और मौजूदा सांसद प्रद्योत बोरदोलोई तथा पूर्व प्रदेश अध्यक्ष भूपेन बोरा जैसे कांग्रेस के प्रमुख नेताओं के भाजपा में शामिल होने से पार्टी की स्थिति कमजोर हुई। साथ ही, इससे पार्टी के अंदरूनी तालमेल व नेतृत्व की विश्वसनीयता पर भी सवाल खड़े हो गए। पार्टी दिशाहीन नजर आई, क्योंकि मौजूदा प्रदेश अध्यक्ष गौरव गोगोई को जमीनी स्तर का नेता नहीं माना जाता है।

निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन और कई कल्याणकारी योजनाएं जैसे कारकों ने भी भाजपा को काफी मदद पहुंचाई। असम के परिदृश्य को 2023 के परिसीमन ने आमूलचूल ढंग से बदल दिया है। इसके तहत मुस्लिम बहुमत वाले 35 निर्वाचन क्षेत्रों को घटाकर 25 के आसपास सीमित कर दिया गया है। इसका उन मुस्लिम प्रवासियों (जिनको असम में मियां बोला जाता है।) पर विशेष असर पड़ा, जो ऐतिहासिक रूप से अहम राजनीतिक समूह रहे हैं। भाजपा ने परिसीमन को यहां के मूल निवासी (खिलोनजिया) समुदायों के हितों की रक्षा करने वाले उपाय के रूप में प्रचारित किया।

सांप्रदायिक रूप से ध्रुवीकृत असम में परिसीमन का असर चुनावी नतीजों पर साफ तौर पर देखा जा सकता है, यहां कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों की सीटें ज्यादातर अल्पसंख्यक-बहुल क्षेत्रों तक ही सिमटकर रह गई हैं।

सांप्रदायिक रूप से ध्रुवीकृत असम में परिसीमन का असर चुनावी नतीजों पर साफ देखा जा सकता है, यहां कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों की सीटें ज्यादातर अल्पसंख्यक-बहुल क्षेत्रों तक ही सिमटकर रह गई हैं। यहां तक कि विधानसभा में विपक्ष के नेता गौरव गोगोई, देबब्रत सैकिया और अन्य विपक्षी दिग्गज ऊपरी असम के उन क्षेत्रों से चुनाव हार गए, जहां असमिया हिंदुओं का बहुमत है। इसके साथ ही, महिलाओं को सीधे धन देने जैसी कल्याणकारी योजनाओं ने भी भाजपा के पक्ष में अहम भूमिका निभाई। बड़ी संख्या में महिलाओं द्वारा किए गए मतदान से संकेत साफ है कि इन योजनाओं का चुनाव पर असर पड़ा। भाजपा ने अल्पसंख्यक-बहुल इलाकों में महिला 'मियां' मतदाताओं के बीच भी गहरी पैठ बनाई है। इन सबका भाजपा को चुनावी लाभ मिला है।

इस तरह, भाजपा- नीत एनडीए की जीत का श्रेय काफी हद तक हिमंत बिस्व सरमा के रणनीतिक नेतृत्व और लगातार राजनीतिक अभियान को जाता है। असम के जटिल सामाजिक और जनसांख्यिकीय परिदृश्य में एक प्रचारक के तौर पर उनका प्रभाव आज भी जबरदस्त है और फिलहाल, उनका कोई मुकाबला दिखाई नहीं देता है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

बुराई का बदला भलाई से दीजिए

हठयोग से मन को वश में करने की अपेक्षा प्रेम से मन को वश में करो। योग से मन तो एकाग्र हो सकता है, पर हृदय में विशालता नहीं आती। भक्ति ही हृदय को विशाल बनाती है। ईश्वर को आमंत्रित करने की शक्ति जीव में है और परमात्मा की तृप्ति प्रेम से होती है। जीवन में प्रेम होगा, तो मनुष्य बुराई का बदला भी, भलाई से ही देगा, और यही जीवन है।

अध्यात्म

रामचंद्र डोंगरे

योग-सिद्धि के प्रभाव से चांगदेव चौदह सौ वर्ष तक जीवित रहे। मृत्यु को उन्होंने चौदह बार पीछे हटाया। प्रतिष्ठा के मोह के कारण वे सिद्धियों में फंसे हुए थे। जब उन्होंने ज्ञानेश्वर के यश को सुना, तो उनके मन में आया कि यह बालक किस प्रकार मेरे से बढ़कर है? उस समय ज्ञानेश्वर की उम्र सिर्फ सोलह वर्ष की थी। क्या संबोधन लिखा जाए, पत्र लिखते समय यह प्रश्न सामने आया। पूज्य तो लिखा नहीं जा सकता और ज्ञानी पुरुष को चिरंजीवी भी नहीं लिख सकते, इसलिए ज्ञानेश्वर के पास कोरा कागज ही भेज दिया।

मुक्ताबाई ने इसके जवाब में लिखा कि चौदह सौ वर्ष की आपकी उम्र हुई, पर कोरे ही रहे। जवाब पढ़कर चांगदेव को लगा कि ज्ञानेश्वर से मिलना चाहिए। अपनी सिद्धि बताने के लिए वे बाघ पर चढ़कर मिलने गए।

ज्ञानदेव को सूचना मिली कि चांगदेव बाघ की सवारी पर मिलने आ रहे हैं। उन्होंने जिस दीवार पर वे स्वयं बैठे थे, उसे चलने को कहा। पत्थर की दीवार सामने स्वागत करने गई। यह देखकर चांगदेव का अभिमान नष्ट हो गया।

जड़ को चेतन बना दिया

चांगदेव को ऐसा लगा कि मैंने तो हिंसक पशु को ही वशवर्ती किया है, पर ज्ञानेश्वर तो जड़ पदार्थों को भी चेतन बना रहा है। दोनों महापुरुषों का मिलन हुआ। चांगदेव ज्ञानेश्वर के शिष्य बन गए।

हठयोग से मन को वश में करने की अपेक्षा प्रेम से मन को वश में करो। योग से मन तो एकाग्र हो सकता है, पर हृदय में विशालता नहीं आती। भक्ति ही हृदय को विशाल बना सकती है।

इसी प्रकार हम आगे देखें, तो महाभारत समाज शास्त्र है। समाज में एक भी ऐसा घर नहीं है, जहां महाभारत नहीं होती हो या फिर दुशासन या दुर्योधन नहीं हों। धर्मराज जाग्रति की बात कहते हैं, दुर्योधन सुषुप्ति की। महापुरुषों के मन में कोई द्विविधा अथवा शंका पैदा होती है, तो वे स्वयं के मन से पूछते हैं। उसके कारण को भीतर ही खोजते हैं।

जीव धृतराष्ट्र है। जिसकी आंख में काम है, वह अंधा है, धृतराष्ट्र है। दुर्योधन अधर्म है। युधिष्ठिर धर्म का स्वरूप है। धर्म मनुष्य को प्रभु के पास ले जाता है। अधर्म मनुष्य को संसार की ओर ले जाता है। धर्म रूपी ईश्वर की शरण में जाने पर धर्म की विजय होती है, अधर्म का नाश होता है।

जीवन और भोजन सादा हो

इसी प्रकार इसे अलग ढंग से देखें, तो व्यसनी मनुष्य की ऐसी चाह होती है कि मेरे व्यसन दूसरों को भी लग जाएं। घर में सत्संग होता है, तो घर में नहीं रहना। सगा भाई भी पाप में लिप्त हो, तो उसे दूर से ही नमस्कार करो। उसका साथ छोड़ दो।

जीवन और भोजन सादा होगा, तो जीवन में आनंद आएगा। जीभ में हड्डी नहीं है, इसलिए इसका नाम 'लूली' है। जीभ का संबंध मन के साथ है। वह मन को बिगाड़ती है। ईश्वर को आमंत्रित करने की शक्ति जीव में है। परमात्मा की तृप्ति प्रेम से होती है। परमात्मा जीव को प्रेम देता है और उससे प्रेम की मांग भी करता है। यह प्रेम की महिमा है कि सारे जगत को खिलानेवाले, स्वयं विदुर जी के घर मांग कर खाते हैं।

मनुष्य बनें, पशु नहीं

सत्कर्म तो करो, पर सावधान रहो कि अभिमान न बढ़े। अभिमान को मारने के लिए दीन वाणी से सत्कर्म करो। सत्कर्म तो करें, पर दूसरे जीवों को कमतर समझे, वह सत्कर्म किस काम का? इसलिए हृदय से नम्र बनो। विधिपूर्वक कर्म करके भी जो यह कहे कि मैंने कुछ नहीं किया, उसी पर प्रभु कृपा करते हैं। वैष्णव कभी भक्ति की समाप्ति नहीं करते। बिना ज्ञान और वैराग्य की भक्ति निष्फल है। ज्ञान और वैराग्य के साथ होने पर भक्ति सफल होती है।

समर्पण में सब कुछ न्योछावर किया जाता है। पुण्यों का समर्पण होता है, पापों का नहीं। देवता भूल करने पर मनुष्य होते हैं। मनुष्य भूल करने पर पशु होता है, इसलिए देवता न बन सको, तो कोई बात नहीं। पशु नहीं बनो।

अपकार का बदला उपकार से

दूसरा जन्म किसी पुण्यात्मा के घर में हो, ऐसा काम करो। जीव ईश्वर का स्मरण करे, यह साधारण भक्ति है। भगवान जीव का स्मरण करें, यह उत्तम भक्ति है। भगवान जिस पर कृपा करते हैं, उसकी प्रत्येक इंद्रिय को भक्ति रस मिलता है।

बाल्यावस्था में काम बुद्धि में सुषुप्त रहता है, पर युवावस्था में मनुष्य काम की मार खाता है। अंतर में प्रवेश होने पर काम पतन करके ही निकलता है। अतएव ऐसा संयमी जीवन बिताओ कि काम को प्रवेश करने का मौका ही न मिले। घर में विषमताओं को न पनपने दो। विषमता से वासना और क्लेश की उत्पत्ति होती है।

इसी प्रकार सायंकाल में सत्कर्म अवश्य करना चाहिए। सायंकाल में काम बुद्धि में प्रवेश करता है और इसके बाद रात्रि में जागता है। बुद्धि के देवता सूर्यनारायण हैं। सायंकाल में वे अस्त हो जाते हैं, इसलिए इस समय सत्कर्म करना बहुत जरूरी है।

धर्म की मर्यादा का बराबर पालन करोगे, तो ज्ञान स्वयं प्रकट होगा। धर्म के ऊपर स्थित रहोगे, तो ज्ञान-गंगा को प्रकट होना ही होगा।

यह सत्य है कि जिसका स्वभाव सुंदर होता है, वह भगवान को प्रिय लगता है। जिसका शरीर सुंदर होता है, वह भगवान की परवाह नहीं करता। अब प्रश्न है कि स्वभाव किस प्रकार सुंदर बने, तो इसका उत्तर है, अपकार का बदला उपकार से देने पर ही स्वभाव सुंदर बनता है।

सप्ताह के व्रत-त्योहार

05 मई से 11 मई 2026

- **05 मई (मंगलवार)** : प्रथम (शुद्ध) ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी तिथि (दिन–रात)। अंगारकी श्रीगणेश चतुर्थी। गंडमूल विचार।
- **06 मई (बुधवार)** : प्रथम (शुद्ध) ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी तिथि प्रात: 07 .52 मिनट तक। गंडमूल अपराह्न 03 .54 मिनट तक।
- **07 मई (गुरुवार)** : प्रथम (शुद्ध) ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी तिथि प्रात: 10 .15 मिनट तक पश्चात षष्ठी तिथि। श्री टैगोर जयंती।
- **08 मई (शुक्रवार)** : प्रथम (शुद्ध) ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी तिथि दोपहर 12 .22 मिनट तक पश्चात सप्तमी तिथि। भद्रा दोपहर 12 .22 मिनट से रात्रि 01 .13 मिनट तक।
- **09 मई (शनिवार)** : प्रथम (शुद्ध) ज्येष्ठ कृष्ण सप्तमी तिथि दोपहर 02 .03 मिनट तक पश्चात अष्टमी तिथि। कालष्टमी।
- **10 मई (रविवार)** : प्रथम (शुद्ध) ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी तिथि अपराह्न 03 .07 मिनट तक पश्चात नवमी तिथि। श्री शीतलाष्टमी व्रत। पंचक प्रारंभ दोपहर 12 .13 मिनट।
- **11 मई (सोमवार)** : प्रथम (शुद्ध) ज्येष्ठ कृष्ण नवमी तिथि अपराह्न 03 .25 मिनट तक पश्चात दशमी तिथि। भद्रा रात्रि 03 .09 मिनट से। पंचक।

–पं. ऋभुकांत गोस्वामी

आस्था-अनास्था

डॉ. एम. आर. राजेश्वरी

दान देने के लिए हमेशा तत्पर रहे दानवीर कर्ण

सूर्य पुत्र कर्ण को दानवीर क्यों कहते हैं?

–प्रफुल्ल पटवा, कानपुर

एक बार कृष्ण अर्जुन के सामने कर्ण की दानवीरता की प्रशंसा करने लगे। यह सुन अर्जुन ने कहा, 'हे केशव, महाराज युधिष्ठिर भी तो परम दानी हैं।' कृष्ण ने कहा, 'निसंदेह युधिष्ठिर भी दानी हैं, लेकिन दानवीरता में कर्ण का मुकाबला कोई नहीं कर सकता। चाहो तो, हम दोनों की परीक्षा ले सकते हैं।' अर्जुन तैयार हो गए।

कृष्ण और अर्जुन दोनों ब्राह्मण का वेश धारण करके पहले युधिष्ठिर के पास पहुंचे और उनसे कहा कि उन्हें यज्ञ के लिए एक मन सूखी चंदन की लकड़ियां चाहिए। युधिष्ठिर ने अपने सेवकों से लकड़ियों का प्रबंध करने के लिए कहा, लेकिन उस समय घनघोर बारिश हो रही थी। उन्हें कहीं भी सूखी लकड़ियां नहीं मिलीं। युधिष्ठिर ने दोनों ब्राह्मणों से क्षमा मांगते हुए कहा, 'बारिश में इस समय चंदन की सूखी लकड़ियां मिलना असंभव है, आप चाहें, तो मैं आपको स्वर्ण मुद्राएं दे सकता हूं।' दोनों ब्राह्मणों ने स्वर्ण मुद्राएं लेने से इंकार कर दिया।

कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि चलो कर्ण के पास चलते हैं। दोनों कर्ण के पास पहुंचे। कर्ण को जैसे ही यह पता चला कि दो ब्राह्मण दान की आशा से उनके पास आए हैं, वे तुरंत उनसे मिलने बाहर आए। उन्होंने दोनों को प्रणाम कर कहा, 'यह मेरा सौभाग्य है कि इस विपरीत मौसम में भी आप मुझे दान देने के योग्य समझ कर मेरे पास आए। इससे मेरा सम्मान बढ़ा है। बताइए मैं क्या कर सकता हूं।'

कर्ण के इस प्रकार कहने पर कृष्ण ने उससे भी वही दान मांगा, जो युधिष्ठिर से मांगा था। उन्होंने कहा, 'हे अंगराज, हमें ज्ञात है कि इतनी वर्षा में सूखी चंदन की लकड़ी

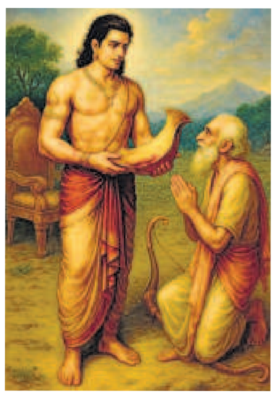

मिलना अत्यंत कठिन है, इसलिए अगर आप यह दान न दे सकें, तो हम अन्यथा नहीं लेंगे। इस पर कर्ण ने कहा, 'हे देव! आप कृपया थोड़ी देर रुकें, मैं अभी आपको आपका अभीष्ट दान देता हूं।'

यह कहकर कर्ण अपना धनुष लेकर वापस आए। उन्होंने बिना कोई प्रतीक्षा किए अपने बाणों से महल के मुख्य द्वार को काट डाला, जो चंदन की लकड़ी से बना था। यह देख कृष्ण ने कहा, 'हे अंगराज! अगर हम आपके द्वार की लकड़ी लेना अस्वीकार कर दें तो?' कर्ण ने बिना हिचक अपनी शय्या, जो चंदन की लकड़ी की ही बनी थी, उसके टुकड़े कर कृष्ण के सामने लकड़ियों का दूसरा ढेर लगा दिया।

उन्होंने कहा, 'हे ब्राह्मण देव! मेरी शय्या मेरे दिव्य कवच और कुंडलों के कारण कभी अपवित्र नहीं होती, इसलिए ये सर्वथा आपके यज्ञ के योग्य है।' यह देखकर कृष्ण गद्गद् हो गए और उन्होंने मुस्कराते हुए अर्जुन की ओर देखा।

(साभार : तिरुमल तिरुपति देवस्थानम, तिरुपति)

भेजें अपने सवाल

स्वर्ग-नरक की कल्पना का आधार क्या है?

पाप क्या है, पुण्य क्या है? धर्म क्या है, अधर्म क्या है? ईश्वर की आराधना कैसे करें? ऐसे सवाल अकसर हमारे मन में उठते हैं, पर इनका जवाब हमारे पास नहीं होता। मन–मस्तिष्क में आने वाले ऐसे ही सवालों के जवाब हमारे पैनल में शामिल धर्माचार्य आपको देंगे।

अपने सवाल हमें इस पते पर भेजें :
धर्मक्षेत्रे, हिन्दुस्तान, 11वां तल, द आइकॉन टॉवर, एफ सी–24 सी, फिल्म सिटी, सेक्टर–16ए, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर–201301 (उत्तर प्रदेश)

विचार

द्वेष भुलाकर बढ़ना होगा

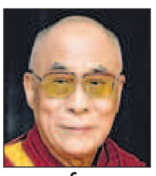

दलाई लामा

अक्सर ऐसा होता है कि हम खुद भी अपने कष्टों को कई तरीकों से बढ़ाते हैं। अपने दिमाग में पुराने जख्मों को याद कर-करके उन्हें ताजा रखते हैं और इस दौरान अपने साथ हुए अन्याय में वृद्धि करते जाते हैं। हम इस अचेतन इच्छा के साथ अपनी पीड़ादायक यादों को दोहराते हैं कि शायद ऐसा करने से परिस्थिति बदल जाए, लेकिन ऐसा कभी नहीं होता।

अपने दर्द को लगातार याद करने से सीमित उद्देश्य की प्राप्ति तो हो जाती है। इससे हमारे जीवन को थोड़ी उत्तेजना मिलती है अथवा दूसरे लोग हम पर ध्यान देते हैं। हमारे साथ सहानुभूति दर्शाते हैं, परंतु यह हमें मिलने वाले दुख के बदले में बहुत बुरा समझौता है।

हम देख सकते हैं कि ऐसे बहुत-से तरीके हैं, जिनके द्वारा हम मानसिक अशांति और कष्ट के अपने अनुभव में सक्रिय योगदान देते हैं। हालांकि, सामान्य तौर पर मानसिक व भावनात्मक दुख अपने आप स्वाभाविक ढंग से आ सकते हैं। प्रायः उन नकारात्मक भावों की पुनरावृत्ति से ही स्थिति ज्यादा बिगड़ जाती है।

उदाहरण के लिए, जब हमें किसी व्यक्ति के प्रति गुस्सा या द्वेष महसूस होता है, तो अगर हम उस पर ध्यान न दें, तो इस बात की संभावना बहुत कम होती है कि वह भाव बढ़ जाएगा, परंतु यदि हम अपने साथ हुए अन्याय या अनुचित व्यवहार को याद करें और बार-बार उसी विषय में सोचते रहें, तो उसी से हमारे अंदर द्वेष का भाव पोषित होता है। इससे यह तीव्र घृणा में बदल जाता है।

कई बार अधिक संवेदनशील होने, छोटी-छोटी चीजों पर प्रतिक्रिया करने और किसी बात को दिल से लगाकर भी हम अपने कष्ट व पीड़ा को बढ़ा लेते हैं। हम छोटी-छोटी बातों को ज्यादा गंभीरता से लेकर उन्हें बड़ा बना लेते हैं, जबकि कुछ महत्वपूर्ण बातों को हम नजरअंदाज कर देते हैं, जिनका हमारे जीवन पर गहरा असर पड़ता है तथा जिनके दूरगामी परिणाम व प्रभाव होते हैं।

मुझे लगता है काफी हद तक, आपको कष्ट होना या न होना इस बात पर निर्भर करता है कि किसी विशेष परिस्थिति में आपकी प्रतिक्रिया क्या होती है। उदाहरण के लिए, आपको पता चलता है कि आपके पीछे कोई आपकी बुराई करता है। अगर आप इस बात का बुरा मानकर या गुस्से से कोई प्रतिक्रिया देंगे, तो आप स्वयं अपनी मानसिक शांति को नष्ट कर लेंगे। आपकी पीड़ा आपकी अपनी रचना है। इसके विपरीत, अगर आप कोई नकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं करते और उस निंदा को अपने कान के पीछे से हवा के शांत झोंके की तरह निकल जाने देते हैं, तो आप स्वयं को आहत और दुखी होने से बचा सकते हैं।

कृष्ण ने मणि चोरी का कलंक मिटाया

पौराणिक कथा

सत्राजित ने सूर्यदेव की उपासना करके उन्हें प्रसन्न किया। फलस्वरूप सूर्य ने उन्हें स्यमंतक मणि प्रदान की। वह सूर्य के समान तेजोमयी थी। इस मणि को धारण करने वाले व्यक्ति का प्रभाव सूर्य के समान हो जाता था।

एक बार सत्राजित स्यमंतक मणि को गले में पहनकर, कृष्ण की राजसभा में गया। स्यमंतक मणि के कारण सत्राजित दूसरे सूर्य की भांति ज्ञात हो रहा था। सभी आश्चर्य से उसे आंखें फाड़ कर देख रहे थे। राजसभा के सभी सदस्य उठकर खड़े हो गए और एक स्वर में कह उठे, 'यह दूसरा सूर्य कहां से आ गया?'

कृष्ण ने राजसभा के सदस्यों को बताया, यह दूसरा सूर्य नहीं, सत्राजित है। स्यमंतक मणि पहनने के कारण यह दूसरे सूर्य की तरह प्रतीत हो रहा है।

कृष्ण ने सत्राजित से कहा, 'यह मणि तुम्हारे योग्य नहीं है। तुम इसे महाराज उग्रसेन को दे दो।' सत्राजित ने मणि देने से इंकार कर दिया।

कुछ दिनों के पश्चात सत्राजित का अनुज प्रसेनजित उस मणि को पहनकर वन में आखेट के लिए गया। वह घोड़े पर सवार था। संयोग की बात कि एक पर्वत की गुफा के पास एक सिंह ने घोड़े सहित प्रसेनजित को मार डाला। उस गुफा के भीतर ऋक्षराज जाम्बवान रहते थे। जाम्बवान जब बाहर निकले, तो उनकी दृष्टि सूर्य के समान चमकती स्यमंतक मणि पर पड़ी। उन्होंने उस मणि को ले

जाकर खेलने के लिए अपने बालकों को दे दिया।

कई दिनों के पश्चात प्रसेनजित, जब वन से लौटकर नहीं आया, तो सत्राजित ने संपूर्ण द्वारिका में यह खबर फैला दी कि कृष्ण ने उसके भाई की हत्या करा कर स्यमंतक मणि ले ली। कृष्ण के कानों में भी यह खबर पड़ी। वे अपने ऊपर लगे हुए कलंक को मिटाने के लिए प्रसेनजित और स्यमंतक मणि की खोज के लिए वन में गए। उनके साथ द्वारिका के कुछ श्रेष्ठ नागरिक भी थे।

कृष्ण प्रसेनजित की खोज करते हुए पर्वत की गुफा के पास पहुंचे। गुफा के द्वार पर प्रसेनजित और उसके घोड़े की मृत देह देखकर उन्होंने सोचा, हो न हो, स्यमंतक मणि को ले जाने वाला इस गुफा के भीतर ही रहता है।

कृष्ण अपने साथियों को गुफा के द्वार पर छोड़ कर, अकेले ही गुफा के भीतर प्रविष्ट हो गए। उन्होंने अपने साथियों से कहा, 'जब तक मैं लौटकर न आऊं, गुफा के द्वार पर मेरी प्रतीक्षा करें।'

कृष्ण ने गुफा के भीतर देखा, कुछ बालक स्यमंतक मणि से खेल रहे थे। कृष्ण ने बालकों के हाथ से स्यमंतक मणि ले ली। जाम्बवान ने कृष्ण को रोका, तो दोनों में युद्ध होने लगा। यह युद्ध 21 दिनों तक लगातार चला, किंतु हार-जीत का निर्णय नहीं हो सका।

उधर गुफा के द्वार पर प्रतीक्षा करने वाले कृष्ण के साथी कुछ दिन प्रतीक्षा करने के बाद द्वारिका लौट गए। उन्होंने द्वारिकावासियों को बताया कि किस प्रकार कृष्ण एक गुफा के भीतर घुस गए और अब तक बाहर नहीं निकले। द्वारिकावासी शंकित हो उठे।

उधर 21 दिनों के पश्चात भी जब जाम्बवान कृष्ण को पराजित नहीं कर सके, तो उन्हें निश्चय हो गया कि यह साधारण पुरुष नहीं हैं। तब कृष्ण ने जाम्बवान को विष्णु और त्रेता के राम रूप में दर्शन दिए।

जाम्बवान कृष्ण के सामने नतमस्तक हो गए। उन्होंने कृष्ण को स्यमंतक मणि तो दी ही, उनके साथ अपनी पुत्री जाम्बवती का विवाह भी कर दिया।

कृष्ण ने सत्राजित को स्यमंतक मणि देकर अपने ऊपर लगे हुए कलंक को मिटा दिया। सत्राजित ने कृष्ण के शौर्य और उनकी निश्छलता पर मुग्ध होकर उन्हें मणि देने के साथ ही अपनी पुत्री सत्यभामा का विवाह भी उनसे करा दिया। कृष्ण ने मणि को लेना स्वीकार नहीं किया। उन्होंने मणि सत्राजित को लौटा दी।

–श्रीव्यथितहृदय

(साभार : 'श्रीमद्भागवत की कथाएं', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली)

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

मेष : मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। अपनी भावनाओं को वश में रखें। नौकरी में कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा।

वृष : कला व संगीत के प्रति रुझान बढ़ सकता है। संयत रहें। व्यर्थ के क्रोध से बचें। बातचीत में संतुलित रहें। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। खर्चों में वृद्धि होगी।

मिथुन : पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। नौकरी के लिए परीक्षा व साक्षात्कारादि कार्यों में सफलता मिलेगी। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। सेहत का ध्यान रखें।

कर्क : मन प्रसन्न रहेगा। कारोबार में वृद्धि होगी। परिवार का साथ मिलेगा। लाभ में भी वृद्धि होगी। सुस्वादु खान-पान में रुचि बढ़ेगी। खर्च भी बढ़ेंगे।

सिंह : मन परेशान हो सकता है। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। पिता का साथ मिलेगा। कारोबार के लिए विदेश यात्रा लाभप्रद रहेगी, परंतु सेहत का ध्यान रखें।

कन्या : आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन परेशान रहेगा। संयत रहें। व्यर्थ के क्रोध से बचें। धार्मिक संगीत में रुचि बढ़ सकती है। कारोबार के प्रति सचेत रहें।

तुला : मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी। संतान की सेहत का ध्यान रखें। खर्चों में वृद्धि होगी।

वृश्चिक : मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। नौकरी में कार्यक्षेत्र में वृद्धि के साथ स्थान परिवर्तन हो सकता है। जीवनसाथी का साथ रहेगा। पिता की सेहत पर ध्यान दें।

धनु : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान भी हो सकता है। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जा सकते हैं। भागदौड़ अधिक रहेगी।

मकर : कला व संगीत के प्रति रुझान बढ़ सकता है। नौकरी में बदलाव के योग बन रहे हैं। तरक्की के अवसर भी मिल सकते हैं। आय में वृद्धि होगी।

कुंभ : मन परेशान हो सकता है। संयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखें। नौकरी में तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। आय में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र भी बढ़ेगा।

मीन : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान हो सकता है। आत्मसंयत रहें। व्यर्थ के क्रोध से बचें। परिवार में भी शांति बनाए रखने का प्रयास करें।

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

05 मई, मंगलवार, **शक संवत्** : 15 वैशाख (सौर) 1948, **पंजाब पंचांग** : 22 वैशाख मास प्रविष्टे 2083, **इस्लाम** : 17 जिल्काद, 1447, **विक्रमी संवत्** : प्रथम (शुद्ध) ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी तिथि (दिन–रात)। मूल नक्षत्र, शिव योग रात्रि 12 .17 मिनट तक पश्चात सिद्ध योग, बव करण। चंद्रमा वृश्चिक राशि में दोपहर 12 .55 मिनट तक उपरांत धनु राशि में।

सूर्य उत्तरायण। सूर्य उत्तर गोल। बसंत ऋतु। अपराह्न 03 बजे से सायं 04 .30 मिनट तक राहुकालम्। अंगारकी श्रीगणेश चतुर्थी। गंडमूल विचार।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

मुखिया का शयन कक्ष साउथ वेस्ट में ही क्यों होना चाहिए? –प्रधान सिंह, रोहतक

■ वास्तु के अनुसार साउथ वेस्ट दिशा पृथ्वी तत्व की दिशा है। इस दिशा एवं तत्व का स्वभाव होता है स्थिरता, सुरक्षा एवं दीर्घकालीन संबंध। जब कोई पति–पत्नी इस दिशा में सोते हैं, तो वैवाहिक जीवन में स्थायित्व आता है। उनकी निर्णय लेने की क्षमता भी निखरती है। घर के स्वामी का नियंत्रण पूरे परिवार पर बना रहता है। घर के स्वामी को यथोचित मान–सम्मान केवल घर में ही नहीं वरन बाहर भी मिलता है। पति–पत्नी के आपसी संबंध भी मधुर रहते हैं। एक–दूसरे के प्रति समझ एवं सम्मान बना रहता है। ये सब बातें तभी संभव हैं, जब यहां पर कोई एंटी एलिमेंट या एंटी कलर न हो।

वर्ग पहेली : 8319

1	■	2	3			4		
5				■	■		■	■
	■		■	6				7
	■	8			■		■	
9		■	■	■	■	■	10	
	■	11	■	12		13	■	
14					■		■	
■	■		■	■	15			
16							■	

बाएं से दाएं
2. बुरी नजर के असर को खत्म करना (3,4)
5. एक आसन जिसमें शरीर को शव की तरह ढीला-ढाला रखते हैं (4)
6. अच्छे काम के लिए किया गया उपयोग; उचित उपयोग (5)
8. आनंद लेने वाला; रस लेने वाला; प्रेमी; रसिक (3)
9. अपेक्षित वस्तु की प्रस्तुति; कमी को पूरी करने का काम; खाना भरने का काम; पूर्णता; भरने का भाव (2)
10. एक प्रकार की घास; सदाबहार घास; दूर्वा (2)
12. जिससे आगे कुछ न हो; उत्कृष्ट; मुख्य (3)
14. कड़ापन; कुरकुरापन (5)
15. चुनौती; उच्च स्वर में किया गया युद्ध का आह्वान (4)
16. कह कर मुकर जाना; जुबान से फिरना; त्यक्त वस्तु को फिर से ग्रहण करना (2,2,3)

ऊपर से नीचे
1. कुशल तरीके से; चतुराई के साथ; निपुणतापूर्वक; सुरक्षित रूप से (7)
2. नास; सुंघनी; तंबाकू से बना नाक में रखने वाला पदार्थ (4)
3. अनुचर; अनुयायी; जनता; प्रजा; मनुष्य (2)
4. प्रशस्ति-पत्र; मानपत्र (4)
6. कुशलता; चतुराई; बुद्धिमानी; समझदारी (5)
7. अव्यवस्था फैलाना; क्रम भंग करना; खराबी करना; भूल करना (4,3)
11. राजाहीन; अनियंत्रित; विप्लव (4)
13. उंगलियों से रगड़ना; जोर से दबाना; रौंदना (4)
15. अलक; केश गुच्छ; जुल्फ; सिर के उलझे और गुथे हुए बाल (2)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली : 8318

1अ	■	2स	3मा	धा	न	4क	र	ना
5सं	धि	का	ल	■	■	ठो	■	■
तो	■	र	■	■	6स	र	ग	7ना
ष	■	8ना	मि	9त	■	ता	■	क
10ज	ल	■	■	र	■	■	11सं	त
न	■	12आ	■	13से	पू	14ते	■	क
15क	या	म	त	■	■	रे	■	भ
■	■	रा	■	■	16बा	र	बा	र
17त	बी	य	त	आ	जा	ना	■	ना

सुडोकू : 8301

* मध्यम

4				6				5
7								4
	1	2				3	7	
		4	7		6	5		
			1		9			
		9	8		5	2		
	2	8				7	6	
9								2
5				7				1

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू : 8300

8	5	6	3	7	2	4	1	9
4	1	7	9	8	6	3	2	5
3	9	2	1	5	4	8	7	6
9	7	4	8	2	5	6	3	1
6	2	3	7	9	1	5	4	8
1	8	5	6	4	3	2	9	7
5	6	9	2	3	7	1	8	4
7	3	1	4	6	8	9	5	2
2	4	8	5	1	9	7	6	3

संपादकीय जागरण

मंगलवार, 5 मई, 2026 : ज्येष्ठ कृष्ण - 3 वि. 2083

निरंतर प्रयास ही सफलता का सूत्र है

अपेक्षित और अप्रत्याशित

पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में से जहां असम, केरलम और केंद्रशासित प्रदेश पुडुचेरी के परिणाम अपेक्षा के अनुरूप सिद्ध हुए, वहीं पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु के नतीजे अप्रत्याशित रहे। बंगाल और तमिलनाडु के नतीजों ने इसलिए चौंकाया, क्योंकि जहां बंगाल में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस के सत्ता विरोधी माहौल का सामना करने के बाद भी इसकी आशा शायद ही किसी को रही हो कि उसके लिए सौ सीटों तक पहुंचना भी कठिन हो जाएगा और भाजपा दो सौ सीटों के निकट पहुंच जाएगी, वहीं तमिलनाडु में नए बने दल टीवीके के बारे में कम ही लोगों ने कमजोर सा अनुमान लगाया था कि वह सत्ता के निकट पहुंच जाएगा। बंगाल में ममता बनर्जी और तमिलनाडु में स्टालिन की पराजय यह बताती है कि जो क्षेत्रीय नेता अपनी सत्ता को खुद की निजी जागीर में बदल लेते हैं, उन्हें जनता अधिक समय तक सहन नहीं करती। तमिलनाडु में टीवीके के जोसेफ विजय ने वह कर दिखाया, जो एक समय आंध्र में एनटी रामाराव और दिल्ली में अरविंद केजरीवाल ने किया था-पहली बार में ही बंपर जीत। विजय की जीत का महत्व इसलिए भी है कि उन्होंने छह दशक बाद द्रविड़ दलों को तमिलनाडु की सत्ता से बाहर कर दिया। बंगाल में भी भाजपा ने कांग्रेस, वाम दलों के लंबे शासन के बाद 15 वर्षों तक शासन करने वाली तृणमूल कांग्रेस को बाहर का दरवाजा दिखा दिया। बंगाल में प्रचंड जीत के साथ ही भाजपा ने पूर्वोत्तर के साथ पूर्वी भारत पर बढ़त हासिल कर ली। बंगाल में जो राजनीतिक लड़ाई कांटे की मानी जा रही थी, उसमें भाजपा की इतनी बड़ी जीत यह बताती है कि ममता का शासन कुशासन का पर्याय बन गया था और मुस्लिम तुष्टीकरण की उनकी राजनीति एवं बांग्लादेश से होने वाली घुसपैठ की गंभीर समस्या की अनदेखी ने बहुसंख्यक समुदाय को भाजपा के पक्ष में एकजुट करने का काम किया। भाजपा के पूर्व संस्करण जनसंघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी के गृह राज्य में भाजपा की जीत ने यह भी रेखांकित किया कि उसके विस्तार और बढ़ते प्रभाव का सिलसिला तेज होने वाला है। इस जीत ने प्रधानमंत्री मोदी के साथ गृहमंत्री अमित शाह के कद को और अधिक बढ़ाने का काम किया है।

> 2026 की भाजपा वह नहीं, जो 2024 के लोकसभा चुनावों के बाद निस्तेज दिखने लगी थी और विपक्षी दल यह प्रतीति कराने लगे कि अब उनका नंबर आएगा

2026 की भाजपा वह नहीं, जो 2024 के लोकसभा चुनावों के बाद निस्तेज दिखने लगी थी और कांग्रेस समेत अन्य विपक्षी दल यह प्रतीति कराने लगे कि अब उनका नंबर आएगा। निःसंदेह अब बंगाल में भी डबल इंजन सरकार होगी, लेकिन इसके साथ ही भाजपा के सामने यह चुनौती भी आ खड़ी हुई है कि वह राज्य की जनता से किए गए अपने वादों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करे और इस राज्य को राजनीतिक हिंसा एवं घुसपैठियों से मुक्त करने के साथ फिर से पटरी पर लाए। पांच राज्यों के चुनाव नतीजे इसलिए भाजपा का अतिरिक्त उत्साहवर्धन करने वाले हैं, क्योंकि उसने असम में तीसरी बार कहीं बड़े अंतर से जीत हासिल की। इसके साथ ही केरलम और तमिलनाडु में भी अपने लिए कुछ जगह बनाई। पुडुचेरी में उसके समर्थन वाली सरकार का फिर से बनना भी कम महत्वपूर्ण नहीं, क्योंकि वह असम के साथ यहां भी सत्ता विरोधी माहौल को दरकिनार करने में सफल रही। ऐसा न तो बंगाल में ममता कर सकीं, न केरलम में विजयन और न ही तमिलनाडु में स्टालिन। कांग्रेस इससे प्रसन्न हो सकती है कि केरलम के रूप में एक और राज्य उसके हाथ आ गया, पर असम में वह जिस तरह पराजित हुई और यहां तक कि उसके सबसे प्रमुख नेता गौरव गोगोई भी हार गए, वह उसके लिए गहन आत्मचिंतन का विषय बनना चाहिए। वह भले ही केरलम में अपने सहयोगी दलों के साथ सरकार बनाने जा रही हो, लेकिन पांच राज्यों के नतीजे यही कह रहे हैं कि उसके नेतृत्व वाला गठबंधन आइएनडीआइए और कमजोर हो गया है।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या ग्रेट निकोबार परियोजना के विरोध का राहुल गांधी का रवैया सही है?

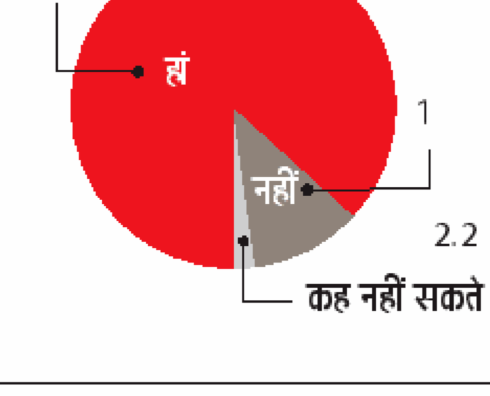

आज का सवाल

क्या पांच राज्यों के चुनाव नतीजे विपक्षी गठबंधन आइएनडीआइए के लिए झटका हैं?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। (सभी आकड़े प्रतिशत)

राष्ट्रीय राजनीति को बदलने वाले नतीजे

राहुल वर्मा

> पांच राज्यों के जनादेश से जहां भाजपा और मजबूत होगी, वहीं तृणमूल, द्रमुक और वाम दलों की हार से विपक्षी दलों का मोर्चा न केवल कमजोर होगा, बल्कि उसका संतुलन भी बदलेगा

चार राज्यों और एक केंद्रशासित प्रदेश के विधानसभा चुनाव परिणाम मिले-जुले रहे। असम, केरलम और पुडुचेरी के परिणाम अनुमानों के अनुरूप रहे तो पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु के नतीजे अप्रत्याशित एवं नाटकीय राजनीतिक परिवर्तन को रेखांकित कर रहे हैं। असम के बारे में माना जा रहा था कि भाजपा सत्ता में वापसी करने में सफल रहेगी तो केरलम में कांग्रेस को कामयाबी मिलेगी। पुडुचेरी में भी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की राह में कोई मुश्किल नहीं दिख रही थी। दो बड़े चुनावी राज्यों में से एक तमिलनाडु में नई-नवेली पार्टी टीवीके की भारी जीत ने राजनीतिक पंडितों को भी हैरान किया तो बंगाल में भाजपा की ऐतिहासिक जीत ने लंबे समय से कायम ममता बनर्जी को सत्ता से बाहर का रास्ता दिखाया। इन दोनों बड़े राज्यों में भारी राजनीतिक उलटफेर हुआ है।

पिछले कुछ वर्षों में असम भाजपा के राजनीतिक वर्चस्व वाले राज्य के रूप में उभरा है। लगातार सत्ता में रहने के बावजूद उसकी सीटों में बढ़ोतरी दर्शाती है कि जनता सरकार के कामकाज से काफी संतुष्ट है। 2023 में विधानसभा क्षेत्रों के नए सिरे से परिसीमन ने भी भाजपा की राजनीतिक ताकत बढ़ाई है। बोडोलैंड में सहयोगी दलों और असम गण परिषद के साथ ने भी पार्टी को मजबूती दी। कल्याणकारी योजनाओं और मुख्यमंत्री हिमंत की लोकप्रियता भी उसके पक्ष में जाती है। दूसरी ओर कांग्रेस सांगठनिक स्तर पर एकदम लुंज-पुंज हो गई है। चुनावों के दौरान ही उसकी राज्य इकाई के पूर्व अध्यक्ष के अलावा प्रचार अभियान समिति के प्रमुख जैसे दो दिग्गज नेता भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए। यह दर्शाता है कि राज्य की राजनीतिक हवा कांग्रेस के कितने विपरीत रही, जिसकी पुष्टि न केवल घटी हुई सीटों, बल्कि गौरव गोगोई जैसे नेता की हार में भी झलकती है, जिनके चेहरे पर पार्टी चुनाव लड़ रही थी।

केरलम में दस साल से वामपंथी सरकार सत्ता में थी, जिसने पिछले विधानसभा चुनाव में हर पांच साल में सरकार बदलने वाले राज्य के राजनीतिक रुझान को धता बताते हुए सत्ता में वापसी की थी। इसलिए यहां राजनीतिक परिवर्तन अवश्यंभावी माना जा रहा था। भाजपा यहां राजनीतिक पैठ बढ़ाने के प्रयास तो भरपूर कर रही है, पर वे फलीभूत नहीं हो पा रहे। वैसे भाजपा के इन प्रयासों की कीमत वाम दलों को चुकानी पड़ी, क्योंकि वह दक्षिण केरल और हिंदुओं विशेषकर एझावा जैसे उन समुदायों को साधने की जुगत में है, जो पारंपरिक रूप से वाम समर्थक माने जाते हैं। इसीलिए, केरलम की राजनीतिक लड़ाई में कांग्रेस के लिए कोई खास मुश्किल नहीं थी। केरलम से विदाई के बाद अब किसी भी राज्य में वामपंथी दलों की सरकार नहीं रह गई है।

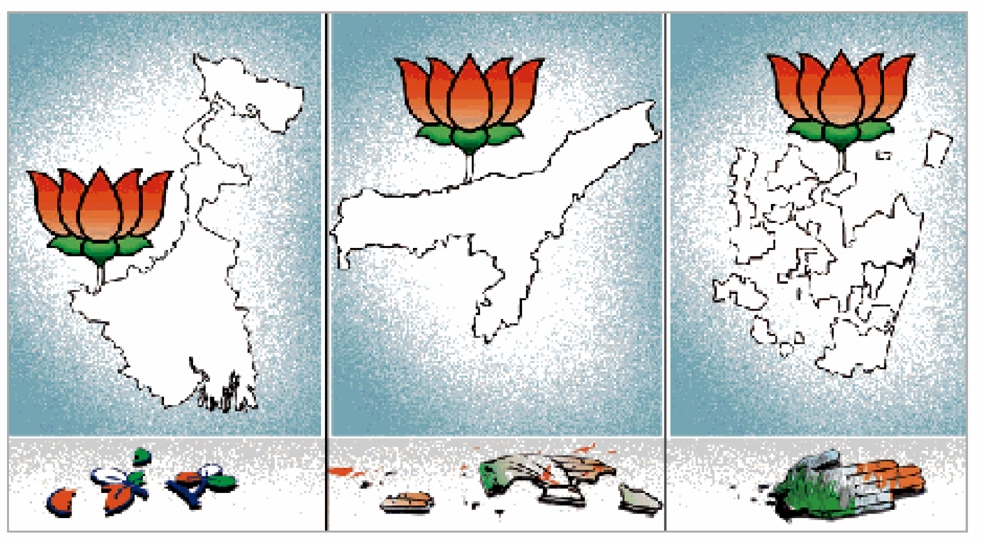

अवधेश राजपूत

बंगाल में भाजपा की ऐतिहासिक जीत पर भले ही कुछ राजनीतिक प्रेक्षक हैरानी जताएं, लेकिन राज्य की सत्ता तक उसकी पहुंच बस समय की ही बात थी। वर्ष 2019 से हो रहे चुनावों के समय से ही भाजपा करीब 40 प्रतिशत मतों के स्तर पर अटकी थी और इसमें पांच प्रतिशत तक की बढ़ोतरी उसे राज्य की कमान दिलाने को पर्याप्त थी। यह चुनाव उसके सत्तारोहण का पड़ाव बनकर उभरा। मतदाता सूचियों के गहन पुनरीक्षण यानी एसआइआर की भूमिका को भी भाजपा की चुनावी जीत में एक कारक माना जा सकता है, लेकिन यही इकलौता कारण नहीं रहा। राज्य की ममता बनर्जी सरकार लंबे समय से कायम सत्ता से उपजे असंतोष से भी जूझ रही थी। विभिन्न योजनाओं को लेकर केंद्र के साथ उनका टकराव भी एक वर्ग को अखर रहा था कि राज्य को इसके चलते अपेक्षित लाभ नहीं मिल पा रहे हैं। ममता बनर्जी की निजी लोकप्रियता के बावजूद उन्हें सबसे अधिक दुष्परिणाम अपने स्थानीय कार्यकर्ताओं के मनमानेपन और बड़बोलेपन का ही भुगतना पड़ा, जो लोगों को आतंकित करने के साथ ही उनके दैनंदिन जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप भी करते थे। इस बार चुनाव आयोग द्वारा मुहैया व्यापक सुरक्षा छत्र राज्य सरकार से कुपित मतदाताओं को आश्वस्त करने वाला साबित हुआ और मतदान के रुझान से लेकर परिणाम भी इस पहलू को पुष्ट करते हुए प्रतीत होते हैं। भाजपा ने भी पिछले विधानसभा चुनाव में की गई गलतियों से सबक लेते हुए सकारात्मक अभियान पर ध्यान केंद्रित किया, जिसका भी उसे लाभ मिला।

चुनाव परिणामों को लेकर सबसे हैरान करने का काम तमिलनाडु ने किया है, जहां 1967 के बाद पहली बार द्रविड़ केंद्रित राजनीति से इतर कोई दल सत्ता के शिखर पर उभरा है। तमिलनाडु की राजनीति पर फिल्म जगत का प्रभाव हमेशा से रहा है और देश में पहले भी बड़े राजनीतिक उलटफेर हुए हैं, लेकिन अभिनेता से नेता बने विजय की जीत कई मायनों में अप्रत्याशित रही है। एक समय एनटीआर ने समूचे आंध्र प्रदेश का दौरा कर अपनी सिनेमाई छवि को राजनीतिक स्वरूप दिया था, लेकिन उसकी तुलना में विजय ने ऐसा कुछ नहीं किया। आम आदमी पार्टी और असम गण परिषद जैसे एकाएक सफल हुए राजनीतिक प्रयोगों की पृष्ठभूमि भी कहीं न कहीं किसी सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों से जुड़ी रही, लेकिन विजय की टीवीके के साथ ऐसा भी कुछ नहीं रहा। इसलिए उनकी जीत वाकई चौंकाने वाली है।

इन चुनावों से भाजपा को बड़ा राजनीतिक संबल मिलेगा। केरलम और तमिलनाडु में असफलता के बावजूद असम में पहले से अधिक मजबूती और बंगाल के प्रचंड जनादेश से उसका 'मिशन ईस्ट' लगभग पूरा हो गया है। इससे उत्साहित पार्टी दक्षिण में और मजबूती के साथ अपनी ताकत लगाएगी। तृणमूल कांग्रेस और द्रमुक की ऐसी जबरदस्त हार विपक्षी दलों के मोर्चे आइएनडीआइए के लिए तगड़ा झटका है, क्योंकि ये इस गठबंधन के प्रमुख स्तंभ रहे हैं। उनकी हार से इस गठबंधन का संतुलन भी बदलेगा। कांग्रेस का दो राज्यों में दांव लगा था, जिसमें केरलम की जीत से उसे दम तो मिलेगा, लेकिन असम उसके लिए जिस तरह विषम होता जा रहा है, उसकी टीस उसे सालती रहेगी। लोकसभा सीटों के लिहाज से बड़े राज्यों में निरंतर हाशिए पर पहुंचना भी उसके लिए चिंतित करने वाला पहलू बनता जा रहा है।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं सेंटर फार पालिसी रिसर्च में फेलो हैं)

response@jagran.com

बंगाल में भाजपा ने किया कमाल

अवधेश कुमार

> बंगाल के परिणाम से वही चकित हैं, जो राज्य में जमीनी सच्चाई और एक वर्ग की छटपटाहट महसूस नहीं कर रहे थे

यदि पांच राज्यों-पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरलम, असम और पुडुचेरी के चुनाव परिणामों को समग्र रूप में देखा जाए, तो एक व्यापक तस्वीर उभरती है। इस तस्वीर में दो घटनाएं विशेष रूप से ऐतिहासिक प्रतीत होती हैं-बंगाल में भाजपा की उल्लेखनीय बढ़त और तमिलनाडु में थलापति विजय की पार्टी टीवीके का प्रभावशाली प्रदर्शन। हालांकि असम में भाजपा की लगातार तीसरी जीत भी महत्वपूर्ण है, लेकिन बंगाल और तमिलनाडु की घटनाएं राजनीतिक दृष्टि से अधिक दूरगामी प्रभाव वाली हैं। बंगाल में एक बड़े मुस्लिम मतदाता वर्ग के तृणमूल कांग्रेस के संगठित समर्थन के बावजूद भाजपा की बढ़त सामान्य घटना नहीं। वैसे तो असम में भी उल्लेखनीय मुस्लिम आबादी के बावजूद भाजपा की जीत ने कई स्थापित राजनीतिक मिथकों को तोड़ा है, पर असम और बंगाल की राजनीति के स्वरूप और सत्ता संरचना में मौलिक अंतर है। बंगाल में ममता बनर्जी ने जिस प्रकार का राजनीतिक माहौल और सत्ता संरचना विकसित की थी, उसमें किसी अन्य दल के लिए प्रभावी चुनौती पेश करना कठिन था। ऐसे में भाजपा की यह सफलता केवल चुनावी उपलब्धि नहीं, बल्कि एक बड़े परिवर्तन का संकेत है कि बंगाल की राजनीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है।

पिछले एक दशक से चुनावी रुझानों का यह एक प्रमुख पहलू लगभग हर राज्य में दिखाई देता है कि हिंदुत्व, संस्कृति और धार्मिक पहचान के प्रति हिंदुओं के एक व्यापक पुनर्जागरण ने एक स्थायी मतदाता आधार का निर्माण किया है। यह आधार ऐसा है, जो संतुष्टि, असंतोष या आंशिक नाराजगी के बावजूद किसी न किसी रूप में भाजपा या उसके सहयोगी दलों के पक्ष में झुकाव बनाए रखता है और कई बार उसकी अनुपस्थिति में वैचारिक रूप से निकट दलों की ओर भी स्थानांतरित हो जाता है। यह प्रवृत्ति पांचों राज्यों के चुनावों में भी देखने को मिली। भाजपा स्थानीय और क्षेत्रीय मुद्दों को उठाने के साथ-साथ चुनावी विमर्श को राष्ट्रीय विषयों से जोड़ने की रणनीति अपनाती रही है। इससे मतदाताओं के साथ उसका सीधा भावनात्मक और वैचारिक संवाद स्थापित होता है। भाजपा ने बंगाल और असम में राष्ट्रीय सुरक्षा और जनसांख्यिकीय संतुलन जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उभारा, जो चुनावी एजेंडे के केंद्र में रहे। मोदी सरकार द्वारा महिलाओं के सशक्तीकरण से जुड़े कार्यक्रमों ने भी चुनावी माहौल को प्रभावित किया। इन्होंने महिला मतदाताओं के बीच एक सकारात्मक संदेश देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सीएम आवास के पास से निकलते भाजपा कार्यकर्ता ● प्रेट्र

वास्तव में बंगाल के परिणाम ने केवल उन्हें ही चौंकाया है, जो जमीनी सच्चाई के साथ मतदाताओं और विशेष रूप से हिंदुओं के बड़े वर्ग के अंदर बदलाव की छटपटाहट को महसूस नहीं कर रहे थे। तृणमूल कांग्रेस ने बंगाल की सत्ता और पूरी राजनीति को निहित स्वार्थी तत्वों के हाथों में सौंप दिया था। इससे कट्टरपंथी तत्वों को मिले प्रत्यक्ष-परोक्ष संरक्षण और प्रोत्साहन के कारण पूरे प्रदेश में सांप्रदायिक भय और तनाव की स्थिति में कायम हो गई थी। वे कहने लगे थे कि मतदाता अपनी इच्छा से नहीं, तृणमूल कांग्रेस के नेताओं की चाहत से मतदान करें या घर बैठें, अन्यथा हिंसा, दमन, उत्पीड़न और पलायन का दंश झेलें। 'साइलेंट रिगिंग' बंगाल की मुख्य चुनावी प्रवृत्ति रही है। पहले इसी रास्ते वाम मोर्चा ने लगातार जीत सुनिश्चित की और फिर ममता ने भी अपनी पूरी पार्टी को उससे ज्यादा हिंसक और दमनकारी तत्वों में परिणत कर दिया। पलायन या हिंसा की सर्वाधिक शिकार महिलाएं होती हैं। इसी कारण इनका बहुत बड़ा मत तृणमूल के बजाय भाजपा को गया। जो लोग भाजपा पर हिंदुओं के ध्रुवीकरण का आरोप लगा रहे हैं, वे सतही विश्लेषण कर रहे हैं। वास्तव में बंगाल में राजनीतिक संघर्ष वास्तविक लोकतंत्र की पुनर्स्थापना तथा सत्ता संस्कृति को सर्वसमावेशी बनाने का था। यह जिम्मेदारी मुख्यतः प्रदेश के हिंदुओं को ही लेनी थी। हिंदुओं के अंदर अगर यह भाव पैदा हुआ कि इस सरकार के रहते हमारा अस्तित्व संकट में है, तो इसके कारण अत्यंत गहरे हैं। बांग्लादेश की हिंसक घटनाओं ने हिंदुओं के इस मनोविज्ञान को सशक्त किया कि हमें कुछ हद तक जान की बाजी लगानी होगी। इसके अलावा एसआइआर में मृत, संदिग्ध और स्थानांतरित मतदाताओं के नाम हटाने के कारण फर्जी मतदाताओं का खेल खत्म हो गया। सवा दो लाख केंद्रीय बलों की उपस्थिति, चुनाव के बाद भी सुरक्षा बलों के बने रहने की घोषणा, दूसरे राज्यों के अधिकारियों की चुनाव पर्यवेक्षक के रूप में नियुक्ति, प्रदेश के अधिकारियों का व्यापक पैमाने पर स्थानांतरण या चुनाव प्रक्रिया तक कार्य मुक्ति तथा चुनावी हिंसा वाले चिह्नित व्यक्तित्वों के विरुद्ध कार्रवाई एवं सतर्क दृष्टि आदि ने भय और संशयग्रस्त मतदाताओं के अंदर सुरक्षा को लेकर आश्वस्त किया, जिससे चुनावी माहौल में बड़ा परिवर्तन आया। भाजपा ने प्रधानमंत्री मोदी एवं गृह मंत्री अमित शाह के नेतृत्व में मतदाताओं को पहले दिन से यह विश्वास दिलाने की रणनीति अपनाई कि हम सत्ता में आ रहे हैं तथा किसी के साथ अन्याय हुआ तो पूरी पार्टी खड़ी रहेगी। इन सबके कारण ही बंगाल में यह असंभव-सा लगने वाला सत्ता परिवर्तन हुआ है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

सहिष्णुता का मार्ग

आज के समय में परिवारों के भीतर बढ़ती हुई हिंसा, आपसी तनाव, द्वेष और कटुता एक गंभीर सामाजिक चुनौती बनती जा रही है। छोटी-छोटी बातों पर विवाद, अहंकार और संवादहीनता के कारण परिवार, जो शांति और स्नेह का केंद्र होना चाहिए, वह संघर्ष का स्थल बनता जा रहा है। ऐसे समय में आवश्यक है कि हम अपने परिवार को अहिंसा की प्रयोगशाला बनाएं, जहां विचार, व्यवहार और संबंधों में सौम्यता और संतुलन का अभ्यास हो।

अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा से बचना नहीं है, बल्कि यह मन, वचन और कर्म की कोमलता का नाम है। मानसिक हिंसा-जैसे कटु शब्द, उपेक्षा, तिरस्कार और ईर्ष्या अक्सर शारीरिक हिंसा से भी अधिक गहरी चोट पहुंचाती है। इसलिए परिवार में शांति स्थापित करने के लिए सबसे पहले हमें अपनी मानसिक वृत्तियों को शुद्ध करना होगा। इस दिशा में मैत्री भावना का विशेष महत्व है। मैत्री का अर्थ है-हर सदस्य के प्रति अपनत्व और सद्भाव का भाव रखना। जब हम अपने परिवार के सदस्यों को प्रतिस्पर्धी या विरोधी नहीं, बल्कि सहयोगी और शुभचिंतक के रूप में देखने लगते हैं, तब आपसी तनाव स्वतः कम होने लगता है। मैत्री भावना से संवाद के द्वार खुलते हैं और गलतफहमियां दूर होती हैं। इसी प्रकार प्रमोद की भावना भी अत्यंत आवश्यक है। प्रमोद का अर्थ है-दूसरों की प्रगति, सफलता और गुणों में आनंदित होना। परिवारों में अक्सर ईर्ष्या और तुलना के कारण द्वेष उत्पन्न होता है। यदि हम एक-दूसरे की उपलब्धियों में हर्ष अनुभव करें, तो यह सकारात्मक ऊर्जा पूरे परिवार के परिवेश को बदल सकती है। प्रमोद भावना रिश्तों में मधुरता और सहयोग का संचार करती है। विरोध से तनाव बढ़ता है, जबकि धैर्य और संयम से प्रतिक्रिया देने पर विवाद शांत हो सकता है। सहिष्णुता हमें सिखाती है कि हर व्यक्ति के सोच, दृष्टिकोण और व्यवहार अलग हो सकते हैं। इस भिन्नता को स्वीकार करना ही परिपक्वता है।

ललित गर्ग

पाठकनामा

pathaknama@nda.jagran.com

बैंकिंग कार्यप्रणाली में सुधार जरूरी

'नागरिकों की समस्या बढ़ाते जटिल नियम' शीर्षक से प्रकाशित डा. ब्रजेश कुमार तिवारी का आलेख पढ़ा। लेखक द्वारा बैंकिंग प्रणाली में खामियों के समाधान के लिए जो उपाय सुझाए गए हैं, सराहनीय हैं। इन पर बैंक अथारिटी को गंभीरता से विचार करना चाहिए। इस अव्यवस्था के शिकार केवल सुदूर गांव में रहने वाले आदिवासी, अशिक्षित और वरिष्ठ नागरिक ही नहीं हैं, बल्कि शहरी शिक्षित नागरिक भी हैं। इसका एक उदाहरण मेरा व्यक्तिगत अनुभव है। मेरा और मेरी पत्नी का सार्वजनिक क्षेत्र के एक बैंक में खाता था। कुछ साल पहले मैंने इसी खाते के आधार पर एक फिक्स्ड डिपाजिट (एफडी) भी केवल अपने हस्ताक्षर से खुलवाया। उस समय बैंक ने न तो कोई आपत्ति जताई और न ही मेरी पत्नी के हस्ताक्षर आवश्यक बताए। दुर्भाग्यवश, नवंबर 2024 में मेरी पत्नी का निधन हो गया। कुछ महीनों बाद जब मैं एफडी को अपने नाम कराने और उत्तराधिकारी का नाम दर्ज कराने बैंक गया, तो बैंक ने यह कहते हुए मना कर दिया कि खाता दोनों हस्ताक्षरों से नहीं खोला गया है। इसके लिए मुझसे लीगल सर्टिफिकेट और सभी उत्तराधिकारियों का अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) मांगा गया, जिसकी प्रक्रिया अत्यंत जटिल है। मैंने बैंक को लिखित शिकायत दी और यह स्पष्ट किया कि इसमें मेरी कोई गलती नहीं है। बैंक ने भी भारतीय रिजर्व बैंक के 2011 और उसके बाद जारी निर्देशों का पालन नहीं किया, जिनके अनुसार ई या एस मोड में खाते खोलते समय ग्राहकों की उचित काउंसिलिंग और दोनों खाताधारकों के हस्ताक्षर सुनिश्चित किए जाने चाहिए, ताकि भविष्य में ऐसी समस्या उत्पन्न न हो। यह दर्शाता है कि बैंकिंग प्रणाली में नियमों के साथ-साथ उनकी कार्यप्रणाली में भी सुधार की आवश्यकता है।

श्रीभगवान भारद्वाज, बहादुरगढ़, हरियाणा

भाजपा की जीत के मायने

बंगाल में हालिया चुनावों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) व उसके सहयोगी दलों वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की भारी विजय ने राज्य की राजनीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत दिया है। लंबे समय से राज्य की सत्ता पर काबिज तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के प्रभाव को चुनौती देते हुए एनडीए ने कई क्षेत्रों में अप्रत्याशित सफलता हासिल की। इस जीत के पीछे कई ठोस कारण दिखाई देते हैं। पहला, भाजपा ने पिछले कुछ वर्षों में बंगाल में अपने संगठनात्मक ढांचे को काफी मजबूत किया है। बूथ स्तर तक कार्यकर्ताओं की सक्रियता, इंटरनेट मीडिया का प्रभावी उपयोगव केंद्रीय नेतृत्व की लगातार रैलियों ने मतदाताओं तक सीधा संवाद स्थापित किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह जैसे नेताओं की आक्रामक चुनावी रणनीति ने पार्टी के पक्ष में माहौल बनाने में अहम भूमिका निभाई। दूसरा पहलू राज्य में कथित भ्रष्टाचार, हिंसा और कानून-व्यवस्था के मुद्दे रहे। भाजपा ने इन मुद्दों को प्रमुखता से उठाते हुए जनता के बीच यह संदेश दिया कि बदलाव आवश्यक है।

विभूति बुपक्या, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

चिकित्सा क्षेत्र में पारदर्शिता

डाक्टर को भगवान का रूप माना गया है, समय-समय पर सरकार को डाक्टरों की फीस के साथ-साथ अन्य विषयों में शिकायतें प्राप्त होती हैं। अनेकों बार इस प्रकार के लापरवाही के मामले भी सामने आते हैं, जिनमें झोलाछाप द्वारा चिकित्सा में विभिन्न तरह की लापरवाही बरती जाती है। इसलिए निजी क्लीनिक और डाक्टरों की सेवा में पारदर्शिता लाने के लिए राष्ट्रीय मेडिकल आयोग द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार अब प्रत्येक डाक्टर को अपनी योग्यता से लेकर फीस तक सभी कुछ जानकारी अंग्रेजी के साथ-साथ स्थानीय भाषा में दिखानी होगी और मरीज को यह भी जानकारी देनी होगी कि उसके इलाज पर कितना खर्चा आएगा। उन्हें अपना रजिस्ट्रेशन नंबर भी प्रदर्शित करना होगा। उसके साथ-साथ डाक्टर को मरीज के परामर्श कक्षा का आकार 70 वर्ग फीट रखा चाहिए। प्रत्येक बेड के लिए कम से कम 65 वर्ग फीट जगह देना अनिवार्य होगा। वहीं, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने इस संदर्भ में राज्य मेडिकल संस्था और आम लोगों से सुझाव भी मांगे हैं। निजी क्लीनिक में कई तरह की घटनाएं होती हैं। वहीं, क्लीनिक में इस तरह की घटनाओं का जन्म होता है कि डाक्टर के विषय में जानकारी नहीं होती। अनेकों बार फीस के विषय में मरीज और डाक्टर के बीच विवाद भी होता है। इसलिए जरूरी है कि जनता को जागृत करने के लिए क्लीनिक के बाहर डाक्टर के विषय में विस्तृत रूप से जानकारी होनी चाहिए। चाहिए।

मीना धानिया, सिरसपुर

पोस्ट

मुझे सबसे ज्यादा खुशी तमिलनाडु के नतीजे से हुई। जब भी मैं उन राजनीतिक वंशवादियों की हार देखती हूं, जिन्होंने राज्यों को अपनी जागीर बना लिया है, तो मेरे मन में आशा का संचार होता है।

तवलीन सिंह@tavleen_singh

ममता बनर्जी कल ही चुनाव नहीं हारीं। वे उसी दिन हार गई थीं, जब टीएमसी की भीड़ ने आरजी कर अस्पताल में एक डाक्टर के साथ हुए दुष्कर्म और हत्या के महत्वपूर्ण साक्ष्यों को नष्ट कर दिया था। यह सबसे उपयुक्त बदला है कि एक दुखी मां ने राजनीति में प्रवेश किया और खुद टीएमसी को हराने में मदद की। अमित थडाणी@amitsur

भाजपा भारतीय राजनीतिक परिदृश्य पर हावी हो रही है। 20 करोड़ की आबादी वाले देश के दूसरे सबसे बड़े समुदाय के लिए भाजपा के साथ मिलकर काम करना परिपक्व, व्यावहारिक और बुद्धिमानी भरा होगा, पर वह ऐसा नहीं करेगा। टकराव भरे, शत्रुतापूर्ण रवैये के साथ उसकी राजनीतिक युद्ध छेड़ने की मानसिकता ही रहेगी। मुसलमानों के एक बड़े तबके की इस मूर्खता और स्वार्थी सोच के कारण आरफा खानम और राणा अयूब जैसे लोग आनंद लेते रहेंगे।

खालिद बेग@KhalidBaig85

जनपथ

सत्ता ममता की गई स्टालिन बेकार,
गोगोई की असम में हुई करारी हार।
हुई करारी हार भाजपामय पुडुचेरी,
बैठा 'वाम' गंवाय बची थी जो इक ढेरी!
जगा सनातन आज चला ना सेक्युलर पत्ता,
तप कर पंद्रह साल गई दीदी की सत्ता!!

-ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा-201309 से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित
संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी दूरभाष: नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 120- 4615800, E- mail:delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 290

बंगाल में हुआ नया सवेरा, 69 साल बाद बदली सियासत की धारा

जयकृष्ण वाजपेयी • जागरण

- श्यामा प्रसाद मुखर्जी की भूमि पर इस बार हुआ भाजपा का ऐतिहासिक उदय
- तुष्टीकरण और घुसपैठ के विरुद्ध 'बंगाली मानुष' ने चुना विकास और सुरक्षा का नया पथ
- उत्तर से दक्षिण तक बदला जनादेश,महिलाओं-युवाओं ने लिखा परिवर्तन का नया अध्याय
- बंगाल में 'दीदी' का दुर्ग ध्वस्त, भगवा लहर में बही बंगाली अस्मिता की राजनीति

बंगाल विधानसभा चुनाव में मिली बंपर जीत को लेकर कोलकाता में सोमवार को केसरिया गुलाल से होली खेलते भाजपा कार्यकर्ता और समर्थक • एएनआइ

कोलकाता: बंगाल की राजनीति में सोमवार एक नए सूर्योदय का साक्षी पूरा देश बना है। दो दशकों के कांग्रेसी तथा 34 वर्षों के वामपंथी शासन के बाद 15 वर्षों के तृणमूल कांग्रेस के वर्चस्व को उखाड़ फेंकते हुए भाजपा ने बंगाल के राजनीतिक भूगोल को बदल दिया है। यह उस विचारधारा की घर-वापसी है, जिसकी नींव डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने रखी थी। उत्तर बंगाल की पहाड़ियों से लेकर सुंदरबन के मुहानों तक और जंगलमहल की पगडंडियों से लेकर कोलकाता की गलियों तक, जनता ने ममता बनर्जी के 'अस्मिता और एसआइआर वाला कार्ड' को नकारते हुए पीएम मोदी के 'भरोसे' पर मुहर लगा दी है।

अस्मिता बनाम अस्तित्व: क्यों फेल हुआ टीएमसी का नैरेटिव? : पिछले एक दशक से बंगाल की राजनीति 'बाहरी बनाम भीतरी' और 'बंगाली अस्मिता' के ईद-गिर्द घूमती रही है। ममता ने इस चुनाव में भी मछली, मांस और क्षेत्रीय गौरव के भावनात्मक मुद्दों को हवा दी, लेकिन धरातल पर जनता के मुद्दे कुछ और ही थे। एसआइआर यानी फर्जी मतदाताओं के नाम हटाने की प्रक्रिया को तृणमूल ने राजनीतिक हथियार बनाने की कोशिश की थी। लेकिन नतीजों ने साफ कर दिया कि यह जनता के लिए मुद्दा था ही नहीं। मुस्लिम बहुल मुर्शिदाबाद, मालदा और उत्तर 24 परगना जैसे जिलों में, जहां सबसे अधिक नाम एसआइआर में कटे थे, वहां भाजपा की भारी बढ़त ने यह साबित कर दिया कि लोग अब पारदर्शी लोकतंत्र चाहते हैं। कलिम्पोंग जहां सबसे कम मतदाता हटे वहां भी और जहां सर्वाधिक (मुर्शिदाबाद, उत्तर 24 परगना, मालदा) कटे वहां भी वोटरों ने भाजपा की झोली दोनों हाथों से भर दी। रात आठ बजे तक मुर्शिदाबाद में रूझानों/नतीजों में आठ सीटों पर भाजपा आगे थी। इस जिले के बेलडांगा, बहरमपुर जैसी सीटें भाजपा ने जीती है। बेलडांगा में ही हुमायूं कबीर ने बाबरी मस्जिद की नींव रखी है, यह सीट भाजपा के खाते में आना बड़ा संकेत हैं।

जंगलमहल से कोलकाता तक: अभेद्य किलों में सेंध : भाजपा के शीर्ष नेतृत्व और आरएसएस के जमीनी कार्यकर्ताओं ने पिछले चार वर्षों में उत्पीड़न और हिंसा झेलने के बावजूद जो 'तिनका-तिनका' संगठन को मजबूत कर खड़ा किया, उसका परिणाम सबके सामने है। कोलकाता, दक्षिण 24 परगना, हावड़ा और पूर्व बर्द्धमान जैसे जिले, जहां भाजपा पिछली बार खाता खोलने को तरस रही थी, आज वहां तृणमूल का सूपड़ा साफ हो गया है। यह इस बात का प्रमाण है कि बंगाल के मध्य वर्ग से लेकर सरकारी कर्मचारी, जो सातवें वेतन आयोग की प्रतीक्षा में थे, अब बदलाव के मोड पर हैं।

महिलाओं की मौन क्रांति और मुस्लिम वोटों का बिखराव : इस जीत का सबसे चौंकाने वाला पहलू दो चरणों में हुई रिकार्ड 93 प्रतिशत वोटिंग है। मतदान केंद्रों पर पुरुषों से अधिक महिलाओं की लंबी कतारों ने यह संकेत दे दिया था कि 'लक्ष्मी भंडार' जैसी योजनाओं पर अब 'सुरक्षा और सम्मान' भारी पड़ रहा है। संदेशखाली, आरजी कर कांड जैसी घटनाओं से उपजा आक्रोश और महिला सुरक्षा का मुद्दा बंगाली समाज के अंतर्मन तक पहुंच गया। साथ ही, यह नतीजे दर्शाते हैं कि भाजपा की जीत में ममता सरकार से नाराज मुस्लिम मतदाताओं का भी एक बड़ा हिस्सा शामिल है। मुस्लिम बहुल मालदा, उत्तर दिनाजपुर, बीरभूम में भाजपा का प्रदर्शन इस ओर इशारा करता है कि पिछड़ों को अब और ठगा नहीं जा सकता।

नया बंगाल : विकास और रोजगार की आस

जनता ने घुसपैठ, जनसांख्यिकीय परिवर्तन और भ्रष्टाचार के खिलाफ कड़ा संदेश दिया है। रोजगार और महिलाओं को आर्थिक सुरक्षा के साथ-साथ एक 'निर्मम' नहीं बल्कि 'नियमबद्ध' सरकार देने का वादा बंगाली मानुष के दिल में उतर गया। उत्तर बंगाल के पांच तो जंगलमहल के तीन जिलों में तृणमूल शून्य पर है, तो स्पष्ट है कि बंगाल अब विकास की मुख्यधारा में शामिल होने को आतुर है।

भविष्य की राजनीति को बयां करते चुनाव नतीजे

त्वरित टिप्पणी
आशुतोष झा

- भाजपा को सिर्फ चुनावी नहीं, वैचारिक जीत भी दे गया बंगाल
- तमिलनाडु ने पारंपरिक द्रविड़ राजनीति को दिया झटका

नई दिल्ली: पांच राज्यों में से तीन बंगाल, असम और पुडुचेरी भाजपा के साथ, केरल में वैकल्पिक चुनाव के तहत कांग्रेस और तमिलनाडु में द्रविड़ राजनीति से परे पूर्ण बदलाव कर सत्ता दो वर्ष पहले राजनीति में आए एक सिने स्टार के हाथ। सोमवार को आये ये नतीजे राज्यों की सीमा से परे वोटरों की अपेक्षाओं-आकांक्षाओं और भविष्य की राष्ट्रीय राजनीति को खुल कर बयां करते हैं। यह स्पष्ट करते हैं कि किसी भी चुनाव के लिए विकास और सुशासन से ज्यादा प्रासंगिक कोई मुद्दा नहीं, चेहरे की विश्वसनीयता से ज्यादा बड़ी कोई गारंटी नहीं, और अगर कहीं इन दोनों विकल्प की कमी हो तो फिर ऐसे चेहरे के हाथ अपनी किस्मत से देने से परहेज नहीं, जिसके पास प्रशासनिक अनुभव की कमी हो, लेकिन पीठ पर भ्रष्टाचार की गठरी नहीं हो। पांच राज्यों के इन नतीजों ने आगामी विधानसभाओं और 2029 के लोकसभा चुनाव के लिए भी विमर्श सेट कर दिया है।

सोमवार को वोटों की गिनती शुरू होने से पहले ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट किया और कहा, "कौशल, परिश्रम और करुणा हमारे जीवन की अद्भुत शक्तियां हैं। इनके माध्यम से हम केवल हर चुनौती को ही पार नहीं सकते हैं, बल्कि ये हमारे लक्ष्यों की प्राप्ति में भी मददगार हैं।" बंगाल के नतीजों पर पहले नजर डालें तो यह सौ प्रतिशत सही साबित होता है। प्रधानमंत्री मोदी के अथक परिश्रम, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के ठोस चुनावी प्रबंधन ने ऐसा माहौल तैयार किया, जिसमें बंगाल की जीत सिर्फ चुनावी न रहकर वैचारिक जीत के दावे को पूरा कर दिया। बंगाल का भाजपा के जीवन में खास महत्व है। जनसंघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी बंगाल से थे और उन्होंने अनुच्छेद-370 के खात्मे के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग किया था। राष्ट्रवाद और भारत माता भाजपा के हर नारे में होते हैं और वंदे मातरम के रचयिता बंकिम चंद्र बंगाल से थे। अभी हाल ही में केंद्र सरकार ने सभी स्कूलों और विश्वविद्यालयों को निर्देश दिया है कि अब से बंकिम चंद्र के लिखे समग्र वंदे मातरम का गायन किया जाए। उस बंगाल ने भाजपा को प्रचंड जीत देकर एक तरह से उस विचारधारा को खुली बाहों से स्वीकार कर लिया जो भाजपा के लिए प्रिय था और विरोधी दल जिसे बंटवारे के नजरिये से देखते थे। इसीलिए मोदी और शाह बार-बार अंग, बंग और कलिंग की बात करते थे।

राजनीतिक रूप से देखा जाए तो जिस तरह 2024 के चुनाव में ओडिशा भाजपा के लिए एक नई जमीन के रूप में उभरा था, उसी तरह बंगाल 2029 के चुनाव में भूमिका निभा सकता है। ध्यान रहे कि लोकसभा सीटों की संख्या के मामले में बंगाल, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र के बाद सबसे बड़ा राज्य है। अगले तीन वर्षों में भाजपा अगर राज्य में कार्यसंस्कृति में बदलाव लाने में सफल रही और विकास का अनुभव लोगों तक पहुंचा तो लोकसभा चुनाव में यह राज्य अहम भूमिका निभाएगा। न सिर्फ इतना, बल्कि आगामी उत्तर प्रदेश समेत दूसरे चुनावों में कार्यकर्ताओं में नया जोश भर सकता है। ओडिशा में बीजद को हराने के बाद लगातार दूसरी बार भाजपा ने एक मजबूत क्षेत्रीय दल को हराया है। इससे पहले दिल्ली में उस आम आदमी पार्टी को पटखनी दे चुकी है, जिसके उदय ने सबको चौंकाया था।

असम के नतीजे तो आश्चर्यजनक हैं। कुल 126 सीटों वाली विधानसभा में 23 सीटें ऐसी हैं, जहां मुस्लिम वोटरों की संख्या 60 प्रतिशत से ज्यादा है। मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा कहते रहे हैं कि वहां भाजपा वस्तुतः 103 सीटों पर ही चुनाव लड़ रही है। ऐसे में सौ के पार जाना विस्मयकारी है और कांग्रेस के लिए चिंता का विषय। कांग्रेस से मुख्यमंत्री पद के दावेदार और लोकसभा में उपनेता गौरव गोगोई भी 22 हजार से ज्यादा वोटों से हार गए। तो फिर नाव कौन चलाए। केरल में दस वर्ष के बाद वापसी जरूर कांग्रेस को थोड़ा संबल देगी, लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि वहां तमिलनाडु की तरह कोई तीसरा विकल्प नहीं था। केरल में भी वाम राजनीति के अंत की शुरुआत और भाजपा के भविष्य की शुरुआत पक्की हो गई तो कोई नहीं जानता कि अगले दस वर्षों में वहां भी कांग्रेस को भाजपा से ही सामना करना पड़े..। वैसे भी पार्टी तिरुअनंतपुरम में अपना मेयर बना चुकी है और गुजरात इसका उदाहरण है कि स्थानीय निकाय चुनाव की जीत भाजपा के लिए नींव की तरह काम करती है।

तमिलनाडु, जेन-जी चुनाव का एक उदाहरण है। 1967 से वहां जिस द्रविड़ राजनीति की शुरुआत हुई और द्रमुक व अन्नाद्रमुक के रूप में बारी बारी से सत्ता बांटते रहे, उस परंपरा को सिने स्टार विजय की लोकप्रियता ने रोक दिया। वस्तुतः राज्य की जनता दोनों दलों की घिसी पिटी द्रविड़ राजनीति से त्रस्त हो चुकी थी, जिसमें सनातन को गाली देना एक फैशन है। इन दलों को खुद को प्रासंगिक बनाना होगा। विजय बहुमत के मैजिक अंक से थोड़ा पीछे हैं जो दूसरों के समर्थन से हासिल करना मुश्किल नहीं है। लेकिन अगर वह कांग्रेस से भी दूर रहे, तो विजय भी भविष्य में एक ऐसे घटक के रूप में दिख सकते हैं जो किसी खेमे में न रहते हुए भी मुद्दों पर आधारित फैसला लें।

प्रतिक्रिया

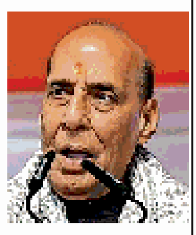
बंगाल की जनता ने भाजपा को ऐतिहासिक जनादेश दिया है, जो लंबे समय से प्रतीक्षित विकास, सुशासन और पारदर्शी राजनीति के प्रति उनके समर्थन को दिखाता है। लोगों ने शांति, समृद्धि और प्रगति का मार्ग चुना है। मैं बंगाल की जनता को हार्दिक धन्यवाद और बधाई देता हूं। यह विजय पीएम मोदी के नेतृत्व, जनता के विश्वास का प्रमाण है। **- राजनाथ सिंह,** रक्षा मंत्री

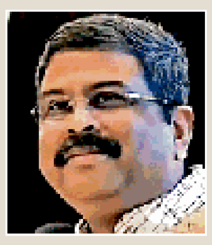
अंग-बंग-कलिंग में खिला कमल। बंगाल की पुण्यभूमि ने नया इतिहास रचते हुए अपना प्रचंड व निर्णायक जनादेश देकर राज्य में पहली बार कमल खिलाया है। यह जनादेश हमारे प्रेरणास्रोत डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के सपनों के अनुरूप सोनारबांग्ला के निर्माण की दृढ़ आधारशिला सिद्ध होगा। **- धर्मेंद्र प्रधान,** केंद्रीय शिक्षा मंत्री।

यह हमारे लिए एक ऐतिहासिक क्षण है। भाजपा को चार राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश में ऐतिहासिक जनादेश मिला है। मैं भाजपा पर भरोसा जताने के लिए जनता का आभारी हूं। बंगाल, असम और पुडुचेरी के परिणामों ने दिखाया है कि देश की जनता को प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व पर भरोसा है। **-नितिन नवीन,** राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

जनता ने मां, माटी, मानुष के आदर्शों का उल्लंघन करने वाले दमनकारी तृणमूल कांग्रेस शासन का अंत करने का फैसला किया है। भाजपा की यह ऐतिहासिक जीत उन अनगिनत कार्यकर्ताओं और नेताओं की है, जिनके निस्वार्थ संघर्ष, बलिदान और साहस ने बहुप्रतीक्षित बदलाव लाया है। मोदी जी के नेतृत्व में बंगाल अग्रणी राज्यों में फिर से उभरेगा। **निर्मला सीतारमण,** वित्त मंत्री

असम, बंगाल और पुडुचेरी में भाजपा के नेतृत्व वाले राजग को मिला जनादेश प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शासन का एक मजबूत समर्थन है। राजग के पक्ष में मिला चुनावी जनादेश सिर्फ एक लहर नहीं, बल्कि प्रधानमंत्री मोदी के वादों और नीतियों में व्यक्त विश्वास की सुनामी है। **बांसुरी स्वराज,** भाजपा सांसद

मैंने अपने सार्वजनिक जीवन में कई जीत और हार देखी हैं। मैं जनता के फैसले के आगे नतमस्तक हूं। द्रमुक ने सत्तारूढ़ पार्टी के तौर पर अच्छा काम किया है और अब अच्छे विपक्षी दल के तौर पर काम करेगी। द्रमुक की राजनीतिक यात्रा जारी रहेगी। **- एमके स्टालिन,** द्रमुक अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री

जनता ने भाजपा पर लुटाई 'ममता'

206 सीटों पर जीत, बंगाल में पहली बार सरकार गठन करेगी

विशाल श्रेष्ठ • जागरण

- ममता सरकार के कई मंत्री हारे, नंदीग्राम के अलावा सिंगुर सीट पर भी हारी तृणमूल
- कांग्रेस व वाममोर्चा का फिर से खुला खाता, नौशाद व हुमायूं कबीर भी चुनाव जीते

कोलकाता : भाजपा ने जनसंघ के संस्थापक डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी की धरती पर कमल खिलाने का जो सपना देखा था, वह अंततः साकार हुआ। भगवा पार्टी ने बंगाल विधानसभा चुनाव में प्रचंड बहुमत के साथ ऐतिहासिक जीत दर्ज कर 15 वर्षों के तृणमूल सरकार का अंत कर दिया। सोमवार को घोषित हुए नतीजों में देर रात तक के आंकड़ों में भाजपा ने 206 सीटों पर जीत दर्ज कर ली थी। पिछले चुनाव में 215 सीटें जीतने वाली तृणमूल 80 सीटें ही जीत पाई थी और एक पर बढ़त बनाए थी।

ममता के कई मंत्री व पार्टी के दिग्गज नेता भी तेज थपेड़े नहीं सह पाए। तृणमूल आठ जिलों में खाता तक नहीं खोल पाई। तृणमूल को मुस्लिम बहुल जिलों में भी भारी झटका लगा है। वहां मुस्लिमों ने भी भाजपा के पक्ष में मतदान किया। तृणमूल नंदीग्राम व सिंगुर सीट भी हार गई। तृणमूल को गढ़ कोलकाता में भी झटका लगा। आरजी कर पीड़िता की मां व संदेशखाली में महिलाओं के यौन उत्पीड़न पर मुखर हुईं रेखा की जीत ने साबित कर दिया कि महिला सुरक्षा प्रमुख मुद्दा था।

माकपा ने एक तो कांग्रेस ने दो सीटें जीतीं। इंडियन सेक्युलर फ्रंट के नौशाद सिद्दीकी भांगड़ से व तृणमूल से निलंबित आम जनता उन्नयन पार्टी संस्थापक हुमायूं कबीर नउदा व रेजीनगर से जीते।

उत्तर 24 परगना में समर्थकों के साथ जीत का प्रमाणपत्र दिखातीं भाजपा उम्मीदवार और आरजी कर पीड़िता की मां रत्ना देबनाथ • आइएएनएस

भाजपा की जीत के प्रमुख कारण

- भाजपा यह भरोसा दिलाने में सफल रही कि घुसपैठ व डेमोग्राफी में बदलाव की समस्या का सिर्फ वह ही समाधान कर सकती है।
- लोगों को महसूस कराया कि तृणमूल की केंद्र के विरोध की नीति के कारण बंगाल विकास के मामले में पिछड़ रहा है।
- पीएम मोदी ने चुनाव प्रचार के दौरान 'भय बनाम भरोसे' की जो गारंटी दी थी, बंगाल के लोगों ने उसे मान्यता प्रदान की।
- भाजपा की प्रचंड एसआइआर को लेकर उसके प्रति जनता के समर्थन को दर्शाती है।

तृणमूल की हार के ये प्रमुख कारण रहे

- 15 साल की ममता सरकार के विरुद्ध सत्ता विरोधी लहर
- ममता सरकार में हुए शिक्षा, राशन, नगरपालिका घोटालों के प्रति जनाक्रोश
- एसआइआर का विरोध भी बड़े वर्ग को रास नहीं आया।
- बंगाल में व्याप्त सिंडिकेट राज, कट मनी की संस्कृति के प्रति जनाक्रोश

महिला सुरक्षा का मुद्दा बना गेमचेंजर

इंद्रजीत सिंह • जागरण

कोलकाता : बंगाल चुनाव में भाजपा की प्रचंड जीत के पीछे महिला सुरक्षा का मुद्दा गेमचेंजर बनकर उभरा है। भाजपा ने इस संवेदनशील विषय को सिर्फ चुनावी भाषणों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे अपनी रणनीति का केंद्रीय आधार बनाया। इसका सबसे बड़ा उदाहरण रहा कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कालेज एवं हास्पिटल में दुष्कर्म और हत्या की शिकार महिला डाक्टर की मां को उत्तर 24 परगना जिले की पानीहाटी सीट से उम्मीदवार बनाना और संदेशखाली कांड की पीड़िता रेखा पात्र को हिंगलगंज से मौका देना।

मतदाताओं के मनोविज्ञान पर पड़ा असर : आरजी कर पीड़िता की मां की प्रचंड जीत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भाजपा की यह रणनीति केवल प्रतीकात्मक नहीं थी, बल्कि इसका सीधा असर मतदाताओं के मनोविज्ञान पर पड़ा। आरजी कर और संदेशखाली में महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं ने पूरे देश को झकझोर दिया था। इन घटनाओं ने कानून-व्यवस्था, महिला सुरक्षा और शासन की जवाबदेही पर गंभीर सवाल खड़े किए थे। भाजपा ने इन्हीं सवालों को चुनावी विमर्श के केंद्र में लाकर सत्ताधारी दल को घेरने की कोशिश की।

पानीहाटी से जीत हासिल करने वाली महिला डाक्टर की मां का चुनाव लड़ना अपने आप में एक बड़ा प्रतीक बन गया। यह सिर्फ एक सीट की लड़ाई नहीं थी, बल्कि न्याय और सुरक्षा की मांग का प्रतिनिधित्व भी था। इसी तरह हिंगलगंज से रेखा पात्र की जीत ने संदेशखाली की घटनाओं को राजनीतिक रूप से जीवित रखा।

ममता सरकार के खिलाफ फूटा जनाक्रोश,संदेशखाली कांड की पीड़िता को हिंगलगंज से मौका देना भी भाजपा के पक्ष में रहा

महिलाओं के बीच मजबूत संदेश : भाजपा की यह रणनीति कई स्तरों पर काम करती नजर आई। पहला, इसने महिला मतदाताओं के बीच एक मजबूत संदेश दिया कि पार्टी उनकी सुरक्षा को प्राथमिकता दे रही है। दूसरा, इसने विपक्षी दलों के खिलाफ एक नैरेटिव तैयार किया कि राज्य में महिलाओं के खिलाफ अपराध बढ़ रहे हैं।

इमोशनल कनेक्ट की राजनीति : जादवपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर व राजनीतिक विश्लेषकों इमनकल्याण लाहिड़ी का मानना है कि भाजपा ने इस बार इमोशनल कनेक्ट की राजनीति को रणनीतिक रूप से इस्तेमाल किया। पीड़ित परिवारों को टिकट देकर पार्टी ने यह संदेश देने की कोशिश की कि वह उन लोगों के साथ खड़ी है जो इन घटनाओं से सीधे प्रभावित हुए हैं।

सुवेंदु ने ममता को फिर दी करारी मात, कई मंत्री भी हारे

राजीव कुमार झा • जागरण

भवानीपुर सीट से तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो ममता बनर्जी को हराने के बाद सोमवार को जीत का प्रमाणपत्र दिखाते भाजपा उम्मीदवार सुवेंदु अधिकारी • प्रेट्र

कोलकाता : बंगाल में 15 साल से सत्ता पर काबिज रही तृणमूल कांग्रेस सरकार व सत्तारूढ़ पार्टी का प्रमुख चेहरा मुख्यमंत्री ममता बनर्जी खुद की अपनी घर की सीट तक नहीं बचा सकीं। 2021 के चुनाव में नंदीग्राम में धूल चटाने के बाद नेता प्रतिपक्ष सुवेंदु अधिकारी अब ममता को उनके घर कोलकाता के भवानीपुर में भी करारी शिकस्त देकर बड़े ज्वाइंट किलर बनकर उभरे हैं। सुवेंदु ने ममता को 15,105 वोटों के बड़े अंतर से हराया है। सुवेंदु को 73,917 वोट जबकि ममता को 58,812 वोट मिले।

सुवेंदु ने पूर्व मेदिनीपुर की अपनी परंपरागत नंदीग्राम सीट से भी तृणमूल प्रत्याशी पवित्र कर को 9,665 वोटों से हराया है। भाजपा की आंधी में न सिर्फ मुख्यमंत्री बल्कि उनकी सरकार के 12 से अधिक हेवीवेट मंत्रियों और कई पुराने विधायकों को भी हार का सामना करना पड़ा है।

बिजली मंत्री अरूप विश्वास से लेकर शिक्षा मंत्री ब्रात्य वसु तक हारे : हारने वाले हेवीवेट मंत्रियों में ममता के बेहद करीबी अरूप विश्वास से लेकर शिक्षा मंत्री ब्रात्य बसु तक शामिल हैं। इसके अलावा वित्त मंत्री चंद्रिमा भट्टाचार्य, मंत्री शशि पांजा, वरिष्ठ मंत्री मलय घटक व डा मानस भुइयां, मंत्री शशि पांजा, मंत्री सुजीत बोस, मंत्री उदयन गुहा, वन मंत्री बीरबाहा हांसदा, मंत्री रथिन घोष (मध्यमग्राम में 15वें राउंड तक रात 10.30 बजे तक भाजपा प्रत्याशी से पीछे), मंत्री बंकिम चंद्र हाजरा, मंत्री बेचाराम को हार का सामना करना पड़ा है।

तृणमूल के कई स्टार उम्मीदवारों को भी हार का सामना करना पड़ा है। जिसमें बरानगर से अभिनेत्री सायंतिका बनर्जी, बैरकपुर से अभिनेता राज चक्रवर्ती, सोनारपुर दक्षिण से लवली मैत्रा, शामिल हैं।

आयोग से मिलीभगत कर भाजपा ने 100 सीटों पर फर्जीवाड़ा कर हमें हराया : ममता

राज्य ब्यूरो, जागरण, कोलकाता : बंगाल विधानसभा चुनाव में भाजपा की प्रचंड जीत पर मुख्यमंत्री व तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो ने बड़ा आरोप लगाते हुए कहा कि चुनाव आयोग की मिलीभगत से 100 सीटों पर फर्जीवाड़ा करके हमें हराया गया है। तृणमूल की करारी हार के बीच चेहरे पर उदासी लिए अनियंत्रित हुई ममता ने सोमवार देर शाम अपने विधानसभा क्षेत्र भवानीपुर के मतगणना सेंटर शेखावत मेमोरियल स्कूल के बाहर पत्रकारों से बातचीत में आरोप लगाया कि 100 सीटों पर लूट हुई है।

कोलकाता में मतगणना को लेकर बोलतीं मुख्यमंत्री ममता बनर्जी • आइएएनएस

भाजपा को दानवों की पार्टी बताते हुए ममता ने कहा कि एसआइआर के जरिए लाखों मतदाताओं के नाम काटने से लेकर ईवीएम तक में वोटों की लूट की गई है। ममता ने केंद्रीय बलों पर मतगणना केंद्र पर उन्हें धक्का देने व पिटाई का भी गंभीर आरोप लगाया। दावा किया कि मतगणना केंद्र पर उन्हें मारा-पीटा गया। हमारे एक भी एजेंट को केंद्र के अंदर नहीं घुसने दिया गया।

असम और बंगाल में भाजपा ने चुराए चुनाव : राहुल

नई दिल्ली, प्रेट्र : कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने सोमवार को आरोप लगाया कि असम और बंगाल ऐसे स्पष्ट मामले हैं जहां भाजपा ने चुनाव आयोग की मदद से चुनाव "चुराए" हैं। राहुल ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, हम ममता जी से सहमत हैं। बंगाल में 100 से अधिक सीटें चुराई गई हैं।" राहुल ने तमिलनाडु में जीत हासिल करने वाले टीवीके के नेता विजय को बधाई भी दी। स्टालिन से भी बात की। केरलम में यूडीएफ की जीत पर लोगों का आभार जताया।

भाजपा को बंगाल में जीत का रास में निकट भविष्य में नहीं मिलेगा लाभ

नई दिल्ली, प्रेट्र : बंगाल में भाजपा की शानदार जीत से निकट भविष्य में राजग गठबंधन को राज्यसभा में दो-तिहाई बहुमत हासिल करने में मदद मिलने की संभावना नहीं है। 244 सदस्यों वाले उच्च सदन में भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन के 149 सदस्य हैं जो दो-तिहाई बहुमत के आंकड़े 163 से 14 कम है। राजग के 149 सदस्यों में से 113 सदस्य भाजपा के हैं। बंगाल में राज्यसभा चुनाव अगस्त 2029 में होने हैं, जब छह सीटें रिक्त होंगी, जिनमें से पांच सीटें इस समय तृणमूल के पास है।

इस साल जून में राज्यसभा की 22 सीटों के लिए चुनाव होंगे। नवंबर में 11 सीटों के लिए चुनाव होंगे, जिनमें उत्तर प्रदेश की 10 सीटें शामिल हैं। इनमें से भाजपा के पास आठ सीटें हैं। उत्तर प्रदेश की अन्य 11 सीटों के लिए चुनाव जुलाई 2028 में होंगे, जिनमें भाजपा के पास मौजूद आठ सीटें भी शामिल हैं। अप्रैल 2028 में रास की 13 सीटों के लिए चुनाव होंगे और फिर जून 2028 में 21 और सीटों के लिए चुनाव होंगे। इनमें पंजाब की पांच, केरलम की तीन और असम की दो सीटें, साथ ही मध्य प्रदेश की तीन, आंध्र प्रदेश की चार सीटें शामिल हैं।

उच्च सदन में भाजपा के नेतृत्व वाले राजग के हैं 149 सदस्य ,बंगाल में अगस्त 2029 में होने हैं राज्यसभा चुनाव

जुबां पर चढ़ा नारा 'पालटानो दरकार', पलट दी ममता सरकार

विशाल श्रेष्ठ • जागरण

- बंगाल में भाजपा की प्रचंड जीत में चुनावी नारे की भी अहम भूमिका
- इसने लोगों को जोड़ा, महसूस कराई परिवर्तन की जरूरत

उत्तर 24 परगना में भाजपा की बढ़त के बाद प्रसन्न मुद्रा में कार्यकर्ता • आइएएनएस

कोलकाता : 'पालटानो दरकार, चाई बीजेपी सरकार' (पलटना जरूरी है, भाजपा की सरकार चाहिए)। बंगाल में भाजपा की प्रचंड जीत में इस नारे ने भी अहम भूमिका निभाई। इसने सीधे लोगों के दिमाग पर स्ट्राइक किया। उन्हें परिवर्तन के बारे में सोचने को बाध्य किया। मतदान से पहले बहुतों की जुबां पर यह नारा चढ़ गया था।

मनोविज्ञानी अभिषेक हंस कहते हैं, आधुनिक दौर के चुनावों में, जहां बहुत कुछ 'नैरेटिव' (आख्यान) पर निर्भर करता है, नारों की भूमिका और बढ़ गई है। नारे लोगों को पार्टी से जोड़ते हैं, उनके प्रति विश्वास जगाते हैं, वहीं विरोधियों के प्रति अविश्वास उत्पन्न करते हैं। 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने 'अबकी बार, मोदी सरकार' का नारा दिया था, जो आकर्षक व धारा प्रवाह में होने के कारण बच्चे-बच्चे की जुबां पर चढ़ गया था।

'पालटानो दरकार' को इसी का बंगाली वर्जन कहा जा सकता है। इसके व्यक्ति विशेष पर आधारित नहीं होने पर भी इसमें परिवर्तन की बात कही गई। यह नारा भी लोगों की जुबां पर फिट हो गया। जब कोई बात बार-बार कही जाती है तो वह दिमाग को उत्प्रेरित करती है और उससे भावनात्मक रूप से जोड़ती है। यह सोच बदलने का काम करती है।

2021 में तृणमूल का नारा रहा था कारगर

2021 के विधानसभा चुनाव में तृणमूल ने सीधे पार्टी सुप्रीमो ममता बनर्जी से जोड़ते हुए 'बांग्ला निजेर मेये के ई चाये' (बंगाल अपनी बेटी को ही चाहता है) का नारा दिया था, जो कारगर साबित हुआ था। वहीं उसके 'खेला होबे' (खेल होगा) के नारे ने तृणमूल कार्यकर्ताओं की आक्रामकता बढ़ाई थी। इस बार तृणमूल ने 'जोतोई कोरो हमला, आबार जीतबे बांग्ला' (जितने भी कर लो हमले, फिर से जीतेगा बंगाल) का नारा देकर दम भरा कि केंद्र की तमाम 'साजिशों' के बावजूद बंगाल जीतेगा, हालांकि यह विफल साबित हुआ। अभिषेक ने कहा, सिर्फ नारे गढ़ने से नहीं होता। उनका तर्कसंगत होना भी जरूरी है।

चिंतन

नकारात्मक राजनीति को जनता ने नकारा

पांच राज्यों पश्चिम बंगाल, असम, तमिलनाडु, केरलम और पुडुचेरी में हुए विधानसभा चुनावों के परिणामों से साफ है कि इस बार जनता ने नकारात्मक राजनीति को पूरी तरह से नकार दिया है। इन चुनावों में रिकॉर्ड मतदान ने साफ कर दिया है कि मतदाता अब केवल नारों, आरोप-प्रत्यारोप और नकारात्मक राजनीति से प्रभावित होने वाला नहीं है, बल्कि वह ठोस काम, स्थिरता व विश्वसनीय नेतृत्व को प्राथमिकता देता है। एसआईआर के बीच हुए इन चुनावों ने स्पष्ट कर दिया है कि जनता अब जागरूक है और मतदान में बढ़ चढ़कर भाग लेती है। सबसे पहले अगर पश्चिम बंगाल की बात करें, तो यहां सत्तारूढ़ दल टीएमसी व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी लगातार हमलावर रहीं। उन्होंने हर उस काम में अड़ंगा डाला जो जनता के हक में था। चाहे वह चुनाव आयोग हो, एसआईआर का काम हो या अर्धसैनिक बल। ममता ने इन सभी को निशाना बनाया और नकारात्मक राजनीति की। इसका परिणाम यह रहा कि उनकी पार्टी अपने ही गढ़ में मात खा गई। असम और पुडुचेरी में भी भाजपा और उसके सहयोगी दलों की जीत ने सकारात्मक राजनीति की जीत और नकारात्मक राजनीति (या विपक्षी नैरेटिव) की हार का संकेत दिया है। इन दोनों राज्यों में, भाजपा ने 'सुशासन' और 'विकास' का मुद्दा उठाया, जबकि विपक्ष पर नकारात्मक एजेंडा चलाने का आरोप लगा। परिणामों से स्पष्ट है कि जनता ने विकास की राजनीति को चुना। तमिलनाडु में भी द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डीएमके) के नेतृत्व वाले सत्ताधारी गठबंधन के लिए एक बड़ा उलटफेर देखने को मिला रहा है, जिसे राजनीतिक विश्लेषक नकारात्मक राजनीति या मतदाताओं द्वारा सत्ता विरोधी रुख के रूप में देख रहे हैं। यहां लोगों ने एम स्टालिन को नकार दिया और दक्षिण भारतीय फिल्म सुपरस्टार विजय की नई पार्टी, तमिलगा वेट्री कड़गम (टीवीके) ने चुनाव में सबको चौंकाते हुए जीत दर्ज की है। टीवीके जो पारंपरिक पार्टियों (डीएमके और एआईएडीएमके) के लिए एक नई चुनौती बनकर उभरी है। टीवीके ने गठन के मात्र दो साल में की सत्ता हासिल कर सबको चौंकाया है। जनता ने सत्ता में एकाधिकार को तोड़कर एक नए विकल्प को चुना है, जिससे यह संदेश जाता है कि पारंपरिक राजनीति के खिलाफ लोग एकजुट हो रहे हैं। इसके अलावा, केरलम में भी 10 साल के शासन के बाद, जनता ने बदलाव के लिए वोट दिया, जिससे पिनाराई विजयन की एलडीएफ सरकार को करारी हार का सामना करना पड़ा। कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ ने मतदाताओं के असंतोष, नौकरी और महंगाई जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाया, जिसे जनता ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। अब चुनाव जीतने वाले दलों की भी जिम्मेदारी बनती है कि वे जनता से किए गए वादों पर खरा उतरें और जनहित में बिना किसी भेदभाव के काम करें। इस बार देखा जा तो तमिलनाडु में टीवीके को छोड़ दें तो किसी भी राज्य में क्षेत्रीय दल को सफलता नहीं मिली है। चार राज्यों में राष्ट्रीय दलों पर ही जनता ने भरोसा जताया है। केरल में एलडीएफ की हार के साथ ही भारत में वामपंथी शासन का अंतिम और मजबूत किला भी गिर गया है। अब किसी भी राज्य में वामपंथी सरकार नहीं है। अब भाजपा और उसके सहयोगी दल (एनडीए) देश के 23 राज्यों में सत्ता में है। अंततः, चुनाव परिणामों ने यह स्थापित किया है कि भारतीय लोकतंत्र में अब 'परफॉर्मेंस पॉलिटिक्स' का दौर मजबूत हो रहा है। जनता अब सवाल पूछ रही है, काम का हिसाब मांग रही है और उसी आधार पर अपना फैसला सुना रही है। यह प्रवृत्ति लोकतंत्र के लिए सकारात्मक संकेत है और राजनीतिक दलों के लिए एक स्पष्ट संदेश नकारात्मकता नहीं, काम ही असली चुनावी हथियार है।

सत्ता, संदेश और बदलती राजनीति का सच

चुनाव परिणाम

डॉ. घनश्याम बादल

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणाम केवल सरकारों के गठन या पतन की कहानी नहीं हैं, बल्कि ये भारतीय लोकतंत्र की बदलती मानसिकता, मतदाता की परिपक्वता और राजनीति के नए समीकरणों का जीवंत दस्तावेज हैं। इन चुनावों ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि अब सत्ता केवल परंपरा, भावनाओं या जातीय समीकरणों के भरोसे नहीं चल सकती; जनता परिणाम चाहती है, विकल्प खोजती है और समय आने पर सत्ता को बेदखल करने में हिचकती नहीं। पश्चिम बंगाल के परिणाम केवल एक राजनीतिक बदलाव नहीं, बल्कि एक लंबे समय से पनप रहे असंतोष का विस्फोट है। वर्षों से स्थापित सत्ता के खिलाफ जनता के भीतर जो नाराजगी थी, वह इस बार निर्णायक रूप से बाहर आई है।

पांच महत्वपूर्ण राज्यों- पश्चिम बंगाल, असम, तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी के ताज़ा विधानसभा चुनाव परिणाम केवल सरकारों के गठन या पतन की कहानी नहीं हैं, बल्कि ये भारतीय लोकतंत्र की बदलती मानसिकता, मतदाता की परिपक्वता और राजनीति के नए समीकरणों का जीवंत दस्तावेज हैं। इन चुनावों ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि अब सत्ता केवल परंपरा, भावनाओं या जातीय समीकरणों के भरोसे नहीं चल सकती; जनता परिणाम चाहती है, विकल्प खोजती है और समय आने पर सत्ता को बेदखल करने में हिचकती नहीं। पश्चिम बंगाल के परिणाम केवल एक राजनीतिक बदलाव नहीं बल्कि एक लंबे समय से पनप रहे असंतोष का विस्फोट है। वर्षों से स्थापित सत्ता के खिलाफ जनता के भीतर जो नाराजगी थी, वह इस बार निर्णायक रूप से बाहर आई। प्रशासनिक पक्षपात, कथित भ्रष्टाचार, स्थानीय स्तर पर सत्ता के केंद्रीकरण और राजनीतिक हिंसा जैसे मुद्दों ने मतदाता को विकल्प तलाशने पर मजबूर किया। दूसरी ओर, विपक्ष ने केवल विरोध नहीं किया बल्कि बूथ स्तर तक संगठन खड़ा किया, मतदाता से सीधा संवाद स्थापित किया और एक वैकल्पिक राजनीतिक कथा गढ़ी। यह जीत केवल एक दल की नहीं, बल्कि उस रणनीति की है जिसमें संगठन, विचार और मौके की सही पहचान का संगम हुआ। हालांकि अब इन चुनाव परिणाम की सच्चाई से बचने के लिए विपक्ष एस आइ आर, केंद्र द्वारा प्रशासनिक मशीनरी एवं सीबीआई तथा ईडी जैसे संस्थानों के दुरुपयोग का भी आरोप लगाएगा। लेकिन बेहतर हो कि अभी तक सट्टा रोड दल उन मुद्दों पर गौर करें जिनकी वजह से बंगाल की जनता में असंतोष पनप और गलत संदेश गया।

असम में तस्वीर थोड़ी अलग है यहां सत्ता विरोध की लहर को वहां के सत्तारूढ़ नेतृत्व ने कुंद कर दिया। आमतौर पर भारतीय राजनीति में यह देखा जाता है कि लंबे समय तक सत्ता में रहने वाली सरकारें एंटी-इनकंबेंसी की शिकार हो जाती हैं, लेकिन असम में ऐसा नहीं हुआ। इसका कारण है नेतृत्व की स्पष्टता, योजनाओं का जमीनी क्रियान्वयन और पहचान की राजनीति का संतुलित उपयोग। सरकार ने कल्याणकारी योजनाओं को केवल कागज़ों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्हें मतदाता के जीवन से जोड़ा। इसके साथ ही, विपक्ष की कमजोर रणनीति और बिखराव ने सत्ता पक्ष के लिए राह और आसान कर दी। यह परिणाम बताता है कि यदि नेतृत्व मजबूत हो और योजनाएं जमीन पर दिखें, तो एंटी-इनकंबेंसी को हराया जा सकता है।

पुडुचेरी का जनादेश छोटे राज्य का बड़ा संकेत है। यहां मतदाता ने स्थिरता को प्राथमिकता दी। गठबंधन की राजनीति का सफल प्रयोग यह दिखाता है कि जब स्थानीय नेतृत्व और राष्ट्रीय समर्थन का संतुलन बनता है, तब परिणाम अनुकूल हो सकते हैं। विपक्ष यहां एक स्पष्ट वैकल्पिक दृष्टि देने में विफल रहा। नतीजा यह हुआ कि मतदाता ने प्रयोग करने के बजाय स्थायित्व को चुना। यह संकेत पूरे देश के लिए महत्वपूर्ण है कि गठबंधन तभी सफल होता है जब उसमें स्पष्ट नेतृत्व और साझा एजेंडा हो।

अब केरल के परिणाम सत्ता के चक्र को दर्शाते हैं। यहां मतदाता ने फिर सिद्ध किया कि कोई भी दल सत्ता को स्थाई डेरा न समझे। लंबे समय तक शासन करने के बाद स्वाभाविक प्रमाद और नीतिगत असंतोष ने सरकार के खिलाफ माहौल बनाया। कांग्रेस ने इस अवसर को पहचाना, अपने संगठन को पुनर्गठित किया और जमीनी स्तर पर प्रभावी अभियान चलाया। इसके अलावा, राज्य में राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का चरित्र ऐसा है कि मतदाता संतुलन बनाए रखना चाहता है। यह परिणाम कांग्रेस के लिए राहत का संकेत है, लेकिन स्थायी पुनरुत्थान का प्रमाण नहीं, बल्कि एक अवसर है जिसे उसे आगे भी साबित करना होगा।

तमिलनाडु का जनादेश इन सभी राज्यों में सबसे चौंकाने वाला और दूरगामी प्रभाव वाला है। दशकों से चली आ रही दो-दलीय राजनीति को मतदाता ने एक झटके में चुनौती दे दी। यह केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि राजनीतिक संस्कृति में बदलाव का संकेत है। जनता ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह अब विकल्प चाहती है, और यदि पारंपरिक दल उस विकल्प को देने में विफल रहते हैं, तो वह नए नेतृत्व को स्वीकार करने के लिए तैयार है। करिश्माई नेतृत्व, युवा मतदाताओं का समर्थन और परंपरागत दलों के प्रति उदासीनता इन तीनों ने मिलकर एक नई राजनीतिक ताकत को जन्म दिया। यह घटना केवल तमिलनाडु तक सीमित नहीं रहेगी; इसका असर अन्य राज्यों की राजनीति पर भी पड़ेगा, जहां लंबे समय से एक ही तरह की सत्ता संरचना बनी हुई है।इन पांचों राज्यों के परिणामों को समग्र रूप से देखें तो एक स्पष्ट संदेश उभरता है। मतदाता अब अधिक सजग, अधिक मांग करने वाला और अधिक निर्णायक हो चुका है। वह न तो केवल वादों से प्रभावित होता है और न ही केवल भावनात्मक अपील से। उसे ठोस काम चाहिए, स्पष्ट नेतृत्व चाहिए और विकल्प चाहिए। यह लोकतंत्र के लिए सकारात्मक संकेत है, क्योंकि यह राजनीतिक दलों को जवाबदेह बनाता है। राष्ट्रीय राजनीति के स्तर पर इन परिणामों का प्रभाव गहरा होगा। एक ओर जहां सत्ताधारी दल इस परिणाम से उत्साहित होकर अगले वर्ष होने वाले उत्तराखंड एवं उत्तर प्रदेश के चुनाव में भी जीत का परचम लहराने के लिए हर संभव रणनीति अपनाएगा, वहीं विपक्ष को भी यह संदेश मिला है कि यदि वह संगठित हो, रणनीति स्पष्ट रखे और जमीनी मुद्दों को उठाए, तो वह वापसी कर सकता है। साथ ही, क्षेत्रीय और नए दलों का उभार यह दिखाता है कि भारतीय राजनीति अब बहुध्रुवीय होती जा रही है। यह प्रवृत्ति आने वाले लोकसभा चुनावों को और अधिक प्रतिस्पर्धी बना सकती है। इसके अलावा, इन चुनावों ने यह भी साबित किया है कि डिजिटल मीडिया, सोशल प्लेटफॉर्म और जमीनी अभियानों का संतुलित उपयोग अब चुनावी सफलता का नया सूत्र बन चुका है। मतदाता तक सीधी पहुंच, पारदर्शिता और त्वरित संवाद ने राजनीतिक दलों की कार्यशैली को बदल दिया है। अब केवल बड़े मंचों की रैलियां ही नहीं, बल्कि छोटे-छोटे संवाद, स्थानीय मुद्दों पर फोकस और विश्वसनीयता की छवि भी निर्णायक भूमिका निभा रही है। अस्तु, कहना गलत नहीं होगा कि 2026 के ये चुनाव भारतीय लोकतंत्र के "परिपक्वता चरण" का संकेत हैं। यहां मतदाता ने सत्ता को संदेश दिया है काम करो, वरना जाओ। यह संदेश जितना सरल है, उतना ही कठोर भी। अब राजनीति में टिके रहने के लिए केवल नारे नहीं, परिणाम देने होंगे; चेहरे नहीं, विश्वसनीयता चाहि। यही इस जनादेश का सार है व यही भविष्य की राजनीति की दिशा भी तय करेगा।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **haribhoomi@gmail.com** पर दे सकते हैं।

जनादेश

राजेंद्र बज

अब जिम्मेदारियों को भी समझने की जरूरत

सभी पांच चुनावी राज्यों के विधानसभा चुनाव के परिणाम आ गए। अब जनादेश के अनुरूप अलग-अलग राजनीतिक दलों को अलग-अलग भूमिका का निर्वहन करना है। चुनावी दौर में तमाम तरह के आरोप-प्रत्यारोप का दौर चलता रहा, लेकिन अब व्यक्तिगत कटुता भाव को सर्वथा तिलांजलि देकर अपनी-अपनी नीति और सिद्धांतों के आधार पर विभिन्न राजनीतिक दलों को व्यापक जनहित की दिशा में अपनी ऊर्जा और चेतना का उपयोग करना होगा। वैचारिक मतभेद चाहे लाख रहें, लेकिन अब लोकतंत्र की राजनीति में व्यक्तिगत कटुता का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। अन्यथा लोकतंत्र में लोकतंत्र की मूल भावना तार-तार हो सकती है।इस बार देखा गया है कि प्रमुख प्रतिद्वंद्वी दलों के शीर्ष नेतागण चुनाव प्रचार के दौरान आक्रामक शैली में नजर आए। सार्वजनिक सभाओं में शीर्ष राजनेताओं ने जिस प्रकार की शब्दावली का उपयोग करते हुए अपने दल के पक्ष में प्रचार किया, वह शब्दावली उनके पद की मर्यादा और गरिमा के अनुरूप नहीं थी। कदाचित देश में किसी विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान इस प्रकार की भाषा का इतना व्यापक प्रयोग पहले कम ही देखने को मिला होगा। हालांकि इस स्थिति के लिए किसी दल विशेष या नेता विशेष को ही जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। दरअसल, कहीं किसी कोने से एक शुरुआत होती है, तद्नुसार ईंट का जवाब पत्थर से देने की होड़ मच जाती है।आमतौर पर होता यह है कि जो जिस भाषा और लहजे में बात करता है, प्रत्युत्तर में उसे उसी भाषा और लहजे में जवाब देना आवश्यक समझ लिया जाता है। लेकिन फिर भी जिम्मेदार पदों पर आसीन शख्सियत से यह अपेक्षा तो की ही जाती है कि वह अपने पद और कद की मर्यादा का परिपालन करें। इसके अभाव में दिनोंदिन विकृत होती जा रही राजनीति में और भी अधिक गिरावट आने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता।

विधानसभा चुनाव तो पांच राज्यों में हुए, लेकिन सोशल मीडिया के बढ़ते चलन के चलते देश और दुनिया ने देखा कि किस प्रकार की भाषा और शैली में प्रचार किया गया। कहा तो यह जाता है कि राजनीति में मतभेद स्वाभाविक है, लेकिन मनभेद नहीं होना चाहिए। लेकिन व्यक्तिगत तौर पर आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला इस कदर बढ़ा कि यह स्वस्थ लोकतांत्रिक संवाद की सीमाओं को लांघता हुआ प्रतीत हुआ। दरअसल होना यह चाहिए कि वास्तविक लड़ाई नीति और सिद्धांतों को लेकर हो, जिसमें व्यक्तिगत विरोध या कटुता का कोई स्थान न हो। यही संदेश नागरिकों के बीच जाना चाहिए। वास्तव में यह समझने लायक बात है कि प्रमुख प्रतिद्वंद्वी दल कम से कम एक समान उद्देश्य के लिए तो प्रतिबद्ध हैं और वह है अधिकतम जनकल्याण। यही लोकतंत्र का मूल सिद्धांत है, जिसे हर राजनेता को अपने आचरण और व्यवहार में उतारना चाहिए।इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु सत्ता केवल एक माध्यम है, जिसके जरिए आम नागरिकों का जीवन सरल और सहज बनाया जा सकता है। हर नीति, हर निर्णय और हर योजना का अंतिम लक्ष्य नागरिकों के लिए बेहतर वातावरण तैयार करना होना चाहिए। जिसे शाब्दिक रूप में "सबका साथ, सबका विकास" जैसे विचार से समझा जा सकता है।यहां यह गौर करने योग्य है कि तमाम प्रतिद्वंदी दलों और उनके नेताओं का घोषित लक्ष्य मूलतः समान ही है। अंतर केवल उसे हासिल करने के तरीकों में है। ऐसे में चुनावी प्रतिस्पर्धा को व्यक्तिगत शत्रुता में बदलना लोकतंत्र की आत्मा को आहत करता है। इस प्रवृत्ति पर अब विराम लगना ही चाहिए।इसके साथ ही, राजनीतिक दलों को यह भी समझना होगा कि आज का मतदाता पहले से कहीं अधिक जागरूक और सजग है। वह केवल भाषणों या भावनात्मक अपीलों से प्रभावित नहीं होता, बल्कि काम, पारदर्शिता और जवाबदेही को प्राथमिकता देता है। इसलिए चुनाव के बाद की राजनीति में संयम, संवाद और सहयोग की संस्कृति विकसित करना समय की मांग है। कुल मिलाकर, अब जबकि पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव संपन्न हो चुके हैं और जनता ने राजनीतिक जिम्मेदारियों का स्पष्ट बंटवारा कर दिया है, ऐसे में सभी दलों और उनके नेताओं को व्यक्तिगत कटुता भुलाकर अपने वादों और इरादों को पूरा करने का संकल्प लेना चाहिए। सच कहा जाए तो जब राजनीति में शालीनता, संवाद और जनसेवा का भाव मजबूत होगा, तभी हमारे लोकतंत्र की वास्तविक खूबसूरती निखरकर सामने आएगी और विश्व पटल पर भारत एक आदर्श लोकतंत्र के रूप में और अधिक प्रतिष्ठित होगा।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

गुणों के विकास से आध्यात्मिक स्वास्थ्य संभव

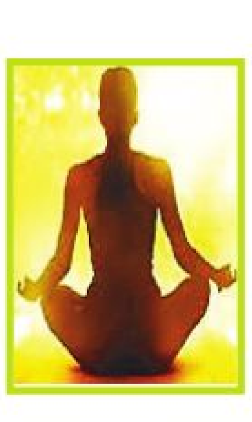

संकलित

दर्शन

हमारे पास एक शरीर है, हमें उसका पोषण करना है और जब वह रोगग्रस्त हो जाता है, तब हमें उसकी देखभाल करनी है। हमें उसके आरोग्य का उपाय ढूंढ़ना है और जीवन के भौतिक पक्ष से जुड़े सभी विषयों पर ध्यान देना है, परंतु बात यह है कि प्रायः मानव जाति केवल यहीं पर रुक जाती है। उससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि हमारे अस्तित्व का एक मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और उच्चतर आध्यात्मिक आयाम भी है। इसलिए सफलता का उनका (परमहंसजी का) मार्ग था उचित संतुलन को प्राप्त करना। वहां, जहां आप भौतिक सफलता और समृद्धि प्राप्त करते हैं। जहां आपके पास भावनात्मक संतुलन और आंतरिक शांति होती है। आध्यात्मिक रूप से आपके पास एक उच्चतर उद्देश्य के लिए अपने जीवन को संचालित करने का ज्ञान होता है, न केवल धन एकत्र करना और परिवार व संतानों की उपलब्धि, अपितु यह अनुभव करने का एक उच्चतर उद्देश्य कि मैं ईश्वर का एक स्फुलिंग हूं, मैं इस भौतिक शरीर में निवास करने वाला आत्मा हूं और अपने जीवन के सभी पक्षों में ईश्वर के पूर्ण साक्षात्कार और अभिव्यक्ति की प्राप्ति ही मेरा अंतिम उद्देश्य है। एक बार जब आप यह धारणा बना लेते हैं, तो जीवन अत्यंत रोमांचक हो जाता है, क्योंकि सब प्रकार के कौशल, क्षमताएं और योग्यताएं आपके लिए उपलब्ध हैं। ये प्रत्येक मनुष्य की अक्षय निधि का अंग हैं, परंतु वे तब तक पूर्ण रूप से निष्क्रिय रहती हैं, जब तक उन्हें सचेतन एकाग्रता और सचेतन प्रयास के द्वारा जाग्रत नहीं किया जाता है।

क्या आपकी दुकान में ईश्वर मिलेंगे?

संकलित

प्रेरणा

आठ साल का एक बच्चा एक रुपए का सिक्का मुट्ठी में लेकर एक दुकान पर जाकर कहा- क्या आपके दुकान में ईश्वर मिलेंगे?दुकानदार ने यह बात सुनकर सिक्का नीचे फेंक दिया और बच्चे को निकाल दिया। बच्चा पास की दुकान में जाकर 1 रुपए का सिक्का लेकर चुपचाप खड़ा रहा! लेकिन, उस अबोध बालक ने हार नहीं मानी। एक दुकान से दूसरी दुकान, दूसरी से तीसरी, ऐसा करते करते कुल चालीस दुकानों के चक्कर काटने के बाद एक बूढ़े दुकानदार के पास पहुंचा। उस बूढ़े दुकानदार ने पूछाः तुम ईश्वर को क्यों खरीदना चाहते हो? क्या करोगे ईश्वर लेकर? बच्चे ने बड़े उत्साह से उत्तर दियाः इस दुनिया में मां के अलावा मेरा और कोई नहीं है। मेरी मां दिनभर काम करके मेरे लिए खाना लाती है। मेरी मां अब अस्पताल में हैं। अगर मेरी मां मर गई तो मुझे कौन खिलाएगा ? डाक्टर ने कहा है कि अब सिर्फ ईश्वर ही तुम्हारी मां को बचा सकते हैं। क्या आपके दुकान में ईश्वर मिलेंगे? दुकानदार- हां, मिलेंगे! कितने पैसे हैं तुम्हारे पास? बच्चाः सिर्फ एक रुपए। बच्चे की मां का ऑप्रेशन हुआ। और बहुत जल्द ही वह स्वस्थ हो उठीं। डिस्चार्ज के कागज़ पर अस्पताल का बिल देखकर उस महिला के होश उड़ गए। डॉक्टर ने उन्हें आश्वासन देकर कहाः टेंशन की कोई बात नहीं है। एक वृद्ध सज्जन ने आपके सारे बिल चुका दिए हैं। साथ में एक चिट्ठी भी दी है। महिला चिट्ठी खोलकर पढ़ने लगी, उसमें लिखा था, मुझे धन्यवाद देने की कोई आवश्यकता नहीं है। आपको तो स्वयं ईश्वर ने ही बचाया है.. मैं तो सिर्फ एक ज़रिया हूं।

अंतर्मन

आज की पाती

देश के कई जिलों को पीएनजी से जोड़ा जाए

भारत सरकार के सबसे बड़े उपक्रम, गेल इंडिया लिमिटेड द्वारा एक अनुमान के तहत देश में 16,000 किलोमीटर से अधिक गैस पाइपलाइन नेटवर्क का संचालन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, गेल द्वारा 2,000 किलोमीटर से अधिक एलपीजी गैस पाइपलाइन का भी संचालन किया जाता है। गेल इंडिया लिमिटेड के माध्यम से देश के 22 राज्यों के लगभग 90 से अधिक जिलों में गैस पाइपलाइन बिछाई जा चुकी है, जिसके जरिए सीएनजी, एलपीजी तथा कुछ जिलों में पीएनजी गैस की आपूर्ति भी की जा रही है। यदि भारत सरकार उन राज्यों के जिलों में, जहां से गैस पाइपलाइन गुजरती है, राज्य सरकारों के साथ समन्वय स्थापित कर जिला एवं तहसील मुख्यालयों को पाइपयुक्त प्राकृतिक गैस (पीएनजी) से जोड़ने की दिशा में ठोस पहल करे तो आमजन को राहत मिलेगी।

- रविंद्र जोशी, बिलासपुर

ट्रेंड

जनता ने सबक सिखाया

बंगालवासियों ने घुसपैठियों, उनके हितैषियों को ऐसा सबक सिखाया है, जिसे तुष्टीकरण की राजनीति करने वाली पार्टियां भूल नहीं पाएंगी। जिन आशाओं के साथ मोदी जी के नेतृत्व पर विश्वास जताया है, हम निश्चित रूप से उन्हें पूरा करेंगे। **-अमित शाह**, केंद्रीय गृहमंत्री

ब्रांड दूत बनें खिलाड़ी

खिलाड़ी 'नशा मुक्त अभियान' के ब्रांड दूत के तौर पर काम करें और युवाओं को नशे से दूर रहने तथा खेलों को अपनाने के लिए प्रेरित करें। इससे युवा पीढ़ी नशे से दूर रहेगी। आप भारत की नई पीढ़ी के आदर्श हैं। आपकी अपील युवाओं को सही रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करेगी।

-मनोज सिन्हा, उपराज्यपाल, जम्मू-कश्मीर

बंगाल के लोगों का धन्यवाद

जहां श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म हुआ, वह बंगाल हमारा है। पश्चिम बंगाल की देशभक्त जनता को विधानसभा चुनाव में ऐतिहासिक जनादेश के लिए हृदय से कोटि-कोटि धन्यवाद। यह जनादेश राष्ट्रवाद और विकास के प्रति जनता के विश्वास का प्रतीक है। **-सम्राट चौधरी**, सीएम बिहार

विश्वास पर खरा उतरेंगे

कांग्रेस केरल की जनता को हार्दिक धन्यवाद देती है कि उन्होंने यूडीएफ को भारी बहुमत से सेवा का मौका दिया है। हमारी ज़िम्मेदारी हम पहचानते हैं और केरल की जनता ने जो विश्वास हम पर जताया है, हम उस पर खरा उतरेंगे।

-जयराम रमेश, कांग्रेस महासचिव

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से **hbcgpati@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

करंट अफेयर

अटलांटिक में क्रूज पर संदिग्ध हंता वायरस का प्रकोप

अटलांटिक महासागर में एक क्रूज जहाज पर संदिग्ध हंता वायरस के प्रकोप के कारण एक बुजुर्ग दंपति समेत तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि कम से कम तीन अन्य के बीमार होने की सूचना है। यह जानकारी विश्व स्वास्थ्य संगठन और दक्षिण अफ्रीका के स्वास्थ्य विभाग ने दी। डब्ल्यूएचओ के अनुसार, मामले की जांच जारी है और कम से कम एक मामले में हंता वायरस के संक्रमण की पुष्टि हो चुकी है। संयुक्त राष्ट्र की इस स्वास्थ्य एजेंसी ने बताया कि एक मरीज दक्षिण अफ्रीका के एक अस्पताल की गहन चिकित्सा इकाई (आईसीयू) में भर्ती है, जबकि जहाज पर इसके लक्षण वाले दो अन्य मरीजों को वहां से निकालने के प्रयास किए जा रहे हैं। क्रूज का संचालन करने वाली नीदरलैंड की कंपनी के मुताबिक, जहाज फिलहाल अफ्रीका के पश्चिमी तट पर स्थित द्वीपीय देश केप वर्डे के पास खड़ा है। स्थानीय प्रशासन सहायता कर रहा है, लेकिन किसी को भी जहाज से उतरने की अनुमति नहीं दी गई है। कंपनी के अनुसार, बीमार लोगों में शामिल चालक दल के दो सदस्यों को तत्काल चिकित्सा की आवश्यकता है। दक्षिण अफ्रीका के स्वास्थ्य विभाग ने बताया कि क्रूज पर 150 पर्यटक सवार थे।

ऑफ बीट

कैंसर के अंतिम चरण में मरीज हो जाते हैं उदासीन

कैंसर के अंतिम चरण का एक क्रूर परिणाम यह है कि कई मरीज गहरी उदासीनता में डूब जाते हैं, क्योंकि वे उन गतिविधियों में भी रुचि खो देते हैं जिन्हें वे कभी पसंद करते थे। यह लक्षण दुर्बलता नामक सिंड्रोम का हिस्सा है, जो अंतिम चरण के लगभग 80 प्रतिशत कैंसर रोगियों को प्रभावित करता है। इससे मांसपेशियां बड़े पैमाने पर खत्म होने लगती हैं और वजन घटने लगता है, जिससे पर्याप्त पोषण के बावजूद मरीज की हड्डियां पतली हो जाती हैं। हौसला पस्त होने से न केवल रोगियों की पीड़ा बढ़ती है, बल्कि उन्हें परिवार और दोस्तों से भी अलग कर देती है। चूंकि, रोगी को कठिन उपचार पद्धतियों को अपनाने में कड़ा संघर्ष करना पड़ता है इसलिए इससे परिवारों पर भी दबाव पड़ता है और उपचार जटिल हो जाता है। डॉक्टर आमतौर पर यह मानते हैं कि जब कैंसर के अंतिम चरण के मरीज जीवन से विमुख हो जाते हैं, तो यह शारीरिक गिरावट के प्रति एक अपरिहार्य मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया होती है। कैंसर से उत्पन्न कमजोरी में उदासीनता की पहेली को सुलझाने के लिए, हमें शरीर में सूजन के सटीक मार्ग का पता लगाने की आवश्यकता थी, तथा रोग के बढ़ने के दौरान जीवित मस्तिष्क के अंदर झांकने की आवश्यकता थी – जो कि लोगों में लगभग असंभव है।

- यूरिया और उर्वरकों की कीमतों में बढ़ोतरी का रुझान दिख रहा
- खरीफ 2026 सत्र में उर्वरकों की उपलब्धता 'अच्छी' और 'स्थिर' बनी हुई है
- मार्च-अप्रैल के लिए घरेलू उत्पादन 67.76 लाख टन रहा

सब्सिडी खर्च 1.71 लाख करोड़ रुपये से अधिक होने का अनुमान

पश्चिम एशिया संकट: बजट अनुमान से अधिक रह सकती है उर्वरक सब्सिडी

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

पश्चिम एशिया में जारी संकट के कारण आयातित यूरिया और अन्य उर्वरकों की बढ़ती कीमतों के बीच वित्त वर्ष 2026-27 के लिए सरकार का उर्वरक सब्सिडी खर्च 1.71 लाख करोड़ रुपये के बजटीय आवंटन से अधिक होने का अनुमान है।

मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने सोमवार को यह यह कहा। उर्वरक विभाग में अतिरिक्त सचिव अपर्णा एस शर्मा ने पश्चिम एशिया के घटनाक्रम पर एक अंतर-मंत्रालयी सम्मेलन में कहा, ''हम जानते हैं कि कीमतें बढ़ी हैं। यूरिया और अन्य उर्वरकों दोनों की कीमतों में बढ़ोतरी का रुझान दिख रहा है...। निश्चित रूप से बढ़ोतरी होगी, लेकिन अभी कुछ नहीं कहा जा सकता।''

उर्वरकों की उपलब्धता अच्छी और स्थिर

शर्मा ने कहा कि पश्चिम एशिया संकट के कारण आपूर्ति श्रृंखला में आई रुकावटों के बावजूद, खरीफ 2026 सत्र में उर्वरकों की उपलब्धता 'अच्छी' और 'स्थिर' बनी हुई है। मार्च-अप्रैल के लिए घरेलू उत्पादन 67.76 लाख टन रहा। इसमें यूरिया (40.72 लाख टन), डाई अमोनियम फॉस्फेट (5.39 लाख टन), एनपीके (13.65 लाख टन) और एसएसपी (8 लाख टन) शामिल हैं।

अस्थायी बंद संयंत्र फिर से होंगे चालू

शर्मा ने बताया कि यूरिया के कुछ ऐसे संयंत्र जो अस्थायी रूप से बंद हो गए थे, वे अब फिर से चालू होने वाले हैं। उनके लिए गैस की आपूर्ति पहले ही सुनिश्चित कर ली गई है। यूरिया के आयात के लिए एक वैश्विक निविदा की प्रक्रिया पूरी कर ली गई है और मई-जून तक इसकी आपूर्ति होने की उम्मीद है।

समय से पहले स्टॉक किया जाएगा जमा

अधिकारियों के अनुसार यह 'बेहतर योजना और समय से पहले स्टॉक जमा करने' की रणनीति को बताता है। कृषि मंत्रालय के आकलन के आधार पर राज्यों के हिसाब से मांग का खाका तैयार कर लिया गया है और इसके लिए स्टॉक जमा करने तथा अग्रिम योजना बनाने का काम पहले ही पूरा कर लिया गया है। केंद्रीय स्तर पर स्टॉक जमा करने के अलावा, जिलों के भीतर इसके पुनर्वितरण की जिम्मेदारी राज्य सरकारों की ही रहेगी।

19 लाख टन एनपीके उर्वरकों के आयात के लिए निविदा जारी

उर्वरकों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए 19 लाख टन एनपीके उर्वरकों के आयात हेतु एक अलग वैश्विक निविदा भी जारी किया गया है। कृषि विभाग ने खरीफ 2026 सत्र के लिए उर्वरकों की आवश्यकता 390.54 लाख टन रहने का अनुमान जताया है। इसके मुकाबले, राज्यों ने पहले ही 195.71 लाख टन उर्वरक का स्टॉक जमा कर लिया है। यह कुल आवश्यकता का लगभग 50 प्रतिशत है।

आपातकालीन प्रकोष्ठ होगा स्थापित

शर्मा ने कहा, ''हम राज्यों के साथ नियमित बैठकें कर रहे हैं। जैसे-जैसे मौसम नजदीक आएगा, पुनर्वितरण से जुड़ी समस्याओं से निपटने के लिए एक चौबीस घंटे संचालित होने वाला आपातकालीन प्रकोष्ठ स्थापित किया जाएगा।''

घरेलू उत्पादन का लक्ष्य तय

इसके अलावा 17 लाख टन का आयात भी किया गया। यह आयात बंदरगाह और विदेश मंत्रालयों के समन्वित प्रयासों से संभव हो पाया। विभाग ने मई महीने के लिए 22 लाख टन यूरिया, 4 लाख टन डीएपी और 8 लाख टन एनपीके के घरेलू उत्पादन का लक्ष्य रखा है।

चुनावी नतीजों से शेयर बाजार में तेजी लौटी सेंसेक्स 356 अंक चढ़ा

एजेंसी ⏭ मुंबई

प्रमुख कंपनियों में लिवाली आने और पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव नतीजे बाजार की उम्मीदों के अनुरूप रहने से सोमवार को घरेलू शेयर बाजार चढ़कर बंद हुए। सेंसेक्स में 356 अंक की मजबूती रही जबकि निफ्टी 122 अंक चढ़ा। बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 355.90 अंक यानी 0.46 प्रतिशत बढ़कर 77,269.40 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 997.25 अंक उछलकर 77,910.75 अंक तक पहुंच गया था। इसी तरह, एनएसई का 50 शेयरों वाला मानक सूचकांक निफ्टी 121.75 अंक यानी 0.51 प्रतिशत की बढ़त के साथ 24,119.30 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स के समूह में शामिल कंपनियों में से अदाणी पोर्ट्स, हिंदुस्तान यूनिलीवर, रिलायंस इंडस्ट्रीज, लार्सन एंड टुब्रो, इटर्नल और मारुति सुजुकी के शेयर प्रमुख रूप से लाभ में रहे। दूसरी तरफ, भारती एयरटेल, कोटक महिंद्रा बैंक, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज और आईटीसी के शेयर नुकसान में रहे।

वैश्विक स्वास्थ्य व अनुसंधान सहयोग को मिलेगी नई दिशा

हरिद्वार। वैश्विक स्तर पर शिक्षा, अनुसंधान और विशेष रूप से समग्र स्वास्थ्य विज्ञान के क्षेत्र में सहयोग को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए पतंजलि अनुसंधान संस्थान और ऑस्ट्रेलिया की प्रतिष्ठित सदर्न क्रॉस यूनिवर्सिटी के बीच एक ऐतिहासिक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। यह समझौता ज्ञापन कल नई दिल्ली स्थित ऑस्ट्रेलिया उच्चायोग में संपन्न हुई वार्ता के ही आगे की कार्यवाई के अंतर्गत किया गया है। यह साझेदारी दोनों संस्थानों के बीच दीर्घकालिक साक्ष्य-आधारित सहयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक निर्णायक पहल है, जो पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के समन्वय को वैश्विक मंच पर स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त करेगी। इस अवसर पर आचार्य बालकृष्ण ने कहा कि पतंजलि, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा और आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान के समन्वय में अग्रणी भूमिका निभा रहा है, और सदर्न क्रॉस यूनिवर्सिटी, जो ऑस्ट्रेलिया के न्यू साउथ वेल्स में स्थित एक प्रतिष्ठित शैक्षणिक एवं अनुसंधान संस्थान है। इस साझेदारी के माध्यम से शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह सहयोग न केवल दोनों संस्थानों की विशेषज्ञता को एक मंच पर लाएगा, बल्कि वैश्विक स्वास्थ्य चुनौतियों के समाधान के लिए भी एक सशक्त आधार तैयार करेगा। यह सहयोग न केवल अकादमिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देगा, बल्कि स्वास्थ्य, विज्ञान और समाज के व्यापक हित में ठोस योगदान भी सुनिश्चित करेगा।

विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि में अप्रैल में मामूली सुधार

नई दिल्ली। देश के विनिर्माण क्षेत्र की गतिविधियों में नए कारोबार की शुरुआत और उत्पादन में वृद्धि के मामले में अप्रैल में मामूली सुधार देखने को मिला, लेकिन वृद्धि दर लगभग चार वर्ष में दूसरे सबसे कमजोर स्तर से बढ़ी। मौसमी रूप से समायोजित एचएसबीसी इंडिया विनिर्माण खरीद प्रबंधक सूचकांक मार्च के 53.9 के मुकाबले अप्रैल में 54.7 पर रहा। यह करीब चार साल में समग्र परिचालन परिस्थितियों में दूसरे सबसे धीमे सुधार को दर्शाता है। यह सूचकांक नए ऑर्डर, उत्पादन, रोजगार, आपूर्तिकर्ताओं की आपूर्ति के समय और खरीद भंडार जैसे मानकों के आधार पर समग्र स्थिति को दर्शाता है।

सूचना

सभी पाठकों से अनुरोध है कि हरिभूमि समाचार-पत्र में प्रकाशित विज्ञापनों (डिस्पले/क्लासीफाईड) में दिए गए तथ्यों/दावों के बारे में अपने विवेक से निर्णय लें और विज्ञापन के दावों की विश्वसनीयता को परखें। हरिभूमि समूह के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की विज्ञापनों के तथ्यों से सम्बन्धित कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

टाइम्स हायर एजुकेशन विश्व रैंकिंग 2026 में गलगोटियाज विवि की छलांग

भारत के 1,300 से अधिक विश्वविद्यालय में से केवल 128 संस्थानों को टीएचई रैंकिंग के नवीनतम संस्करण में शामिल

हरिभूमि न्यूज ⏭ नई दिल्ली

गलगोटियाज विश्वविद्यालय को प्रतिष्ठित टाइम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026 में बड़ी मान्यता दी गई है। इससे दुनिया के उच्च शिक्षण संस्थानों के सबसे प्रतिष्ठित वैश्विक मूल्यांकनों में गलगोटियाज यूनिवर्सिटी की राष्ट्रीय और वैश्विक स्थिति को और मजबूत मिली है। भारत के 1,300 से अधिक विश्वविद्यालयों में से केवल 128 संस्थानों को टीएचई रैंकिंग के नवीनतम संस्करण में शामिल किया गया है। इन चुनिंदा संस्थानों में गलगोटियाज विश्वविद्यालय भी शामिल है, जिसे भारत के निजी विश्वविद्यालयों में 27वें स्थान पर रखा गया है, जो इस विश्वविद्यालय के बढ़ते शैक्षणिक प्रोफाइल और उच्च शिक्षा परिदृश्य में इसकी बढ़ती पहचान को रेखांकित करता है। टाइम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग टीचिंग क्वालिटी, रिसर्च एनवॉयरमेंट, रिसर्च क्वालिटी, अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण और इंडस्ट्री से जुड़ाव सहित विभिन्न मानकों पर संस्थानों का मूल्यांकन करती है। 2026 के संस्करण में रिसर्च क्वालिटी गलगोटियाज विश्वविद्यालय के लिए एक मजबूत पहलू के रूप में सामने आया है, जो इसके सुदृढ़ विद्वतापूर्ण आउटपुट, एकेडमिक दृश्यता में वृद्धि और बढ़ते अनुसंधान प्रभाव को साबित करता है। इस बारे में गलगोटियाज विश्वविद्यालय के सीईओ डॉ. ध्रुव गलगोटिया ने कहा कि यह रैंकिंग हमारे लिए एक विश्वविद्यालय के रूप में सिर्फ मील का पत्थर ही नहीं है, बल्कि यह हमारे हर उस स्टूडेंट का उत्सव है जिसने सपने देखने का साहस किया, हर उस माता-पिता का जो उन सपनों में विश्वास करते हैं और हर उस भारतीय का जो हमारी यात्रा पर गर्व करते हैं। यह केवल गलगोटियाज के लिए ही खास पल नहीं है, इससे भी अधिक यह एक शक्तिशाली रिमाइंडर है कि यह भारत के उठने और नेतृत्व करने का समय है।

गलगोटियाज यूनिवर्सिटी

गलगोटियाज विवि भारत के निजी विश्वविद्यालयों में 11वें स्थान पर

टीएचई की ताजा मान्यता इंटरनेशनल रैंकिंग में विश्वविद्यालय की व्यापक प्रगति को दर्शाती है और कंप्यूटर विज्ञान के लिए क्यूएस सब्जेक्ट रैंकिंग में इसके प्रदर्शन का अनुसरण करती है, जिसमें गलगोटियाज विश्वविद्यालय भारत के निजी विश्वविद्यालयों में 11वें स्थान पर रहा। लगभग एक साथ मिलीं ये मान्यताएं एकेडमिक क्वालिटी, इनोवेशन-आधारित लर्निंग और भविष्य-उन्मुख शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय की बढ़ती प्रतिष्ठा साबित करती हैं। गलगोटियाज विश्वविद्यालय ने मल्टीडिसिप्लिनरी प्रोग्राम्स का विस्तार करने, अनुसंधान क्षमता को मजबूत करने, इंडस्ट्री के साथ साझेदारी बढ़ाने और छात्रों के लिए अंतरराष्ट्रीय अवसर उत्पन्ने करने का सिलसिला लगातार जारी रखा है। तेजी से बदलती दुनिया में उभरते अवसरों के लिए छात्रों को तैयार करने के लिए विश्वविद्यालय ने खास तौर पर डिजाइन किए गए तकनीक-सक्षम लर्निंग सिस्टम, इनोवेशन इकोसिस्टम और कॅरियर-फोकस्ड एकेडमिक उपायों में भी निवेश किया है। फैकल्टी की गुणवत्ता, रिसर्च की गहराई, वैश्विक जुड़ाव और स्टूडेंट के बेहतर परिणामों में निवेश जारी रखने के साथ गलगोटियाज विश्वविद्यालय लगातार नई पीढ़ी के शिक्षार्थियों की आकांक्षाओं के अनुरूप एक बेहद प्रासंगिक संस्थान के रूप में खुद को आगे बढ़ा रहा है।

हासिल किए कुल 31 पेटेंट

गलगोटियाज विश्वविद्यालय ने एक मजबूत और गतिशील रिसर्च इकोसिस्टम का निर्माण किया है और कुल 31 पेटेंट हासिल किए हैं, जो इनोवेशन और इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी के निर्माण के प्रति इसकी बढ़ती प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इसका स्कोपस प्रकाशन प्रोफाइल 8,500 से अधिक इंडेक्स दस्तावेजों, 65,500 से अधिक संदर्भों और 94 के प्रभावशाली एच-इंडेक्स के साथ उल्लेखनीय शैक्षणिक सुदृढ़ता को प्रदर्शित करता है।

15 गवर्नमेंट फंडेड रिसर्च प्रोजेक्ट हासिल

विश्वविद्यालय की वैश्विक स्थिति को आगे बढ़ाते हुए सात संकाय सदस्यों को उनके असाधारण शोध योगदान के लिए दुनिया के शीर्ष दो फीसदी वैज्ञानिकों में स्थान दिया गया है। विश्वविद्यालय ने आईसीएसएसआर, एएनआरएफ, सीएसआईआर, एसईआरबी, डीएचआर, आईयूएसी और आईआईटी बॉम्बे टीआईएच फाउंडेशन जैसी प्रतिष्ठित एजेंसियों से 1.70 करोड़ रुपए के कुल बाहरी वित्त पोषण के साथ 15 गवर्नमेंट फंडेड रिसर्च प्रोजेक्ट हासिल की है।

शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह बीते वित्त वर्ष बढ़कर 23.40 लाख करोड़ रुपये पर

नई दिल्ली। सरकार का शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह वित्त वर्ष 2025-26 में 5.12 प्रतिशत बढ़कर 23.40 लाख करोड़ रुपये से अधिक रहा। हालांकि यह मार्च 2026 को समाप्त वित्त वर्ष के लिए तय संशोधित बजट लक्ष्य से कम है। वित्त वर्ष 2025-26 के संशोधित अनुमान में सरकार ने प्रत्यक्ष कर संग्रह 24.21 लाख करोड़ रुपये रहने का अनुमान जताया था। मूल बजट अनुमान 25.20 लाख करोड़ रुपये था। विश्लेषकों के अनुसार, वित्त वर्ष 2025-26 में प्रत्यक्ष कर संग्रह में अपेक्षाकृत नरमी आयकर दरों में की गई कटौती के कारण रही, जिसकी घोषणा एक फरवरी 2025 को पेश बजट में की गई थी। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने एक अप्रैल 2025 से प्रभावी आयकर छूट की सीमा सात लाख रुपये से बढ़ाकर 12 लाख रुपये कर दी थी। साथ ही कर दरों और स्लैब में व्यापक बदलाव किए गए तथा मानक कटौती बढ़ाकर 75,000 रुपये कर दी गई।

रेल पहिया कारखाना/बेला
जिला-सारण, (बिहार)-841221

खुली ई-निविदा सूचना सं० आर डब्ल्यू पी/भंडार/वर्क्स/एडीभीटी/2026-27/01, दिनांक: 29.04.2026 निविदा खुलने की तिथि : 29.05.2026, Tender No. S_RWP_TPT_RAIL_2025-26_02B, Due on 29.05.2026

प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक/रेल पहिया कारखाना, बेला भारत के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से स्क्रैप रेल की ढुलाई हेतु ऑनलाइन "ई-खुली निविदा" भारतीय रेलवे ई-प्रोक्योरमेंट पोर्टल (आई.आर.ई.पी.एस) www.ireps.gov.in के माध्यम से आमंत्रित करते हैं:-

1. कार्य का नाम, स्थान, मात्रा एवं समापन की अवधि : कटी हुई स्क्रैप रेल का परिवहन। जिसमें शामिल है: (i) विभिन्न रेलवे इकाइयों/स्थानों पर कटी हुई स्क्रैप रेल का संग्रहण (ii) स्क्रैप रेल का 3 (तीन) मीटर तक की लंबाई में कटाई (iii) कटी हुई स्क्रैप रेल को वाहन में लोड करना (iv) कटी हुई स्क्रैप रेल को भारतीय रेलवे के विभिन्न स्थानों से 501-1000 किमी. की दूरी स्लैब के अंतर्गत रेल व्हील प्लांट बेला, सारण, बिहार- 841221 तक परिवहन (औसत लीड दूरी 750 किमी मानते हुए)। **नोट** : गंतव्य पर अनलोडिंग रेलवे द्वारा की जाएगी। **मात्रा** : 3432000 मीट्रिक टन-किमी **समापन अवधि**: एल.ओ.ए. के निर्गत तिथि से 12 माह। **2. अनुमानित लागत** : रु. 1,66,79,520.00, **3. ब्याना (ई एम डी) की राशि** : रु. 3,33,600/-, **4. निविदा बन्द होने की तिथि एवं समय** : 29.05.2026 up to 14:15 hrs., **5.** वेबसाईट विवरण, नोटिस बोर्ड का स्थान जहाँ निविदा की पूर्ण विवरणी देखी जा सकती है। : निविदा की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने एवं निविदा जमा करने हेतु आईआरईपीएस के आधिकारिक वेबसाईट अर्थात **www.ireps.gov.in** का अवलोकन करें। बोली प्रस्तुत करने वाली भावी कंपनियों को ऊपर की निविदाओं के संबंध में शुद्धिपत्र सहित अद्यतन जानकारी प्राप्त करने के लिए आई.आर.ई.पी.एस. पोर्टल (**www.ireps.gov.in**) के साथ संपर्क में रहने की सलाह दी जाती है, क्योंकि ऐसी जानकारी समाचार पत्रों में प्रकाशित नहीं की जाएगी।

प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक/रेपका/बेला
आर.डब्ल्यू.पी./सी.पी.आर.ओ./ए.डी.मी.टी./2026-27/10

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्‌घोषणा

धारा 82 Cr. P.C. देखिए

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त **आरोपी संजय संजू उर्फ चौमीन** पुत्रः राजेंद्र, **पताः** टी-24, रेलवे कॉलोनी, मोरी गेट, **दिल्ली FIR No. 807/25, Dt. 10.10.2025, U/s: 304(2)/3(5) भारतीय न्याय संहिता-2023, पुलिस थानाः कोतवाली, दिल्ली** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है), और उस पर जारी किए गए गिरफ्तारी के वारण्ट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **संजय संजू उर्फ चौमीन** मिल नहीं रहा है और मुझे समाधानप्रद रूप से दर्शित कर दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **संजय संजू उर्फ चौमीन** फरार हो गया है (या उक्त वारण्ट की तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहा है)। इसलिए इसके द्वारा उद्‌घोषणा की जाती है कि उक्त अभियुक्त **संजय संजू उर्फ चौमीन FIR No. 807/25, Dt. 10.10.2025, U/s: 304(2)/3(5) भारतीय न्याय संहिता-2023, पुलिस थानाः कोतवाली, दिल्ली** से अपेक्षा की जाती है कि वे इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **05.06.2026** को या उससे पहले हाजिर हो।

आदेशानुसार
सुश्री सायशा चड्ढा
न्यायिक दण्डाधिकारी प्रथम श्रेणी-08
कमरा नं. 272
तीस हजारी कोर्ट, दिल्ली

DP/5864/N/2026
(Court Matter)

राशिफल

मेष दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। घर-परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। परिवार की सुख-सुविधाओं के लिए खर्च बढ़ेंगे। रहन-सहन अव्यवस्थित रहेगा।

वृष मन प्रसन्न तो रहेगा। परन्तु बातचीत में संयत रहें। जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। सुस्वादु खानपान में रुचि बढ़ सकती है।

मिथुन व्यर्थ के क्रोध से बचें। माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। कारोबार में वृद्धि होगी। परिश्रम अधिक रहेगा। लाभ के अवसर मिलेंगे। सेहत का ध्यान रखें।

कर्क परिवार के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। नौकरी में कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है। भाइयों से मतभेद हो सकते हैं। क्रोध पर नियंत्रण रखें।

सिंह संयत रहें। व्यर्थ के क्रोध एवं वाद-विवाद से बचें। किसी मित्र के सहयोग से सम्पत्ति में किया गया निवेश लाभप्रद रहेगा। मीठे खानपान में रुचि रहेगी।

कन्या संयत रहें। व्यर्थ के क्रोध से बचें। दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। कुटुम्ब की किसी बुजुर्ग महिला से धन मिल सकता है। लंबे समय से रुके हुए कार्य पूरे होंगे।

तुला वाणी में मधुरता रहेगी। वस्त्रों के प्रति रुझान बढ़ सकता है। कुटुम्ब-परिवार में धार्मिक कार्य होंगे। मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। आय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी आयेगी। बातचीत में संयत रहें। जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। भागदौड़ अधिक रहेगी।

धनु क्रोध के अतिरेक से बचें। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जा सकते हैं। कारोबार में किसी मित्र के सहयोग से लाभ में वृद्धि होगी।

मकर व्यर्थ के क्रोध से बचें। माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। पिता का साथ मिलेगा। बौद्धिक कार्यों में सम्मान की प्राप्ति होगी। सेहत का ध्यान रखें।

कुंभ आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा। परन्तु आत्मसंयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। धार्मिक संगीत में रुचि बढ़ सकती है। धार्मिक आयोजनों में हिस्सा लेंगे।

मीन मन प्रसन्न रहेगा। कर्मक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा। स्थान परिवर्तन भी हो सकता है। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी।

दिल्ली में चांदी 6,800 रुपये उछली, सोना 2,000 रुपये टूटा

नई दिल्ली (भाषा)। राष्ट्रीय राजधानी के सर्राफा बाजार में सोमवार को चांदी की कीमत 6,800 रुपये चढ़कर 2.49 लाख रुपये प्रति किलोग्राम रही। विदेशी बाजारों में कीमतों पर दबाव के बावजूद आभूषण विक्रेताओं और स्टॉकिस्टों की तरफ से मजबूत खरीदारी के कारण घरेलू बाजार में भाव में तेजी रही। हालांकि, अखिल भारतीय सर्राफा संघ के अनुसार, 99.9 प्रतिशत शुद्धता वाला सोना 2,000 रुपये, यानी 1.3 प्रतिशत टूटकर 1,52,800 रुपये प्रति 10 ग्राम (सभी टैक्स मिलाकर) रहा। बृहस्पतिवार को बाजार बंद होने के समय इसकी कीमत 1,54,800 रुपये प्रति 10 ग्राम थी। उन्होंने कहा कि तेल की बढ़ती कीमतों ने इस आशंका को और मजबूत किया है कि ब्याज दरें लंबे समय तक ऊंची बनी रह सकती हैं, और साल के आखिर में इनमें और तेजी आने की आशंका है। सत्र के दौरान ये दोनों ऊपर चढ़े, जिससे कीमती धातुओं की कीमतों पर दबाव बना। सर्राफा संघ के अनुसार, चांदी की कीमतों में 6,800 रुपये यानी 2.8 प्रतिशत की तेजी आई और यह 2,49,500 रुपये प्रति किलोग्राम (सभी टैक्स मिलाकर) पर पहुंच गई। पिछले सत्र में चांदी की कीमत 2,42,700 रुपये प्रति किलोग्राम थी। वैश्विक स्तर पर, हाजिर चांदी 2.55 प्रतिशत टूटकर 73.43 डॉलर प्रति औंस रही।

रुपया पहुंचा अब तक के सबसे निचले स्तर पर

मुंबई (एजेंसी)। रुपया सोमवार को 39 पैसे टूटकर अब तक के सबसे निचले स्तर 95.23 (अस्थायी) प्रति डॉलर पर रहा। पश्चिम एशिया में जारी तनाव के बीच वैश्विक बाजारों में अस्थिरता, तेल की कीमतों में उछाल और मुद्रास्फीति और आर्थिक नरमी की आशंकाएं बढ़ने से घरेलू मुद्रा दबाव में है। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि ब्रेंट तेल की कीमत 110 डॉलर के आसपास बनी हुई है जिससे भारत जैसी तेल आयात करने वाली अर्थव्यवस्थाएं दबाव में हैं। इसके अलावा, वैश्विक अनिश्चितताओं में वृद्धि के बीच विदेशी पूंजी की निरंतर निकासी जैसे कारकों ने निवेशकों के विश्वास को और भी कमजोर किया है। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया, अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 94.95 पर खुला। कारोबार के दौरान इसमें गिरावट जारी रही और अंत में 95.23 (अस्थायी) प्रति डॉलर पर रहा जो पिछले बंद भाव से 39 पैसे की गिरावट है। रुपया बृहस्पतिवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 94.84 पर बंद हुआ था। 'महाराष्ट्र दिवस' के उपलक्ष्य में शुक्रवार को शेयर बाजार और मुद्रा बाजार बंद थे। एचडीएफसी सिक्योरिटीज के वरिष्ठ अनुसंधान विश्लेषक दिलीप परमार ने कहा, ''डॉलर में मजबूती और कच्चे तेल की कीमतों में तेजी से भारतीय रुपया रिकॉर्ड निचले स्तर पर पहुंच गया है।

शब्द पहेली - 6216

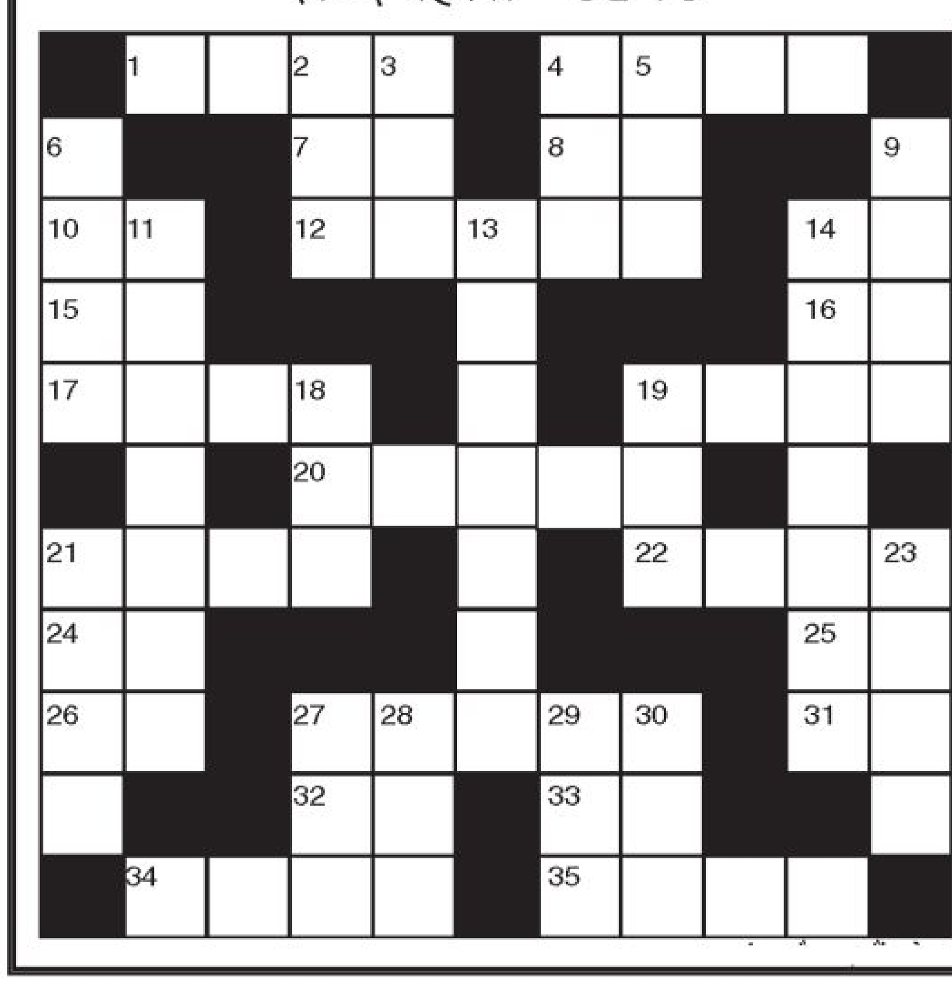

बाएँ से दाए-
1. एक असुर जिसे शिव ने वरदान दिया था -4
4. दान देने वाला-4
7. सवारी गाड़ी-2
8. संख्या, रत्न-2
10. जाप, मंत्र पाठ-2
12. आक्रमणकारी-5
14. अपशिष्ट पदार्थ-2
15. दिन, प्रहार-2
16. भीगा हुआ-2
17. शिशु, पैदा हुआ बच्चा-4
19. कीमती-4
20. आलसी, निष्ठाहीन-5
21. जिसे दीक्षा नहीं दी गई हो-5
22. गारंटी, मुचलका-4
24. रिश्तेदार-2
25. शेर, नाहर-2
26. पिटाई, चोट-2
27. निम्नता, न्यूनता-5
31. परिणाम, निष्कर्ष-2
32. महेंद्रसिंह धोनी को इस नाम से भी जानते हैं-2
33. मूल, कंद-2
34. उदाहरणार्थ-4
35. पितृपक्ष-4

ऊपर से नीचे
2. सवेरा, भोर-3
3. सांभर जैसा आहार -3
4. दैत्य, असुर-3
5. शहर-3
6. तरुण, जवान-4
9. एक महीन व कीमती कपड़ा-4
11. ईश्वर, रब-7
13. डांट, फटकार, भर्त्सना -3,4
14. भारत के पुर्व प्रधानमंत्री-5,2
18. अधीन-3
19. निवेदन, प्रार्थना-3
21. असमतल-4
23. धमाका, सनसनी-4
27. करिश्मा-3
28. बारीक-3
29. कपड़े धोनेवाला-3
30. पिटाई करना, भांपना-3

शब्द पहेली - 6215 का हल